नामनिधिः
सत्यानन्दवेदवागीशः

प्रकाशक:
सत्यानन्दवेदवागीश:
272 आर्यनगर, अलवर, (301 001)

卐

वि० संवत्–२०४५
प्रथमसंस्करणम् ।

मूल्यम्–१२.०० द्वादशरूप्यकाणि ।

卐

मुद्रक :
श्री शङ्कर मार्ट प्रिण्टर्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर ।

विषय-सूची

निवेदन	....	१ — २४
नामकरण-संस्कारविधिः	....	१ — २२
बालक-नामानि	....	२३— ६९
बालिका-नामानि	....	७०— ८६
बालक-कठिननामार्थाः	....	८७— ९४
बालिका-कठिननामार्थाः	....	९४— १००

आचार्य धर्मधर आर्य

आर्य वीर दल मुम्बई

"अन्वर्थनामा भव मे
पुत्र! मा व्यर्थनामकः ।।"*

—हे पुत्र! तू अपने नाम के अर्थ के अनुकूल आचरण करने वाला बन, विपरीत आचरण वाला मत बन।

सम्पर्क - 9029421718

---

* राजमाता विदुला का स्वपुत्र सञ्जय को उपदेश

[महा० उद्योग० १३४.७]

निवेदन

संस्कार-कथा-प्रवचन-यज्ञयागादि-सम्पादन-प्रधान जीवनवृत्ति होने के कारण प्रायः लोग अपने नवजात बालक-बालिकाओं के लिये कोई उत्तम 'नाम' पूछते रहते हैं। ऐसे अवसरों पर उनकी सुविधा के लिये बीस-तीस नाम लिखकर उन्हें देना स्वाभाविक है। पर अन्यत्र पूछे जाने पर वे ही नाम स्मृत रहें यह, आवश्यक नहीं। वहाँ कुछ अन्य नाम लिखकर देना होता है। आर्यभवन, कमलानगर, दिल्ली के श्री सेठ दीपचंदजी आर्य के सुपुत्र श्री सत्यपाल जी आर्य ने अपने पुत्र के जन्म के अनन्तर जब एक व्यक्ति केवल इसीलिये अलवर भेजा कि वह कुछ अच्छे नाम मुझ से लिखवाकर ले आये। तब उसे तो कुछ नाम लिखकर बिदा कर दिया गया, पर मैंने सोचा कि, यह सदा की कठिनाई है, दोनों ओर की असुविधा के निवारणार्थ क्यों नहीं एक विस्तृत नामावली तैयार कर ली जाय। फलतः नामों के चयन, संग्रह, ऊह आदि का कार्य आरम्भ किया। चिन्तन चलता रहा। लिखता रहा। फिर उसे वर्णानुक्रम से व्यवस्थित किया और लगभग ३५ पृष्ठ (फुल स्केप्) तैयार करके, फोटो स्टेट् करवाने हेतु श्री धर्मपाल जी आर्य को दिल्ली भेज दिये। पर उससे तो एक दो परिवारों का ही हित हो सकता था। कुछ पुरोहितों ने उससे छायाप्रति प्राप्त की। किन्तु सर्वहितकारी बनाने के लिये मैंने इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाना ही उचित समझा। उस संग्रह का और विस्तार करता रहा और अन्त में इसके प्रकाशन का प्रबन्ध किया गया।

यह नामावली मुख्यतः 'नामकरण' संस्कार के लिये उपयोगी है, अतः इसमें 'नामकरण' संस्कार की सारी विधि विस्तार से देने का निर्णय किया।

इस संग्रह को हमने **'नामनिधिः'** नाम दिया है। इसके तीन भाग हैं—

१. नामकरण-संस्कारविधि। २. नामावली (बालकनामानि+बालिकानामानि)। ३. कठिन नामों के अर्थ। इन तीनों भागों के कुछ विशिष्ट बिन्दुओं पर हम कुछ निवेदन करना उचित समझते हैं।

संस्कार-भाग

यज्ञिय वस्त्र

संस्कार और अग्निहोत्रादि यज्ञकर्म के लिये धारणीय वस्त्र स्वच्छ हों। पर्याप्त समय तक सरलता से बैठा जा सके, इसलिये ढीले ढाले वस्त्र हों, कसे हुए तंग वस्त्र न हों। अहिंसा से प्राप्य रेशम, ऊन, सण या रूई के बने हों। नाइलोन, पोलिस्टर, टेरेलीन, एक्रिलिक आदि अग्नि पकड़ने वाले उपादानों से बने वस्त्र यज्ञोपयोगी नहीं हैं। बहुत तड़कीले,, भड़कीले वस्त्र भी अनुपयोगी हैं। जहाँ तक हो श्वेतवस्त्र हों तो अच्छा है। अथवा हल्के रंग वाले सौम्य आभा वाले वस्त्र भी पहिने जा सकते हैं। पीताम्बर पहिनकर

बंठना भी अनिष्टकारक नहीं है। 'यज्ञादि में कैसे भी रंगीन वस्त्र नहीं पहिने जा सकते' ऐसा मानना हमारी दृष्टि में उचित नहीं है। यज्ञकर्म में श्वेतवस्त्र-मात्र का ही विधान मानने वाले कुछ लोगों का मत है कि:—

"केवल यज्ञ ही नहीं तद्भिन्न अतिरिक्त समय में भी द्विजों के लिये रंगा हुआ वस्त्र पहिनना वर्जित है'। 'स्नातक के व्रतों का वर्णन करते हुए लिखा है कि ………… कुसुम्बादि सारे रंग वस्त्रों में वर्जनीय हैं अर्थात् किसी भी रंग में रंगा हुआ वस्त्र गृहस्थ स्नातक को नहीं पहिनना चाहिये।' 'जब स्नातक के लिये यज्ञातिरिक्त समय में भी रंगीन वस्त्र पहिनना वर्जित है तो फिर यज्ञ में पीले रंगे हुए वस्त्रों का प्रयोग शास्त्रविरुद्ध होने के कारण कैसे सम्भव है।' 'श्वेत रंग सतोगुण का सूचक है। सतोगुण मनुष्य को श्रेष्ठ कार्यों में प्रेरित करता है। सतोगुण-प्रधान मनुष्य राग से हटकर वैराग्य की ओर जाता है। मनुष्य के अन्तःकरण में सुप्त रूप में बर्त्तमान सात्त्विक भाव और वैराग्य के उद्बोधन के लिये ही सन्ध्या अग्निहोत्रादि समस्त शुभ कर्मों में सभी आचार्यों ने अहत अर्थात् नूतन श्वेत वस्त्र पहिनने का विधान किया है।"❀

इन उद्धरणों से यज्ञकर्म में रंगीन वस्त्र पहिनने के विरोध में हेतुभूत दो बातें निकलती हैं। १. स्नातक को रंगे हुए वस्त्र पहनने का निषेध है। २. श्वेत रंग सत्त्वगुण और वैराग्य का प्रेरक है जब कि अन्य सारे रंग आसक्ति के वर्धक हैं।

पर ये दोनों ही बातें प्रायिक हैं, सर्वथा सर्वदा उपादेय नहीं हैं। देखिये— १. स्नातक के लिये पीले वस्त्र धारण करने का भी विधान है—

'………इस मन्त्र को बोल के ब्रह्मचारी उदुम्बर की लकड़ी से दन्तधावन करे। तत्पश्चात् सुगन्धि-द्रव्य शरीर पर मल के शुद्ध जल से स्नान कर, शरीर को पोंछ, अधोवस्त्र अर्थात् धोती वा पीताम्बर धारण करके, सुगन्धियुक्त चन्दनादि का अनुलेपन करे'। (संस्कारविधि, समावर्त्तन-संस्कार)।

२. श्वेत रंग ही सत्त्वगुण और वैराग्य का प्रेरक है और अन्य सभी रंग आसक्ति-वर्धक हैं, यह बात भी सर्वांश में ठीक नहीं है। चार आश्रमों में से दो आश्रम ऐसे हैं, जिनमें मुख्यरूप से सत्त्वगुण और वैराग्य की विशेष आवश्यकता है, वे हैं—ब्रह्मचर्याश्रम और संन्यासाश्रम। ब्रह्मचारी और संन्यासी को सत्त्व गुण और वैराग्य का वातावरण न मिले तो उनके वेदाध्ययन और ब्रह्मचिन्तन जैसे कार्य कभी सिद्ध नहीं हो सकते। अब देखिये कि इन दोनों आश्रमियों के लिये रंगे हुए वस्त्रों का भी विधान है।

ब्रह्मचारी के लिये—

(i) ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः (अथर्व० ११.५.३)
—कार्ष्णं वसानः=कृष्ण मृगचर्मादि को धारण करने वाला।

❀ 'शङ्का-समाधान-लेखमाला' (स्वामी मुनीश्वरानन्द-सरस्वतीकृत, प्र. भा., पृ. ६-११)

(ii) 'काषायमप्येके' (गौ० धर्म० १.१.१६)—एके त्वाचार्याः काषायेण रक्तमपि धार्यं मन्यन्ते (हरदत्तवृत्तिः)।

वार्क्षं ब्राह्मणस्य माञ्जिष्ठहारिद्रे इतरयोः' (गौ०-धर्म० १.१.२०)-वृक्षकषायेण रक्तं वार्क्षं, तद् ब्राह्मणस्य। मञ्जिष्ठया रक्तं माञ्जिष्ठम्। हरिद्रया रक्तं हारिद्रम्। ते इतरयोः। क्षत्रियवैश्ययोरिति यावत् (ह० वृत्तिः)।

(iii) 'यदि वासांसि वसीरन् रक्तानि वसीरन्, काषायं ब्राह्मणो माञ्जिष्ठं क्षत्रियो हारिद्रं वैश्यः' (आश्व० गृ० १.१६.६)।

संन्यासी के लिये—

'क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्री दण्डी कुसुम्भवान्।
विचरेन्नियतो नित्यं सर्वभूतान्यपीडयन्॥' (मनु० ६.५२)

— 'सब शिर के बाल, दाढी, मूँछ और नखों को समय समय छेदन कराता रहे। पात्री, दण्डी और कुसुंभ के रंगे हुए अथवा गेरू के रंगे हुए वस्त्रों को धारण किया करे'।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि सत्त्वगुणाश्रयी ब्रह्मचारी के लिये भी रंगे हुए वस्त्रों का वैकल्पिक विधान है। ब्राह्मण विद्यार्थी काषाय रंग, क्षत्रिय मजीठे के लाल रंग और वैश्य हल्दी के पीले रंग से रंगे वस्त्रों को पहिन सकता है। आचार्य आश्वलायन के मतानुसार तो सभी ब्रह्मचारी मृगचर्म ही पहिनें। यदि कपड़े पहिनें तो वे रंगे हुए ही पहिनें— 'यदि वासांसि वसीरन् रक्तानि वसीरन्' (आश्व. गृ. १. १६. ६)। मृगचर्म भी प्रायः कृष्ण रंग का या भूरे या मटमैले रंग का होता है। अथर्ववेद के अनुसार भी ब्रह्मचारी के लिये दीर्घश्मश्रुत्व की अवस्था तक भी कार्ष्ण वस्त्र (अथवा कृष्णमृगचर्मादि) पहिनने का विधान है। तो क्या इन उपर्युक्त वचनों में विहित, वस्त्रों का काला, कसैला, लाल या पीला रंग ब्रह्मचारी को सत्त्वगुण से हटाकर तमोगुण या रजोगुण में प्रवृत्त कराने वाला माना जायेगा? यदि कहें कि यज्ञातिरिक्त समय में तो ब्रह्मचारी भले ही रंगे हुए वस्त्र या मृगचर्म धारण करलें, पर यज्ञकाल में तो श्वेत ही वस्त्र पहिनें, तो ऐसा न तो कहीं विधान हैं और न ही यह सुसङ्गत है। ब्रह्मचारी का अपरिग्रही जीवन, अनेक प्रकार के वस्त्रों के संग्रह की आज्ञा नहीं देता। यदि उपर्युक्त बात को मान भी लिया जाय तो, यज्ञकर्म में रंगे वस्त्रों के विरोधियों की व्याख्या के अनुसार, उसका यह अर्थ होगा कि ब्रह्मचारी यज्ञकाल में तो श्वेतवस्त्र धारण करके सत्त्वगुणी बने और अन्य सारे समय में अपने रंगे हुए वस्त्रों के रंग के प्रभाव से स्वयं को तमोगुण या रजोगुण में लिप्त होने दे!

'श्वेतातिरिक्त रंगमात्र आसक्ति का वर्धक है', यह बात बिल्कुल बचकाना है। यदि ऐसा होता तब तो वैराग्य-प्रधान संन्यासी के लिये केवल-मात्र श्वेत वस्त्रों का ही विधान होता। जबकि उसके लिये कुसुंभ या गेरू से रंगे हुए वस्त्रों का अनिवार्य विधान है।

बड़े-बड़े वैराग्यवान् संन्यासी हो गये हैं और हैं, जो विधानानुसार आजीवन कौसुम्भ या गेरुए वस्त्र धारण करते रहे। कभी किसी ने यह अनुभव नहीं बताया कि हमें इन रंगे वस्त्रों से सत्त्वगुण या वैराग्य बनाये रखने में बाधा पड़ती है।

अतः यज्ञकर्म में पीले आदि रंगों से रंगे हुए सौम्य वस्त्र भी पहिने जा सकते हैं। यदि कहें कि 'अजी यज्ञकर्म में तो श्वेत वस्त्र ही पहिनने चाहिएँ, क्योंकि वहां तो रंगे वस्त्र पहिनते ही रजोगुण या तमोगुण, यज्ञकर्ता को प्रभावित करने लगता है' तो भाई यह रंग वाली बात वस्त्रों पर ही क्यों लादते हो। फिर तो यज्ञवेदि से रंगमात्र को ही उड़ा दो। फिर "नित्य मार्जन तथा गोमय से लेपन करें और कुंकुम हल्दी मैंदा की रेखाओं से सुभूषित किया करें" (सं. वि., सामान्य-प्रकरण) इस विधान को भी नकार दो। गोमय गुबरेला पीला, कुंकुम लाल और हल्दी पीली होती है। ध्वज, पताका, पल्लव आदि भी लाल, पीले और हरे हैं। सबको हटाकर, सब चीजों को केवल मात्र सफैदी से ही पोत दो। पर फिर भी रंग वाली बात का तो यज्ञकर्म से हटना असम्भव ही है। क्योंकि जिस अग्नि में यजमान आहुति देने जा रहे हैं वह भी तो रंगीली है। अग्नि की ज्वालाएँ पीली-पीली और अंगारे लाल-लाल। पीले-लाल रंग से कहाँ तक बचोगे। जब प्रतिक्षण आंखों के सामने नाचने वाली रंग-रंगीली अग्नि-शिखाएँ, यजमान को सत्त्वगुण से विचलित नहीं कर पातीं और उसमें रजोगुण को नहीं भड़का सकतीं तो बेचारे रंगे हुए वस्त्रों की क्या बिसात है कि वे यजमान को दिङ्मूढ कर सकें।

फलतः सिद्ध है कि यज्ञ में पीताम्बर आदि रंगीन वस्त्र भी धारण किये जा सकते हैं।

सङ्कल्प-पाठ

संस्कार-यज्ञकर्म में सङ्कल्प-पाठ करना अनिवार्य है। यद्यपि 'संस्कारविधि' में इसका पूर्ण निर्देशन नहीं है, तथापि 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' से आचार्य का यह मन्तव्य स्पष्ट है कि संस्कारों में ही नहीं अपितु प्रतिदिन ही यज्ञादि शुभकर्म के आरम्भ में सङ्कल्प-पाठ करना आवश्यक है। संस्कारविधि में भी ऋत्विग्वरण-प्रसङ्ग में लिखित 'अहमद्योक्त-कर्मकरणाय भवन्तं वृणे' यह वाक्य सङ्कल्पपाठ का ही निर्देशक है। इस वाक्य के अहम् अद्य और उक्तकर्म इन तीनों शब्दों का व्यवस्थित विस्तृत विवरण ही तो सङ्कल्पपाठ है। अतः पूर्ण सङ्कल्पपाठ का करना गुणावह ही है।

बहुत्र प्रचलित सङ्कल्पपाठ में 'दिवसे' पद का प्रयोग नहीं होता है, पर हमने यहाँ उसका प्रयोग किया है। ब्राह्म अहोरात्र में सर्गकाल दिवस है और प्रलयकाल रात्रि। अतः सर्गकाल के क्रियाविधान में 'दिवस' का उल्लेख उचित है।

सृष्टिसंवत् के विषय में वैदिक लोगों में दो गणनाएँ प्रचलित है। एक है—१,६६,०८,५३,०८६ और दूसरी है—१,६७,२६,४६,०८६। पहिली गणना का आधार है 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' और दूसरी गणना का आधार है—भास्कराचार्य के 'सिद्धान्त-शिरोमणि' ग्रन्थ का निम्न० श्लोक—

'इदानीं वर्त्तमानदिनगतमाह--
याताः षण्मनवो युगानि भमितान्यन्यद् युगाङ्घ्रित्रयं,
नन्दाद्रीन्दुगुणास्तथा शकनृपस्यान्ते कलेर्वत्सराः ।
गोऽद्रीन्द्वद्रिकृताङ्कदस्रनगगोचन्द्राः, शकाब्दान्विताः,
सर्वे सङ्कलिताः पितामहदिने स्युर्वर्त्तमाने गताः ।।

(सिद्धान्तशिरोमणिः, ग्रहगणिते, मध्यमाधिकारे, कालमानाध्याये २८ श्लोकः)

इस श्लोक के उत्तरार्ध के अनुसार शकाब्द आरम्भ होने से पूर्व, पितामहदिन (= सर्गकाल) के गो (९), अद्रि (७), इन्दु (१), अद्रि (७), कृत (४), अङ्क (९), दस्र [= अश्विनी नक्षत्र] (२), नग (७), गो (९), चन्द्र (१) = १,९७,२९,४७,१७९ एक अरब सतानवे करोड़ उनतीस लाख सेंतालीस हजार एक सौ उनासी वर्ष बीत चुके थे। उसमें शकाब्द के अब तक बीते हुए १९१० वर्ष जोड़ देने पर १,९७,२९,४९,०८९ एक अरब सतानवे करोड़ उनतीस लाख उनपचास हजार नवासी वर्ष वर्त्तमान पितामह दिन (=सर्गकाल) के व्यतीत हो गये यह गणना बैठती है।

इन दोनों ही मान्यताओं से यह स्पष्ट है कि वर्त्तमान में ब्राह्म दिवस के द्वितीय प्रहर का उत्तरार्ध चल रहा है। अतः हमने द्वितीय-प्रहरोत्तरार्धे पाठ दिया है, जब कि प्रचलित सङ्कल्प-पाठ में 'द्वितीये प्रहरार्धे' अथवा 'द्वितीयप्रहरार्धे' पाठ है। इस प्रकार का पाठ अपूर्ण, अस्पष्ट और भ्रामक है। यदि इस प्रचलित पाठ का यह अर्थ लें कि द्वितीय प्रहर का अर्धभाग अर्थात् मध्यभाग चल रहा है तो वह अशुद्ध है। क्योंकि द्वितीय प्रहर का मध्यभाग तो १,६२,००,००,००० वें वर्ष में कभी का बीत चुका। प्रथम प्रहर १,०८,००,००,००० वर्ष का और द्वितीय प्रहर का मध्यभाग उसके आधे ५४,००.००,००० चौवन करोड वर्ष उसमें और जुड़ने पर आ गया था। यदि अर्ध का मध्यभाग अर्थ न लगाकर आधा अर्थ ही लें तो भी सन्देह रहता है कि द्वितीय प्रहर का कौनसा अर्ध ? पूर्वार्ध या उत्तरार्ध ? एक यह भी अर्थ निकल सकता है कि 'दूसरे प्रहरार्ध में' तब और भी सन्देह उपस्थित होगा कि कौन से प्रहर के द्वितीय अर्ध में ? प्रथम प्रहर के या द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ के ? अतः इन सब संशयों के निवारणार्थ 'द्वितीय-प्रहरोत्तरार्धे' पाठ समीचीन है। जिसका अर्थ हुआ 'द्वितीय प्रहर के उत्तरार्ध में'। इसके स्थान पर असमस्त 'द्वितीये प्रहरे तदुत्तरार्धे' भी पढा जा सकता है।

आचमन

हमने यहां आचमन व अङ्गस्पर्श का क्रम ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना-स्वस्तिवाचन-शान्तिकरण से पूर्व रखा है। कई लोग शान्तिकरणान्त कर्म के पश्चात्, यज्ञारम्भ से पूर्व आचमन कर्म करना मानते हैं। हमारी दृष्टि में, 'ईश्वरस्तुति० स्वस्ति० शान्ति०' आदि संस्कार के ही अङ्ग हैं। संस्कार एक कर्म है। ईश्वरस्तुति० आदि को संस्कार का अङ्ग न मानें तो भी कोई क्षति नहीं है। ईश्वरस्तुति० आदि के मन्त्रों का पाठ=वेदपाठ स्वयं एक

कर्म है और कर्म का आरम्भ शुद्ध होकर ही करना चाहिये । स्नानादि के समान ही आचमन भी शुद्धिकारक है । अतः आचमन करके ही कर्म का आरम्भ करने का लेख है । देखिये—

> मनःप्रसादात् सत्योक्त्या तपसा स्नानकर्मणा ।
> आचान्त्या चाऽऽत्मनः शुद्धिं कृत्वा कर्म समारभेत् ।।
>
> (आश्व. श्रौ. १.१.४ की नारायणवृत्ति में उद्धृत)

—मानसिक प्रसन्नता, सत्यवचन, तप, स्नान और आचमन के द्वारा स्वयं को शुद्ध करके कर्म का आरम्भ करे ।

किं च, सन्ध्यादि शुभकर्मों में आचमन का प्रयोजन बताते हुए आचार्य ने लिखा है— "आचमनमप्यालस्यस्य कण्ठस्थकफस्य च निवारणार्थम्" (पञ्चमहायज्ञविधि, सन्ध्योपासना-प्रकरण)–आलस्य और कण्ठस्थ कफ की निवृत्ति के लिये आचमन किया जाता है ।। इसी प्रयोजन को लक्ष्य में रखकर कर्मों के आरम्भ में ही आचमन का विधान किया गया है । यथा—

(i) 'प्रथम शरीरशुद्धि अर्थात् स्नानपर्यन्त कर्म करके सन्ध्योपासन का आरम्भ करें । आरम्भ में दक्षिण हस्त में जल लेके 'ओम् अमृतो०........' इन तीन मन्त्रों में से एक-एक से एक-एक आचमन कर ....' (सं० वि०, गृहाश्रमविधि) ।

(ii) 'शन्नो० इस मन्त्र से तीन आचमन करके अग्निहोत्र का आरम्भ करे । (सं० वि०, गृहाश्रमविधि) ।

जब दैनिक सन्ध्या के १९ (=३५) मन्त्रों के पाठ के अन्तराल में और दैनिक अग्निहोत्र के १६ अथवा ३६ मन्त्रों के पाठ के अन्तराल में सम्भाव्य कण्ठस्थ कफ अथवा आलस्य की निवृत्ति के लिये आरम्भ में आचमन करने का विधान किया गया है तो फिर ईश्वरस्तुति० आदि के ६७ (=८+३१+२८) मन्त्रों के अन्तराल में सुतरां सम्भाव्य आलस्य और कण्ठस्थ कफ के निवारणार्थ उनके आरम्भ में आचमन करना क्यों नहीं आवश्यक है ? यह क्या बात हुई कि ६७ मन्त्र तो कफ और आलस्य की अवस्था में बोले जायें और बाद के थोड़े से हवनमन्त्रों को कफालस्य-रहित अवस्था में बोलने के लिये, हवन से पूर्व आचमन किया जाय ? पूर्व के ईश्वरस्तुति० आदि के ६७ मन्त्रों ने क्या बिगाड़ा है जो उनके साथ भेदभाव बरता जाय । अतः कर्मारम्भ में अर्थात् ईश्वरस्तुति० से पूर्व आचमन और अङ्गस्पर्श अवश्य करना चाहिये ।

इतना होने पर भी कुछ सज्जन आचमन को ईश्वरस्तुति० आदि से पूर्व करना अनुचित बताते हैं । यथा—

"प्रत्येक संस्कार में जहाँ जहाँ महर्षि ने आवश्यक समझा वहाँ २ इनका विधान कर दिया है ।"

"ध्यान रहे वेदपाठ के आरम्भ में कहीं भी आचमन तथा अङ्गस्पर्श का विधान नहीं है । इसलिये महर्षि ने भी इनके आरम्भ में आचमन करने का विधान नहीं किया ।

अतः वेदपाठ रूप इन तीनों कर्मों के (=ईश्वरस्तुति० आदि के) आरम्भ में आचमन तथा अङ्गस्पर्श करना विधि का अङ्ग न होने से उचित नहीं।" ✻

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि ईश्वरस्तुति० आदि से पूर्व आचमन करने के विरोधी लोग, अपने मत की पुष्टि में दो हेतु देते हैं—१. महर्षि का 'संस्कारविधि' में क्रमनिर्देश और २. किसी भी पूर्वाचार्य के लिखित ग्रन्थ में, वेदपाठ के आरम्भ में आचमन करने के विधान का न मिलना।

इस विषय में हमारा निवेदन यह है कि, महर्षि ने यद्यपि संस्कारविधि में सबसे पूर्व ही ईश्वरस्तुति० आदि का पाठ दिया है, तथापि वहाँ पौर्वापर्य का क्रम अभिप्रेत नहीं है। ईश्वरस्तुति० आदि का पाठ पूर्व देने का अभिप्राय तो यही प्रतीत होता है कि इनका लम्बा मन्त्रपाठ क्रियाकाण्ड के लेख के मध्य में आजाने से कहीं क्रियाविधान के समझने में साधारणजनों को कठिनाई न हो जाय अतः इन्हें पृथक् से ही पढ़ दिया जाय। यदि किन्हीं का यही आग्रह हो कि 'अपना अभिप्राय लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है, संस्कारविधि में महर्षि ने जिस बात को जिस क्रम से लिखा है, हम तो उसी क्रम से करेंगे' फिर तो उन्हें प्रत्येक संस्कार के दिन, आरम्भ में सबसे प्रथम ईश्वरस्तुति० आदि करने के पश्चात् यज्ञशाला (=यज्ञमण्डप) तैयार करना चाहिये। जिसमें तदर्थ मिट्टी का खनन, पूरण, यज्ञवेदि का निर्माण, ध्वज-पताका-पल्लव आदि का बन्धन, कुंकुम-हल्दी आदि से वेदि का सुभूषण आदि सभी कार्य सम्मिलित हैं। और तदनन्तर ही यज्ञ-समिधाओं का कर्त्तन, होमद्रव्यों का संशोधन-खण्डन-पेषण और स्थालीपाकादि का पाक आदि करना चाहिये। तथा यह सब हो जाने पर पात्र-संग्रह करके फिर ऋत्विग्वरण और आचमनादि हवनकार्य करना चाहिये। क्योंकि संस्कारविधि में ऐसा ही क्रम दिया है। और यदि ऐसा किया जाय तो नामकरण जैसे एक लघु संस्कार में भी कम से कम एक दिन पूरा व्यतीत हो जायेगा और यजमान-ऋत्विक् के अतिरिक्त सभी इष्ट मित्र हितैषी आगन्तुक जन उस संस्कार के ईश्वरस्तुति० आदि का पाठ करने के बाद आशीर्वादावधि संस्कारसमाप्ति की प्रतीक्षा करते हुए मृत्खनन-पूरण-वेदिमण्डप-निर्माणादि कार्यों को यावद्दिवस निहारा करेंगे।

यदि कोई कहे कि इस प्रकार का उल्टा अर्थ लेने का यहाँ कोई कारण नहीं है, क्योंकि यद्यपि ईश्वरस्तुति० आदि का पाठ, यज्ञमण्डप (=यज्ञशाला) निर्माण से पूर्व लिखा है, किन्तु वहाँ शान्तिकरण के अन्त में इनका पाठ करके फिर अगला कार्य करे ऐसा नहीं लिखा'। तो हमारा निवेदन है कि क्या जहाँ 'करके' शब्द का प्रयोग उपलब्ध हो वहाँ पौर्वापर्य के क्रम का पक्का अर्थ मानेंगे? यदि हाँ, तो देखिये—

"और पृष्ठ ११ में कहे प्रमाणे स्वस्तिवाचन तथा पृष्ठ १६ में लिखे प्रमाणे शान्तिकरण करके पृष्ठ २० में लिखे प्रमाणे यज्ञदेश, यज्ञशाला तथा पृष्ठ २०-२१ में यज्ञकुण्ड, पृष्ठ २१-२२ में यज्ञसमिधा, होमद्रव्य और स्थालीपाक आदि करके और पृष्ठ ३६-३७ में लिखे प्रमाणे (अयन्त इध्म०) इत्यादि........" (सं. वि., पुंसवनसंस्कार)।

✻ 'शङ्का-समाधान-लेखमाला' प्र. भा. (स्वामी मुनीश्वरानन्दसरस्वतीकृत पृष्ठ २३)।

यहाँ स्पष्ट रूप से शान्तिकरण के बाद 'करके' शब्द का प्रयोग है, उसके अनुसार बादी को उसी प्रकार से करना चाहिये। पर क्या ऐसा करना युक्तिसङ्गत होगा ? संस्कारकर्म में अपेक्षित जो एकाग्रता और भक्तिभाव 'ईश्वरस्तुति० स्वस्ति० शान्तिकरण' के द्वारा प्राप्त किया जायेगा, उसकी मध्यकाल में क्रियमाण मृत्खनन-यज्ञशाला-कुण्डादि के निर्माण आदि की लम्बी प्रक्रियाओं के बाद क्या स्थिति रहेगी ?

वास्तविक बात यही है कि यहाँ पौर्वापर्य का क्रम अभीष्ट नहीं है। महर्षि द्वारा अन्यत्र कर्मारम्भ में (यथा सन्ध्या तथा दैनिक अग्निहोत्र के आरम्भ में) आचमन करने का विधान किए जाने से, यहाँ संस्कारकर्म में विधीयमान आचमनादि के पाठ को भी विशेष प्रतिपत्ति के द्वारा ईश्वरस्तुति० आदि से पूर्व ही समझना चाहिये। इस प्रकार से सङ्गति लगाने से ही अनेक समस्याओं का समाधान सम्भव है। 'जिस क्रम से संस्कारविधि में पाठ है या निर्देश हैं उसी क्रम से वह कर्म कर्त्तव्य है' ऐसा मानने पर तो कई स्थानों पर निष्कारण अव्यवस्था उत्पन्न हो जायेगी। यथा—

(i) 'तांबे के कुण्ड में समिधा पूर्वलिखित प्रमाणे चयन कर पूर्वोक्त सामान्यविध्युक्त पृष्ठ ३२-३३ में कहे प्रमाणे अग्न्याधान, समिदाधान करके, सुगन्धित घृतादि वेदी के पास रख के, हाथ पग धोके, एक पीठासन अर्थात् शुभासन पुरोहित के लिये कुण्ड के दक्षिण भाग में रखे, उस पर उत्तराभिमुख बैठे। और यजमान अर्थात् बालक का पिता हाथ पग धोके वेदी के पश्चिम भाग में आसन बिछा, उस पर उपवस्त्र ओढ के पूर्वाभिमुख बैठे। तथा सब सामग्री अपने और पुरोहित के पास रख के पुरोहित पद के स्वीकार के लिये बोले—'ओम् आ वसोः सदने सीद'।.... (सं.वि., जातकर्मसंस्कार)।

(ii) '........पृष्ठ ३५ में लिखे प्रमाणे 'ओम् अदितेऽनु०' इत्यादि मन्त्रों से कुण्ड के तीन बाजू और........ओं देव सवितः०' इस मन्त्र से कुण्ड के चारों ओर जल छिटकाके पूर्व पृष्ठ ३२-३३ में लिखित अग्न्याधान, समिदाधान कर अग्नि को प्रदीप्त करके ....' (सं. वि., चूडाकर्मसंस्कार)।

(iii) 'उसी द्वार से प्रवेश करके पृष्ठ ३२-३३ में लिखे प्रमाणे अग्न्याधान, समिदाधान जलप्रोक्षण, आचमन करके पृष्ठ ३५-३७ में लिखे प्रमाणे घृत की आघारावाज्यभागाहुति........'। (सं. वि., गृहप्रवेशविधि)।

(iv) '(ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौ०) इस मन्त्र से अग्न्याधान ...... लिखे प्रमाणे आघारावाज्यभागाहुति चार और व्याहृति आज्याहुति चार करके पृष्ठ ११-१९ में लिखे प्रमाणे स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण करके ...'। (सं० वि०, वानप्रस्थ-संस्कार)।

(v) 'लिखे प्रमाणे अग्न्याधान, समिदाधान, घृतप्रतपन और स्थालीपाक करके ... पृष्ठ ११-१९ में लिखे प्रमाणे स्वस्तिवाचन-शान्तिकरण का पाठकर....वेदी के चारों ओर जलप्रोक्षण....'। (सं० वि०, संन्याससंस्कार)।

संस्कारविधि के इन उपरिलिखित उद्धरणों में जो पाठ दिया है, यदि उसी क्रम से कर्म करना अभीष्ट माना जाय, तब तो कभी अग्न्याधान समिदाधान के बाद हाथ पग धोने का काम होगा और फिर पुरोहित को नियत पीठासन पर बिठाने के बाद यजमान स्वयं हाथ पग धोकर स्व-आसन पर बैठने के बाद पुरोहित से बैठने हेतु 'ओम् आ वसो०' वचन बोलेगा। कहीं यज्ञकुण्ड के चारों ओर समन्त्रक जलप्रोक्षण के बाद अग्न्याधान-समिदाधान करना होगा। कहीं अग्न्याधान, समिदाधान और जलप्रोक्षण के बाद आचमन की बारी आयेगी। कहीं अग्न्याधान से लेकर व्याहृत्याहुतिपर्यन्त कर्म करने के बाद 'स्वस्ति० शान्तिकरण' किया जायेगा और इन उपर्युक्त संस्कारों में (कर्मों में) 'अयन्त इध्म०' वाली पञ्च घृताहुति का बहिष्कार ही करना पड़ेगा।

इन सब अव्यवस्थाओं से बचने का यही उपाय है कि हम आचार्य के इङ्गित चेष्टित से विशेष प्रतिपत्ति का ग्रहण करके यथायोग्य क्रम को समझें।

अब रही, वेदपाठ के आरम्भ में आचमन के विधान के विषय में पूर्वाचार्यों के निर्देश की बात। सो इस विषय में प्राचीन आचार्य का निर्देश भी स्पष्ट है—

आचार्य आश्वलायन कहते हैं—

"अथ स्वाध्यायविधिः॥ प्राग्वोदग्वा ग्रामान्निष्क्रम्याप आप्लुत्य शुचौ देशे यज्ञोपवीत्याचम्याऽक्लिन्नवासा दर्भाणां महदुपस्तीर्य प्राक्कूलान्तेषु प्राङ्मुख उपविश्य.... युक्तोऽधीयीत स्वाध्यायम्॥ ओ३म्पूर्वा व्याहृतीः॥ सावित्रीमन्वाह पच्छोऽर्धर्चशः सर्वामिति तृतीयम्॥"
(आश्व. गृ. ३.२.१–४)।

यहाँ स्पष्ट ही स्वाध्याय अर्थात् वेदपाठ से पूर्व आचमन करने का विधान है। यह नहीं समझना चाहिये कि यहां जो आचमन का विधान है, वह तो सव्याहृतिक सावित्री-मन्त्र-जप रूप स्वाध्याय से पूर्व ही विहित है, वेदपाठ से पूर्व नहीं। वास्तव में ही यहाँ स्वाध्याय से अभिप्राय वेदपाठ का ही है। और उस वेदपाठ का ही आद्य अङ्ग सावित्री-अनुवचन है। सावित्री-वाचन के तुरत बाद वेदपाठ ही करना है। जैसा कि आचार्य वहीं स्पष्ट करते हैं—

"अथ स्वाध्यायमधीयीत ऋचो यजूंषि सामान्यथर्वाङ्गिरसो ब्राह्मणानि कल्पान् गाथा नाराशंसीरितिहासपुराणानीति"॥ (आश्व. गृ. ३.३.१)

इसकी व्याख्या करते हुए गार्ग्य नारायण लिखते हैं—'अथ शब्दः पूर्वेण सम्बन्धार्थः। तेन प्रणवादित्रयं स्वाध्यायस्याङ्गमिति सिद्धम्। स्वाध्यायवचनम् ऋगादिरेव स्वाध्यायो न प्रणवादित्रयमित्येयमर्थम्। तेन ऋचमपि ब्रह्मयज्ञं कुर्यादित्यस्मिन् पक्षे सावित्री-पर्यन्तमुक्त्वा ऋचमधीयीत'।

इससे अच्छी प्रकार ज्ञात हो गया कि इस प्रकरण में स्वाध्याय का अर्थ ऋग्वेदादि का पाठ है और आचार्य आश्वलायन वेदपाठ से पूर्व आचमन करना आवश्यक मानते हैं।

इस विवेचन से यह सुतरां सिद्ध हो गया है कि महर्षि के अभिप्राय से और पूर्वाचार्यों के निर्देश से भी 'ईश्वरस्तुति० स्वस्ति० शान्तिकरण' से पूर्व आचमन अवश्य करना चाहिये ॥

पुष्पमाला और चन्दनानुलेपन

हमने नामकरण-संस्कार के प्रसङ्ग में चन्दनानुलेपन और समन्त्रक पुष्पमाला-धारण का शास्त्रोक्त विधान लिखा है। यद्यपि 'संस्कारविधि' के सामान्यप्रकरण में इन दोनों का उल्लेख नहीं है, तथापि 'इङ्गितेन चेष्टितेन निमिषितेनाचार्याणामभिप्रायो गम्यते' (व्याकरण-महाभाष्य) सिद्धान्त के अनुसार महर्षि का अन्यत्र चेष्टित-निर्देश ध्यातव्य है। समावर्त्तनसंस्कार में स्नातक ब्रह्मचारी के लिये चन्दनानुलेपन करने का और पुष्पमाला धारण करने का विधान किया गया है। यथा—

"इस मन्त्र को बोलकर ब्रह्मचारी उदुम्बर की लकड़ी से दन्तधावन करे तत्पश्चात् सुगन्धिद्रव्य शरीर पर मल के......स्नानकर......पीताम्बर धारण करके सुगन्धयुक्त चन्दनादि का अनुलेपन करे।"

तत्पश्चात् जल से चक्षुरादि का स्पर्श, मन्त्रजप और उत्तमवस्त्र धारण रूपी समन्त्रक तीन क्रियाओं के निर्देश करने के बाद महर्षि लिखते हैं —

"ओं या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय ।
ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ।।

इस मन्त्र से सुगन्धित पुष्पों की माला लेके—

ओं यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु ।
तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि ।।

इस मन्त्र से धारण करनी।"

इस लेख से महर्षि का यही अभिप्राय प्रतीत होता है कि ब्रह्मचर्यावस्था की समाप्ति के बाद से स्नातक गृहस्थ आदि माङ्गलिक कार्यों में चन्दनानुलेपन और पुष्पमाला धारण किया करें। इस बात की पुष्टि इसी समावर्त्तनसंस्कार के उपसंहार के लेख से भी होती है —

"पुनः उस संस्कार में आये हुए आचार्य आदि को उत्तम अन्नपानादि से सत्कार-पूर्वक भोजन कराके, और वह ब्रह्मचारी और उसके मातापितादि आचार्य को उत्तमासन पर बिठा, पूर्वोक्त प्रकार मधुपर्क कर 'सुन्दर पुष्पमाला, वस्त्र, गोदान, धन आदि की दक्षिणा यथाशक्ति देके......"।

इससे स्पष्ट होता है कि महर्षि सत्कार-व्यवहारों में आचार्यादि को पुष्पमाला धारण कराने को उचित मानते हैं। पुरोहित भी आचार्य-स्थानीय है और उसका वरण-

कर्म एक सत्कार-व्यवहार है। अतः संस्कारों में पुरोहित तथा यजमानादि द्वारा पुष्पमाला धारण करना शास्त्रसङ्गत है।

मन्त्रों में स्वरबोधक चिह्न

वेदमन्त्रों में उदात्तादि स्वरों का अतिविशिष्ट महत्त्व है। अर्थज्ञान के लिये स्वरज्ञान नितान्त आवश्यक है। एतदर्थ ही वेदमन्त्रों पर स्वरबोधक चिह्न लगाये जाते हैं। ऋक्, यजुः और अथर्व में अधोरेखा से अनुदात्त और ऊर्ध्वरेखा से स्वरित की पहिचान होती है। चिह्नरहित अच् सांहितिक स्वरित के बाद का हो तो वह एकश्रुति होता है। सामवेद में स्वरज्ञान के लिये अङ्कों का प्रयोग होता है। सामान्यतया १ उदात्त का, २ स्वरित का और ३ अनुदात्त का सूचक होता है। कहीं कहीं २ अङ्क उदात्त को भी सूचित करता है यजुर्वेद की कपिष्ठल और मैत्रायणी आदि शाखाओं में इनसे भिन्न प्रकार अपनाया गया है। शतपथ ब्राह्मण में स्वरबोध के लिये केवल एक ही चिह्न प्रयुक्त होता है। वहाँ अधोरेखा सर्वत्र उदात्त के लिये ही प्रयुक्त होती है।

स्वरचिह्नयुक्त मुद्रण वाले मुद्रणालय भारत में भी गिने चुने ही हैं। अतः सस्वर मुद्रण करवाना अब लगभग असम्भव सा होता जाता है। पर स्वरबोध की सूचना से रहित मन्त्र छपवाना भी अनभीष्ट है। इस समस्या के निवारणार्थ हमने इस पुस्तक में, मंत्रों के मुद्रण में एक अन्य ही प्रकार अपनाया है। समस्त उदात्त अक्षरों को काले टाइप में मुद्रित करवाया है और सांहितिक स्वरितों को छोड़कर अन्य जात्यादि स्वरितों को इटेलिक् टाइप में दिया है। शेष अनुदात्त आदि को सफेद टाइप में। यथा—

'अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ (पृ. ८)

इस मन्त्र के ग्नि, रो, ज्ञ, व, त्वि, हो और धा अक्षर काले टाइप में छपे हैं, अतः इन्हें (= इनमें स्थित अचों को) उदात्त समझना चाहिये।

इस प्रयत्न से स्वरविषयक समस्या का थोड़ा सा समाधान अवश्य होगा। अर्थज्ञान और स्वर-योजना में रुचि रखने वाले सज्जनों को इस टाइपभेद से क्रियापद, सम्बोधनपद तथा समस्तपदों की भिन्नता स्पष्ट ही प्रतीत होगी। सस्वरमुद्रक मुद्रणालयों की दुर्लभता के कारण हमारे पास अन्य कोई उपाय न था। इस टाइपभेद के निर्वाह में क्वचित् स्खलन भी हो गया है॥

स्विष्टकृद् आहुति का हव्य

'यदस्य कर्मणो०' मन्त्र से दी जाने वाली स्विष्टकृद् आहुति के हव्य के रूप में हमने भात के अतिरिक्त खीर, मीठी खिचड़ी, लड्डू, मोहनभोग आदि को भी सम्मिलित किया है। इनमें से कोई भी पदार्थ लिया जा सकता है। कुछ लोगों का मत है कि, यह आहुति केवल भात की ही (अथवा घृत की) दी जानी चाहिए। यद्यपि संस्कारविधि के सामान्यप्रकरण में इस आहुति के प्रसङ्ग में "यह घृत अथवा भात की देनी चाहिये" इतना मात्र लेख है।

पर यहां हमारे विचार में भात शब्द यज्ञिय स्थालीपाक (=पाक द्रव्य) मात्र का उपलक्षक है। स्थालीपाक-निर्माणविधि में क्योंकि भात का सर्वप्रथम उल्लेख है अतः स्विष्टकृदाहुति के समय उसी का उल्लेख कर दिया गया। स्थालीपाक-निर्माण-प्रकरण में महर्षि का लेख है— "स्थालीपाक-नीचे लिखे विधि से भात खिचड़ी खीर लड्डू मोहनभोग आदि सब उत्तम पदार्थ बनावें"। जैसे भात बनाने का महर्षि ने विधान किया वैसे ही खीर, लड्डू, मोहनभोग, मीठी खिचड़ी और आदि अर्थात् हलुआ, बादाम कतली आदि उत्तम पदार्थ भी बनाने का विधान किया है। यह नहीं कहा जा सकता कि भात तो हवन के लिए है और अन्य खीर आदि यज्ञानन्तर भोजन के लिये हैं। क्योंकि वहीं पाकविधि के प्रकरण में लेख है—"पाकस्थाली में डाल अग्नि से पका लेवें। जब होम के लिये दूसरे पात्र में लेना हो तभी नीचे लिखी आज्यस्थाली वा शाकल्यस्थाली में निकाल के यथावत् सुरक्षित रखें और उस पर घृतसेचन करें"। इससे स्पष्ट है कि भात, खिचड़ी, खीर, लड्डू आदि सभी पदार्थ प्रथमतया मुख्यतः होम के लिये बनाने का निर्देश है।

भात के अतिरिक्त 'स्थालीपाक' के द्रव्यमात्र से स्विष्टकृदाहुति दी जा सकती है इसका सङ्केत भी संस्कारविधि में मिलता है। यथा—"इन चार मन्त्रों से चार और पृष्ठ ३७ में लिखे प्रमाणे (यदस्य०) मन्त्र से स्विष्टकृद् होमाहुति एक, ऐसे पांच स्थालीपाक की आहुति देके" (सं० वि०, नवशस्येष्टिप्रकरण)।

यह भी मानना अयुक्त है कि उपर्युक्त वाक्य में 'स्थालीपाक' शब्द से महर्षि का अभिप्राय केवल भात से ही है। भात के अतिरिक्त भी जो विहित पाकद्रव्य हैं, वे सब 'स्थालीपाक' शब्द के अन्तर्गत आते हैं ऐसा महर्षि को अभिप्रेत है। देखिए समावर्त्तन-संस्कार का लेख—"जो शुभदिन समावर्त्तन का नियत करे उस दिन आचार्य के घर······ यज्ञकुण्ड आदि बनाके सब शाकल्य और सामग्री ······ और स्थालीपाक बनाके ······"। इस वाक्य के स्थालीपाक शब्द पर चिह्न देके महर्षि टिप्पणी में लिखते हैं—"जो कि पूर्व पृष्ठ २२ में लिखे प्रमाणे भात आदि बनाकर रखना। द०स०"। इस टिप्पणी का आदि शब्द निश्चय ही खीर, लड्डू आदि का ग्राहक है।

ऐसा भी नहीं है कि 'यदस्य कर्मणो०' मन्त्र से केवल मात्र भात या घी की ही आहुति देने का सर्वत्र विधान है अतः 'नवशस्येष्टि' के स्थालीपाक शब्द से केवल भात ही लेना चाहिये। सीमन्तोन्नयन संस्कार के "और पृष्ठ ३७ में लिखे प्रमाणे (ओं यदस्य कर्मणो०) मन्त्र से एक खिचड़ी की आहुति देवें" इस लेख के अनुसार, खिचड़ी की भी स्विष्टकृदाहुति होती है यह स्पष्ट है। यदि कहें कि 'उस संस्कार में तो खिचड़ी बनाना अनिवार्य है, क्योंकि वहाँ कुछ मन्त्रों की आहुतियाँ खिचड़ी से दातव्य हैं और खिचड़ी में (=तत्स्थ घृत में) गर्भवती द्वारा स्वमुखदर्शन किया जाना है और फिर उसी का भोजन किया जाना है। अतः अनिवार्यतः उपस्थित खिचड़ी से ही स्विष्टकृदाहुति का विधान कर दिया गया।' तो इससे यह फलित हुआ कि, खिचड़ी की उपस्थिति में जैसे खिचड़ी से

स्विष्टकृदाहुति लगाई जा सकती है, वैसे ही शुद्ध मोहनभोग, खीर, हलुग्रा ग्रादि के उपस्थित रहने पर उनसे भी यह ग्राहुति दी जा सकती है। नवशस्येष्टि का निर्देश इसका स्रोत है ग्रौर समावर्त्तन की टिप्पणी इसकी व्याख्या।

संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण का एक ग्रौर वाक्य भी भात के विकल्प का सूचक है। पूर्णाहुति के बाद यजमान क्या करे ? इस विषय में ग्राचार्य लिखते हैं— "........दक्षिणा देके, सबको बिदा कर स्त्रीपुरुष हुतशेष घृत, भात वा मोहनभोग को प्रथम जीम के पश्चात् रुचिपूर्वक उत्तमान्न का सेवन करें।" इस वाक्य में भात ग्रौर मोहनभोग इन दो शब्दों के बीच ग्राया हुग्रा वा शब्द भी होम की स्थालीपाक वाली ग्राहुतियों में भात के स्थान पर मोहनभोग ग्रादि के विकल्प का सूचक है। जब होम में कभी भात की ग्राहुति न दी जाकर उसके विकल्प में मोहनभोग ग्रादि की ग्राहुति दी जायेगी तभी तो विकल्प से हुतशेष मोहनभोग का भोजन सम्भव होगा।'

पूर्णाहुति

नामकरण-संस्कार के होमकार्य के ग्रन्त्य भाग में (पृ. २०) हमने पूर्णाहुति करने की बात भी लिखी है। हमारी दृष्टि में यह पूर्णाहुति प्रत्येक संस्कार के (होमकर्म) के ग्रन्त में होनी चाहिये। यह पूर्णाहुति-कर्म संस्कारान्तर्गत होम कार्य की पूर्णता का द्योतक है— ग्राहुतिकर्म की समाप्ति का सूचक है। कुछ लोगों का मत है कि संस्कारों में (संन्यास को छोड़कर) पूर्णाहुति नहीं करनी चाहिये। यथा—

"शङ्का—किन किन संस्कारों में पूर्णाहुति का विधिनिषेध है ग्रौर क्यों ?

समाधान—पूर्णाहुति ग्रनुष्ठान की समाप्ति पर होनी चाहिये। संस्कार क्योंकि शरीर से सम्बन्ध रखते हैं। शरीर के संस्कारों में ग्रारम्भ का संस्कार गर्भाधान है। परन्तु केवल इस संस्कार मात्र से शरीर के संस्कारों का क्रम समाप्त नहीं होता। इस शृङ्खला का ग्रन्तिम संस्कार संन्यास है। इस प्रकार शरीरसंस्कार का यह क्रम गर्भाधान से ग्रारम्भ होकर क्योंकि संन्यास पर समाप्त होता है, ग्रतः संन्यास संस्कार के ग्रन्त में पूर्णाहुति का विधान है। क्योंकि बीच के किसी भी संस्कार पर यह शृङ्खला समाप्त नहीं होती, ग्रतः ग्रन्य किसी भी संस्कार के ग्रन्त में पूर्णाहुति का विधान नहीं है। संन्यास के ग्रन्त में 'ग्रो३म् भूः स्वाहा' इस पूर्णाहुति के मन्त्र से पूर्णाहुति करने का विधान महर्षि ने किया है।" ❋

इस लम्बे उद्धरण से लेखक के मुख्य रूप से तीन निष्कर्ष निकलते हैं—

क— संस्कारों का क्रम जीवन भर (संन्यासपर्यन्त) चलता है, उनकी शृङ्खला बीच में नहीं टूटती, ग्रतः बीच के किसी भी संस्कार में पूर्णाहुति नहीं करनी चाहिये।

ख— पूर्णाहुति केवल संन्यास संस्कार के ग्रन्त में करनी चाहिये ग्रौर वहाँ पूर्णाहुति का मन्त्र है—'ग्रो३म् भूः स्वाहा'।

ग— किसी भी अन्य संस्कार में पूर्णाहुति का विधान नहीं किया गया है ॥

आइये इन तीन निष्कर्षों पर थोड़ा विचार करें—

क— विद्वान् महानुभाव ने संस्कारों में निरन्तरता की बात दर्शाई है। पर जातकर्म-नामकरण और उपनयन-वेदारम्भ को छोड़कर अन्य प्रायः सभी संस्कारों के मध्य में पर्याप्त लम्बा अन्तराल रहता है। कई संस्कारों के मध्य तो वर्षों का अन्तराल होता है। चूडाकर्म और कर्णवेध में २ वर्ष का, कर्णवेध और उपनयन में ३ वर्ष का, वेदारम्भ और समावर्त्तन में ३१ वर्ष, १६ वर्ष अथवा १२ वर्ष का, विवाह और वानप्रस्थ में २५ वर्ष का और वानप्रस्थ और संन्यास में प्रायः २५ वर्ष का अन्तराल माना गया है।

जब संस्कारों के मध्य में कई कई मास और अनेक वर्षों का भी अन्तराल रहता है तो नैरन्तर्य (=शृङ्खलात्व) कहाँ रहा? यदि कहें कि, 'चाहे कितने ही मास अथवा वर्ष बीच में पड़ जायें, क्योंकि अभी संस्कार-क्रम यावत्संन्यास चलता रहेगा, अतः उसे नैरन्तर्य ही माना जाना चाहिये और नैरन्तर्य के कारण बीच में पूर्णाहुति नहीं होनी चाहिये'। इस पर हमारा निवेदन है कि तब तो यह सिद्धान्त सर्वत्र लागू होना चाहिये। ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचारी के लिये प्रतिदिन अग्निहोत्र करने का निर्देश है—"मेखलादण्डधारणभैक्ष्यचर्य-समिदाधान ....एते ते नित्यधर्माः' (मेखला और दण्डधारण, भिक्षाचरण अग्निहोत्र.... ये तेरे नित्य करने के कर्म हैं ...)" [सं० वि०, वेदारम्भ-संस्कार]। गृहस्थाश्रम में गृहस्थ के लिये भी नित्य दैनिक अग्निहोत्र करने की अनिवार्यता विहित है— "जैसे सायं प्रातः दोनों सन्धिवेलाओं में सन्ध्योपासन करें इसी प्रकार दोनों स्त्रीपुरुष अग्निहोत्र भी दोनों समय में नित्य किया करें" (सं० वि०, गृहाश्रमप्रकरण)। वानप्रस्थ भी नित्य अग्निहोत्र करे ऐसा शास्त्रीय निर्देश है-'अग्निहोत्रं समादाय गृह्यं चाग्निपरिच्छदम्। एतानेव महायज्ञान्निर्वपेद् विधिपूर्वकम् ॥ स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्याद्दान्तो मैत्रः समाहितः। दाता नित्यमनादाता सर्वभूतानुकम्पकः। वैतानिकं च जुहुयादग्निहोत्रं यथाविधि ॥"

(मनु० अ० ६, श्लो. ४, ८, ९)

इस प्रकार ब्रह्मचर्याश्रम के आरम्भ (८ वर्ष की अवस्था) से लेकर वानप्रस्थाश्रम-समाप्ति (७५ वर्ष की अवस्था) तक नित्य दैनिक अग्निहोत्र करने की अनिवार्यता शास्त्र में बांधी गई है। यावत्संन्यासदीक्षा के आश्रम-परिवर्त्तन होगा, पर होम का कार्य सर्वत्र चालू रहेगा-'आश्रमादाश्रमं गत्वा हुतहोमो जितेन्द्रियः' (मनु. ६.३४)।

अब देखिये ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ इन तीनों आश्रमों में निरन्तर प्रतिदिन दोनों कालों में विधीयमान इस दैनिक अग्निहोत्र के अन्त में भी प्रतिदिन पूर्णाहुति का विधान किया गया है। यथा—

(i) "........इन [भूरग्नये प्राणाय स्वाहा आदि] आठ मन्त्रों से एक-एक मन्त्र करके एक-एक आहुति, ऐसे आठ आहुति देके—'ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' इस मन्त्र से तीन

पूर्णाहुति अर्थात् एक-एक बार पढ़के एक-एक करके तीन आहुति देवे। इत्यग्निहोत्र-विधिः संक्षेपतः समाप्तः ॥" (सं० वि०, गृहाश्रमविधि)।

(ii) "अथोभयोः कालयोरग्निहोत्रे होमकरणार्थास्समाना मन्त्राः—'ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥१॥'........**ओं सर्वं वै पूर्णं**ँ स्वाहा ॥६॥ भाष्यम्–........। एवं प्रातःसायं सन्ध्योपासनकरणानन्तरमेतैर्मन्त्रैर्होमं कृत्वा........।" (पञ्चमहायज्ञविधि, देवयज्ञ०)।

जब तीनों आश्रमों में (लगभग ६७ वर्ष तक) बिना एक दिन के भी व्यवधान के निरन्तर किये जाने वाले दैनिक अग्निहोत्र के अन्त में भी प्रतिदिन पूर्णाहुति का विधान है, तो फिर प्रत्येक संस्कार के अन्त में पूर्णाहुति करना कैसे अवैधानिक है? यदि संस्कारों की शृङ्खला बीच में समाप्त नहीं होती तो दैनिक अग्निहोत्र की शृङ्खला बीच में कहाँ समाप्त होती है? संस्कारों के मध्य में तो कई कई मासों ही नहीं अनेकानेक वर्षों का भी पर्याप्त अन्तराल होता है, जबकि दैनिक अग्निहोत्र के मध्य में तो चंद घण्टों का ही अन्तराल है। यह बड़ी विचित्र बात होगी कि, कहीं १६ और २५ वर्षों के अन्तराल रहने पर भी निरन्तरता=अविशृङ्खला मानी जाय और कहीं मात्र कुछ घण्टों के अन्तराल के कारण ही निरन्तरता को नकार दिया जाय! यदि संस्कारों में वर्षों के अन्तराल के होने पर भी नैरन्तर्य मानने के कारण वहाँ पूर्णाहुति का विधान नहीं है, तो कुछ घण्टों मात्र के अन्तराल से तो सुतरां नैरन्तर्य होने के कारण दैनिक अग्निहोत्र में पूर्णाहुति का विधान नहीं होना चाहिये था, पर इसके विपरीत नैत्यक होमकर्म में पूर्णाहुति का विधान है और सर्वत्र है—संस्कारग्रन्थ में भी और पञ्चमहायज्ञग्रन्थ में भी। इससे विधिकर्त्ता आचार्य का यही अभिप्राय प्रतीत होता है कि यथा दैनिक अग्निहोत्र-कर्म की पूर्णता (=समाप्ति) के सूचनार्थ प्रतिदिन पूर्णाहुति की जाती है तथैव संस्कारकर्म-गत आहुतिकर्म के समापन के सूचनार्थ संस्कारों में भी पूर्णाहुति की जाय।

मन्त्रार्थ-लभ्य भाव की दृष्टि से भी ऐसा करना उचित है। '**ओं सर्वं वै पूर्णं**ँ-स्वाहा' मन्त्र के द्वारा जैसे नित्यकर्म के अग्निहोत्र-कार्य और उसके फल की परिपूर्णता=अन्यूनता के लिये प्रतिदिन भगवान् से प्रार्थना करना श्रेयस्कर है, वैसे ही संस्कारकर्मगत होमकार्य और उसके फल की सम्पूर्णता की सिद्धि के लिये संस्कारों में भी इस मन्त्र से प्रार्थना करना श्रेयस्कर ही है।

ख—यदि पूर्णाहुति किसी भी अन्य संस्कार में अभिप्रेत नहीं है, केवल संन्याससंस्कार में ही इष्ट है और वहाँ भी पूर्णाहुति करने का मन्त्र '**ओ३म् भूः स्वाहा**' है, तो फिर संस्कारविधि के सामान्यप्रकरण में पूर्णाहुति के लिये '**ओं सर्वं वै पूर्णं**ँस्वाहा' मन्त्र का दिया जाना व्यर्थ हो जाता है। यदि कहें कि 'आचार्य को दैनिक अग्निहोत्र में पूर्णाहुति इष्ट है, अतः वहाँ के लिये सामान्यप्रकरण में यह मन्त्र उल्लिखित किया होगा, तो यह बात भी ठीक नहीं है क्योंकि दैनिक अग्निहोत्रादि के लिये तो पूर्णाहुति-हेतु 'गृहाश्रमविधि' में '**ओं सर्वं वै पूर्णं**ँ **स्वाहा**' मन्त्र पृथक् से

दिया हुआ है ही। संन्यासातिरिक्त संस्कार में पूर्णाहुति इष्ट नहीं और संन्यास में तदर्थ अन्य ही मन्त्र विहित है तो इस प्रकार स्वतः ही 'ओं सर्वं वै पूर्णं॰स्वाहा' यह सामान्यप्रकरणस्थ पूर्णाहुति-मन्त्र व्यर्थ हो गया। सार्थकता प्रतीत न होने पर भी दिया हुआ वचन ज्ञापक हुआ करता है= 'व्यर्थं सज्ज्ञापयति' (व्या॰ महाभाष्य) । यह व्यर्थ प्रतीयमान मन्त्र ज्ञापित यह करता है कि गर्भाधान से लेकर वानप्रस्थ तक के संस्कारों में जो पूर्णाहुति होगी वह 'ओं सर्वं वै पूर्णं॰स्वाहा' इस मन्त्र से दी जायेगी, क्योंकि संन्यास-संस्कार की पूर्णाहुतिहेतु तो 'ओ३म् भूः स्वाहा' यह मन्त्र वहाँ अलग से विहित है ही।

ग—किं च, यदि यह तर्क दिया जाय कि संस्कारविधि में संन्यास को छोड़कर अन्य किसी भी संस्कार के विधिप्रकरण में पूर्णाहुति का उल्लेख नहीं है तो यह एक व्यर्थ का तर्क होगा, क्योंकि कई सामान्य विधानों के लिये संस्कारविधि का सामान्य-प्रकरण ही 'परिभाषा' का काम करता है। जैसे 'परिभाषा' एकदेश में स्थित—उल्लिखित होते हुए भी सर्वत्र लागू होती है, वैसे ही 'सामान्यप्रकरण' के निर्दिष्ट सामान्य विधान भी सर्वत्र लागू होंगे। यदि यह हठ किया जाय कि हम तो तत्तत्संस्कार में जो विधि-विधान निर्दिष्ट है, वही कर्त्तव्य मानते हैं, तब तो अनेक स्थानों पर विचित्र स्थिति उत्पन्न होगी। देखिये—

(i) गर्भाधान, जातकर्म, गृहप्रवेश और वानप्रस्थ में 'ईश्वरस्तुति॰ स्वस्तिवाचन-शान्तिकरण' का उल्लेख नहीं है।

(ii) पुंसवन, जातकर्म, वेदारम्भ, समावर्त्तन, वानप्रस्थ और संन्यास में 'आचमन' का निर्देश नहीं हैं।

(iii) जातकर्म, समावर्त्तन, विवाह, गृहप्रवेश, वानप्रस्थ और संन्यास संस्कार में 'अयन्त इध्म आत्मा॰' वाली पञ्चघृताहुतियों का विवरण नहीं है।

(iv) पुंसवन में अग्न्याधान का विधान नहीं है।

(v) जातकर्म और संन्याससंस्कार में जलसेचन कर्म का उल्लेख नहीं है।

(vi) जातकर्म, वानप्रस्थ और संन्याससंकार में स्विष्टकृदाहुति का लेख नहीं है।

क्या इन संस्कारों में अनुल्लिखित होने से ये विधियाँ न की जायें ? और न करने में क्या हेतु है ? क्या पुंसवनसंस्कार में अग्न्याधान का उल्लेख न होने के कारण, बिना अग्निवाले यज्ञकुण्ड में ही घृत और शाकल्य की आहुतियाँ लगाई जायेंगी ?

यह सब देखकर मानना ही होगा कि भले ही कई सामान्य विधि-विधान, प्रत्येक संस्कार में उल्लिखित नहीं हैं, फिर भी 'सामान्यप्रकरण' के उल्लेख के अनुसार उन विधियों को प्रत्येक संस्कार में करना ही चाहिये।

अब प्रश्न होता है कि, पूर्णाहुति-कर्म को प्रत्येक संस्कार में करने का सामान्य-प्रकरण में कहाँ विधान है ? सो इसके समाधानार्थ देखिये—

"सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे । न शीघ्र न विलम्ब से उच्चारण करे, किन्तु मध्यभाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, करे । यदि यजमान न पढ़ा हो तो इतने मन्त्र तो अवश्य पढ़ लेवे । यदि कोई कार्यकर्त्ता जड़ मन्दमति काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो, तो पुरोहित और ऋत्विज् मन्त्रोच्चारण करें और कर्म उसी मूढ यजमान के हाथ से करावें । पुनः निम्नलिखित मन्त्र से पूर्णाहुति करें । स्रुवा को घृत से भर के— **'ओं सर्वं वै पूर्णं ॐ स्वाहा'** ॥ इस मन्त्र से एक आहुति देवें । ऐसे दूसरी और तीसरी आहुति देके, जिसको दक्षिणा देनी हो देवें वा जिसको जिमाना हो जिमा, दक्षिणा देके, सबको बिदा कर, स्त्रीपुरुष हुतशेष घृत, भात वा मोहनभोग को प्रथम जीम के पश्चात् रुचिपूर्वक उत्तमान्न का भोजन करें" ।

(सं० वि०, समान्यप्रकरण) ।

आचार्य की इस अविकल वाक्यावली में पांच क्रियाओं का उल्लेख है–मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण करना, पूर्णाहुति करना, दक्षिणा देना, जिमाना और जीमना । ये पांच कर्म कहाँ करने हैं, सो इसके लिये इस सन्दर्भ (परिच्छेद) के आरम्भ में निर्देश है— **'सब संस्कारों में'**.... । अर्थात् जैसे मन्त्रोच्चारण, दक्षिणादान, जिमाना और हुतशेष-भोजन ये कर्म सब संस्कारों में करने हैं, वैसे ही पूर्णाहुति कर्म भी सब संस्कारों में कर्त्तव्य है । यह कैसे हो सकता है कि **'सब संस्कारों में'** के अधिकार में कर्त्तव्यरूप से निर्दिष्ट पाँच कर्मों में से चार का तो ग्रहण कर लिया जाय और इनके बीच में पठित एक पूर्णाहुति-कर्म का परित्याग कर दिया जाय !

सब संस्कारों में पूर्णाहुति करने की बात की पुष्टि, पूर्वोद्धृत सन्दर्भ के तुरत बाद के वचन से भी होती है--"**मङ्गलकार्य** । अर्थात् गर्भाधानादि संन्याससंस्कार-पर्यन्त **पूर्वोक्त** और निम्नलिखित सामवेदोक्त वामदेव्यगान अवश्य करें" इस वचन में वामदेव्यगान के समान पूर्वोक्त (=पूर्वोक्त कार्य) को भी सभी संस्कारों में अवश्य करणीय बताया गया है । तो पूर्वोक्त कार्य में पूर्णाहुति भी निर्दिष्ट है ।

यदि संस्कारों में पूर्णाहुति के विरोधी, यह तर्क करें कि भले ही 'संस्कारविधि' में, सब संस्कारों में पूर्णाहुति करने की बात कही हो, पर अन्य (पूर्वाचार्य आदि के) किसी ग्रन्थ में संस्कारों में पूर्णाहुति कर्म का निर्देश नहीं किया गया है, तो इस विषय में हमारा निवेदन है कि, कम से कम उन्हें तो ऐसा तर्क नहीं करना चाहिये । क्योंकि वे स्वयं ही लिखते हैं—"संस्कारों का विधिविधान ठीक २ जानने के लिये और संस्कार ठीक ढंग से कराने के लिये इस समय के एतद्विषयक समस्त साहित्य में महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी महाराजकृत संस्कारविधि से बढ़कर और उत्तम ग्रन्थ नहीं है । अन्य सब ग्रन्थों में कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य मिलेगी ॥" ❀

❀ 'शङ्का-समाधान-लेखमाला' (स्वामी मुनीश्वरानन्द-सरस्वतीकृत, प्र. भा., पृ. १०६)

अर्थात् वे संस्कार-सम्बन्धी विधिविधान के लिये महर्षिकृत संस्कारविधि को सर्वोपरि उपादेय मानते हैं। अब देखें कि उन्हीं के सर्वतोऽभिमत उस ग्रन्थरत्न संस्कार-विधि में सभी संस्कारों के लिये पूर्णाहुति का स्पष्ट विधान उल्लिखित है, जैसा कि पूर्व पृष्ठों में विश्लेषण किया गया है।

'शङ्का-समाधान-लेखमाला' के संस्कारों में पूर्णाहुति-निषेध प्रकरण में (पृ. ९७-९८) दो बातें और विचित्र सी लिख दी गईं हैं। १. संस्कार शरीर से सम्बन्ध रखते हैं और २. 'अन्त्येष्टि कर्म' संस्कार नहीं है। संस्कारविधि के अध्ययन से ये दोनों बातें चिन्त्य प्रतीत होती हैं। संस्कारों का सम्बन्ध केवल शरीर से नहीं अपितु शरीर और आत्मा दोनों से है। देखिये—(i) "वेदादिशास्त्र-सिद्धान्तमाध्याय परमादरात्। आर्यैतिह्यं पुरस्कृत्य शरीरात्मविशुद्धये ॥" (संस्कारविधि, उपक्रम) ॥ (ii) "जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं। इसलिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है"। (सं०वि० भूमिका) ॥ अन्त्येष्टि के विषय में देखें—(i) 'पश्चात् गर्भाधानादि अन्त्येष्टिपर्यन्त सोलह संस्कार क्रमशः लिखे हैं" (सं०वि० भूमिका) । (ii) 'गर्भाद्या मृत्युपर्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि'। (सं० वि०. उपक्रम)

(iii) 'अन्त्येष्टि-कर्म उसे कहते हैं जो शरीर के अन्त का संस्कार है। जिसके आगे उस शरीर के लिये कोई भी अन्य संस्कार नहीं है'। (सं० वि०, अन्त्येष्टिविधि)

(iv) 'इति मृतकसंस्कारविधिः समाप्तः' ॥

इन वचनों से स्पष्ट है कि 'संस्कारविधि' के कर्ता अन्त्येष्टि-कर्म को भी एक संस्कार मानते हैं।

नामावली-भाग

हमारे इस नामसंग्रह में बालकों के लिये ६०५८ छः हजार अट्ठावन नामों का और बालिकाओं के लिये २१५१ दो हजार एक सौ इक्कावन नामों का संग्रह हुआ है।

बालिकानामों में वृद्धि

बालिकाओं के लिये नामों में और भी अभिवृद्धि की जा सकती है। विद्वान् जन अथवा पुरोहित-बन्धु अपने व्याकरणादि के ज्ञान के आधार पर, बालक-नामों में यथोचित ङीप् (=ई), टाप् (=आ), ऊ आदि प्रत्ययों का योग करके उन्हें बालिका-नामों में परिवर्तित कर सकते हैं। उदाहरणार्थ—जितने भी ईश्वरशब्दान्त बालकनाम हैं उनके अन्त में (=अन्त के अ के स्थान पर) ई लगाने से बालिका—नाम बन जायेंगे। यथा—देवेश्वर-देवेश्वरी; धनेश्वर-धनेश्वरी, ज्ञानेश्वर-ज्ञानेश्वरी। इसी प्रकार कान्त, भद्र, शील, इन अथवा आनन-शब्दान्त बालकनामों के अन्त में आ लगा दें। यथा—कमलकान्त-

कमलकान्ता, दयाकान्त-दयाकान्ता; चारुभद्र-चारुभद्रा, सर्वभद्र-सर्वभद्रा; विनयशील-
विनयशीला; भावेन-भावेना; हेमेन-हेमेना; जयानन-जयानना, निगमानन-निगमानना ।
दीर्घ ईकारान्त बालकनामों के अन्त्य ई के स्थान पर इनी लगादें तो बालिकानाम बन
जायेगा। यथा— क्षेमदर्शी-क्षेमदर्शिनी, योगी-योगिनी, लोकजयी-लोकजयिनी। ह्रस्व इकारान्त
(तिप्रत्ययान्त को छोड़कर) बालकनामों के अन्त में दीर्घ ई लगा दें। यथा—चारुपाणि-
चारुपाणी, पतञ्जलि-पतञ्जली, यशोमणि-यशोमणी, करुणानिधि-करुणानिधी। उकारान्त
(गु अन्त वालों को छोड़कर) बालकनामों के अन्त में ऊ लगा देने से वह स्त्रीलिङ्ग नाम
बन जायेगा। यथा— अमावसु-अमावसू, अवनीन्दु-अवनीन्दू, ब्रह्मबन्धु-ब्रह्मबन्धू ॥ इस रीति से
बालिकानामों की सङ्ख्या में सहस्राधिक नामों की वृद्धि की जा सकती है।

नामों में समाक्षरता और विषमाक्षरता

नामकरणसंस्कार में नाम रखने के प्रसङ्ग में वर्त्तमान में यह धारणा प्रचलित है कि बालकों के नाम समाक्षर (२, ४, ६ आदि के) और बालिकाओं के नाम विषमाक्षर (१, ३, ५ आदि के) होने चाहियें। इस धारणा का मूलकारण है कई गृह्यसूत्रों में इस प्रकार के निर्देश का उल्लेख। यथा—'युग्मानि त्वेव पुंसाम्। अयुजानि स्त्रीणाम् ॥ (आश्व० गृ० १.१५.८-९) ॥ 'पिता नाम करोति द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा ...' (पार० गृ० १.१७.१-२) ॥ पर इस धारणा का प्रचलन बाद के काल से आरम्भ हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है। प्राचीन स्मृतिग्रन्थों में इस धारणा का कहीं उल्लेख नहीं है। मनुस्मृति (अध्याय २) में नामकरण के विषय में कुल ४ श्लोक हैं।

नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यां वाऽस्य कारयेत्।
पुण्ये तिथौ मुहूर्त्ते वा नक्षत्रे वा गुणाऽन्विते ॥ ३० ॥
मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात् क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम् ॥ ३१ ॥
शर्मवद् ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम् ॥ ३२ ॥
स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्पष्टार्थं मनोहरम्।
माङ्गल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत् ॥ ३३ ॥

मनु महाराज के इन श्लोकों में कहीं भी समाक्षर या विषमाक्षर की चर्चा नहीं है।

कुछ गृह्यसूत्रकार भी अक्षरवाली धारणा को नहीं मानते। यथा—

"जननादूर्ध्वं दशरात्राच्छतरात्रात्संवत्सराद्वा नाम कुर्यात् ॥ ६ ॥ स्नाप्य कुमारं करिष्यत उपविष्टस्य शुचिनाऽऽच्छाद्य माता प्रयच्छेदुदक्छिरसम् ॥ ७ ॥ अनुपृष्ठं गत्वोत्तरत उपविशेत् ॥ ८ ॥ हुत्वा कोऽसीति तस्य मुख्यान् प्राणानभिमृशेत् ॥ ९ ॥ असाविति नाम

कुर्यात्तदेव मन्त्रान्ते ॥ १० ॥ मात्रे ॥ प्रथममाशिताय ॥ १२ ॥" खादिर (= द्राह्यायण) गृह्यसूत्र (पटल २, खण्ड ३) के इस पूरे नामकरण प्रकरण में समाक्षरता या विषमाक्षरता का कोई उल्लेख नहीं है।

प्राचीन ऐतिहासिक नामों पर दृष्टि डालने से भी यही परिलक्षित होता है कि तब अक्षर-बन्धन वाली बात नहीं थी। यथा—

(i) ईश्वर से वेदों के साक्षात् लाभकर्ता चार ऋषियों में से दो विषमाक्षर-नाम वाले हैं— आदित्य और अङ्गिराः।

(ii) यजुर्वेद के शाखाप्रवर्त्तक ऋषियों में से उपलब्ध ८६ ऋषिनामों में ४८ विषमाक्षर हैं। यथा—कलिङ्ग, ऋचाभ, कलाप, चुलभि, सुमति, आप्रीत, कृशाश्व, सुमूलि, सोमावि, इलक, मधुक, कहोड, चरक, हरिद्रु, वराह, छगलि आदि।

(iii) ऋग्वेद के मन्त्रार्थद्रष्टा ऋषियों में २० % से अधिक के नाम विषमाक्षर हैं। यथा— अनिल, अयास्य, अरुण, उचथ्य, कर्णश्रुत्, देवल, द्युम्नीक, धरुण, नहुष, नाभाक, नारद, प्रचेताः, मूर्धन्वान्, भुवन, पृषध्र, वसिष्ठ, विहव्य, सुकक्ष, सुमित्र, हर्यत आदि।

(iv) सत्रह प्रजापतियों में से ११ विषमाक्षर-नामा हैं— कर्दम, विकृत, संश्रय, मरीचि, पुलस्त्य, अङ्गिराः, प्रचेताः, पुलह, विवस्वान्, अरिष्टनेमि, कश्यप।

(v) क—वाल्मीकीय रामायण में महाराज राम के ३६ पूर्वजों के नाम उद्धृत हैं। उनमें से २० के नाम विषमाक्षर हैं— मरीचि, कश्यप, विवस्वान्, इक्ष्वाकु, विकुक्षि, त्रिशङ्कु, मान्धाता, सुसन्धि, भरत, असित, सगर, अंशुमान्, दिलीप, ककुत्स्थ कल्माषपाद, शङ्खण, शीघ्रग, नहुष, ययाति, नाभाग।

ख-दशरथ के अद्वितीय चार पुत्रों के विधिवत् नामकरण-संस्कार-पूर्वक जो नाम रखे गये उनमें से तीन विषमाक्षर हैं—भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न।

ग-दशरथ के आठ अमात्यों में ५ के नाम विषमाक्षर हैं—जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, सुमन्त्र, राष्ट्रवर्धन।

घ-सात मन्त्रियों में से ५ विषमाक्षरनामा हैं—सुयज्ञ, जाबालि, (गोतम—) गौतम, दीर्घायु।

ङ-दो ऋत्विजों में से एक का विषमाक्षर नाम है—वसिष्ठ।

च-सीता के २३ पूर्वजों के उद्धृत नामों में ७ विषमाक्षर हैं—जनक, नन्दिवर्धन, सुकेतु, सुधृति, हर्यश्व, विबुध, जनक।

(vi) पुराकाल में हुए पन्द्रह चक्रवर्ती राजाओं में से ६ के नाम विषमाक्षर हैं—सुद्युम्न, कुवलयाश्व, वध्र्यश्व, ननवतु, सर्याति, ययाति। (मैत्र्युप० १.४)

(vii) क—महाभारत में प्रसिद्ध ५ पाण्डवों में से २ विषमाक्षरनामा हैं—अर्जुन, नकुल ।

ख—धृतराष्ट्र के पुत्रों में से ३३ के नाम विषमाक्षर हैं । यथा—युयुत्सु, दुःसह, दुःशल, दुष्प्रधर्षण, विवित्सु, सुवर्मा, सुषेण, सुहस्त, सुवर्चाः, अभय, विरजाः आदि ।

(viii) वेदाङ्गों के प्रवक्ता ऋषियों में से अनेक के स्वनाम तथा पितृनाम विषमाक्षर हैं । यथा—सेनक, (भगुर—) भागुरि, (पुष्करसाद—) पौष्करसादि, शन्तनु, (शुनक—) शौनकि, (कश्यप—) काश्यप, गालव, (शकट—) शाकटायन, (शकल—) शाकल्य, (पणिन—) पाणिनि, पिङ्गल ।। लगध ।। वराह, खदिर, हिरण्यकेश, वाधूल, काठक, गोभिल, (कुशिक—) कौशिक, वसिष्ठ, हारीत आदि ।

(ix) उपाङ्गों (=दर्शनों) के रचयिताओं में—कणाद, कपिल, गोतम और जैमिनि विषमाक्षरनामा हैं ।

(x) महाभारतोत्तर-काल के प्रसिद्ध राजाओं में भी अनेक के विषमाक्षर नाम हैं । यथा—जनमेजय, परिजित्, भुवनपति, पर्वतसेन, नृहरिदेव, उदयपाल, पर्वतसेन, अनङ्कशायी, अमरचूड, सुखपाताल, भुवनपति, शत्रुमर्दन, जीवनलोक, आदित्यकेतु, समुद्रपाल, विक्रमपाल, केशवसेन, माधवसेन, कल्याणसेन, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, अशोक आदि ।

(xi) इसी प्रकार स्त्रियों के समाक्षर नाम भी होते थे । यथा—सीता, सती, श्रुतिकीर्ति, लोपामुद्रा, घोषा, जुहूः, अम्बालिका, सत्यवती, गङ्गा, कुन्ती, कृष्णा, माद्री, सत्यभामा, लक्ष्मी, रमा, तारा, दमयन्ती, मदालसा, अरुन्धती आदि ।

इन ऐतिहासिक नामों के निदर्शन से स्पष्ट फलित होता है कि, बालकों (=पुरुषों) के समाक्षर और बालिकाओं (= स्त्रियों) के विषमाक्षर ही नाम रखने का गृह्यसूत्रों का निर्देश प्रायिक है, पीछे से चला है और सर्वथा अनुपालित नहीं हुआ है ।

अतः हमने भी इस 'नामनिधि' में बालकों के लिये विषमाक्षर और बालिकाओं के लिये समाक्षर नामों को भी स्थान दिया है । फिर भी किन्हीं का आग्रह बालकों के समाक्षर नाम ही रखने का हो तो वे त्र्यक्षर नामों के अन्त में प्रसाद, सागर, कुमार आदि जोड़कर उन्हें समाक्षर बना सकते हैं ।

अन्तःस्थ अक्षरों की अनिवार्यता

कई गृह्यसूत्रों में निर्दिष्ट, नाम में कोई अन्तःस्थ (= य र ल व) अक्षर सम्मिलित करने की बात भी सर्वतो निर्दिष्ट तथा परिपालित नहीं रही है । मनुस्मृति और खादिर-गृह्यसूत्र के उपर्युद्धृत नामकरणप्रकरणीय वचनों में इस बात की कोई चर्चा नहीं है । कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक नामों में भी इनका सन्निवेश नहीं मिलता । यथा—मनु, अग्नि, मान्धाता, कुक्षि, बाण, सुसन्धि, असित, अंशुमान्, ककुत्स्थ, नहुष, नाभाग, अज, पाणिनि,

सेनक, शेष, स्थाणु, दक्ष, अकोपन, गोतम, अशोक, सुमति, कहोड, शान्तनु, पाण्डु, हनुमान्, भीम आदि।

अतः हमने भी अपने 'नामनिधि' में अन्तःस्थ अक्षरों के सन्निवेश की अनिवार्यता पर ध्यान नहीं दिया है।

इसी प्रकार गृह्यसूत्रों में निर्दिष्ट एतद्विषयक अन्य अनुबन्धनों का भी परिपालन करना हमने अनिवार्य नहीं समझा है। गृह्यसूत्रोक्त नियमों का पालन करने में एक कठिनाई यह भी थी कि, वर्त्तमान में लोग स्वसन्तान का नवीन से नवीन और अप्रसिद्ध नाम रखने की चेष्टा करते हैं। इस स्थिति में अक्षरादि-नियमों का पालन करते हुए अधिकाधिक नामों का सङ्कलन सम्भव नहीं था।

सिंहान्त नाम नहीं

हमारी इस पुस्तक में एक भी ऐसा नाम नहीं है जिसके अन्त में सिंह हो। नाम के अन्त में सिंह लगाने की प्रवृत्ति बहुत आधुनिक है। क्षत्रियों के नाम भी रामायण और महाभारत काल में तो सिंहान्त होते ही नहीं थे। पीछे के क्षत्रियों और क्षत्रियराजाओं में भी यह रीति बहुत बाद में चली है। उदाहरणार्थ जोधपुर (राजस्थान) राज्य के इतिहास को लें। जोधपुर के महाराजाओं की वंशावली के अनुसार श्रीमान् राव सीहाजी से लेकर वर्त्तमान के श्री महाराजा गजसिंह जी तक कुल ३५ महाराजा राजगद्दी पर पदासीन हुए। उनमें से आरम्भ के १८ राजाओं के नाम में 'सिंह' शब्द नहीं था। यथा— राव सीहा जी, राव आस्थान जी, राव धूहड़ जी, राव रामपाल जी, राव कनकपाल जी राव जालनसी जी, राव छाड़ा जी, राव तींड़ा जी, राव सलखा जी, राव वीरम जी, राव चूंडा जी, राव रिड़मल जी, राव जोधा जी, राव सूजा जी, राव बघ्घा जी, राव गंगा जी, राव नालदेवजी और राव चन्द्रसेनजी। १९वें महाराजा 'मोटाराजा उदयसिंहजी' से सिंह शब्द का प्रचलन हुआ, जो लगभग ३०० वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं है। भारत के अन्य प्राचीन राजवंशों के नामों की भी यही स्थिति है। हमने प्राचीन परिपाटी का अनुसरण करते हुए और **'क्षतात् त्रायतेऽसौ क्षत्रियः'** इस वर्णनाम-निहित भावना को आदर देते हुए क्षत्रियों के लिये भी सिंहान्त नामों का संग्रह नहीं किया है।

नवीन नाम

इस पुस्तक में पठित अनेकनाम सर्वथा नये प्रतीत होंगे। जैसे— अनूह, अश्मेश, अभिष्यन्त, ईशवर, इलाङ्क, उपोह, कवीन, चिदयन, तोषेन्दु, नवायन, मितीश, शिल्पी, श्वित, शुभाश्र, शुभाष, सुभास, समुल्लास। अमी, इतीना, छन्दोगा, छवीना, भवेना, महीदा, नीना, नारीशा, सूहा, स्विति, स्वीहा आदि। पर प्रचलन में आ जाने पर इनका अनोखापन सह्य हो जायेगा।

पाठकों को इस पुस्तक में कई ऐसे नाम मिलेंगे, जो आपाततः देखने में अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के प्रतीत होंगे, पर वस्तुतः हैं वे अर्थान्तर से संस्कृत भाषा के। उदाहरणार्थ— मेडिकल, सुपर और सुखरात नाम लें। ये नाम अंग्रेजी और यूनानी के से दिखते हैं। पर यहाँ ये संस्कृत से लिये गये हैं और इनका अर्थ उनसे भिन्न है। **मेडिकलः**= 'मेडि' शब्द वाणी के पर्यायवाचियों में निघण्टु में पठित है। 'कल' धातु गति और सङ्ख्यान अर्थ में पठित है। 'कलँ' शब्द करने अर्थ में भी है। धारणार्थ में भी इसका प्रयोग होता है। अतः— मेडि वाणीं कलयति = गच्छति = प्राप्नोति, जानाति, धारयति वा स मेडिकलः (मेडि + कल + क, 'मूलविभुजादिभ्यः कः') । अथवा मेडि वाणीं (वेदमयीं) सञ्चष्टे, शब्दापयति स मेडिकलः । अथवा मेडिप्रधानाः (= वाणीप्रधानाः) कला यस्य स मेडिकलः (उत्तरपदलोपी बहु० समासः)। वाणी को प्राप्त करनेवाला जाननेवाला; वेदवाणी का उच्चारणकर्ता, अध्यापयिता, धारणकर्त्ता और वाणीप्रधान कलाओं वाला मेडिकल कहलायेगा। **सुपरः**— सु शोभनः परः श्रेष्ठ इति सुपरः। सु शोभनेषु परः श्रेष्ठः सुपरः। सु शोभनो रुचितः परः परमेश्वरः यस्मै स सुपरः। सु शोभनः परेषु शत्रुष्वपि यो (दयालुत्वात्) स सुपरः। सुपर के अर्थ हुए— अतिश्रेष्ठ, उत्तमों में श्रेष्ठ, ईश्वर में रुचि रखनेवाला, शत्रुओं के प्रति भी अवसर पर सद्व्यवहार करने वाला।

सुखरात— सुखाय सुखोपभोगाय रातो दत्तः सुखरातः। सुखं सुखकारि रातं दत्तं (=दानम्) यस्य स सुखरातः। सुख पाने के लिए प्रदत्त अथवा जिसका दिया दान सुख उपजावे वह सुखरात हुआ। व्याकरण-बल से सभी इस प्रकार के नामों का अर्थ गम्य हो जायगा।

अनेक नामों में वैदिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। यथा— उपब्दीश, अश्नेश, भर्मेश, अहनेन्द्र, गौरीश्वर, शचीश्वर आदि। उपब्दि = वाणी, अश्ना = मेघ, भर्म =सुवर्ण, अहना = उषःकाल। यहाँ गौरी और शची से महादेव की पत्नी और इन्द्र की पत्नी का अभिप्राय नहीं है। गौरी और शची वाक् (=वाणी) के पर्यायवाची निघण्टु में पठित हैं। नामों में नवीनता लाने और सङ्ख्या बढ़ाने की दृष्टि से यह अपेक्षित था। हमारे विचार में ऐसे वैदिक शब्दों का नामों में प्रयोग करना अनुचित नहीं है जो कि लोक में अवधार्थ में प्रयुक्त नहीं हो चुके हैं। जब नया नाम रखने के चक्कर में लोग डिम्पल, मोंटू; सबेरा, अल्पा, स्वीटी, मोनू, मोना आदि नाम रख रहे हैं, तब वैदिक नाम रखने में क्या हानि है?

कठिन नामों के अर्थ

इस नामावली में कई ऐसे अप्रसिद्ध ऐतिहासिक अथवा वैदिक अथवा व्याकरण-व्युत्पादित नवीन नाम हैं जिनका अर्थ झटिति सर्वसाधारण को नहीं सूझेगा। अतः सुविधा के लिये सर्वान्त में कुछ कठिन नामों के अर्थ भी दिये हैं। इसके लिये लगभग

६१० नाम ही चुने गये। कठिन नामों के केवल हिन्दी में संक्षिप्त भावार्थ ही दिये जा सके हैं। अधिक नामों के अर्थ देने और व्याकरण-व्युत्पत्ति आदि देने में पुस्तक का कलेवर बढ़ जाता, अतः संयम करना पड़ा।

परमदयालु परमेश्वर की कृपा से चिरकाङ्क्षित नाम-सङ्ग्रह का 'नामनिधि' नाम से मुद्रणकार्य सम्पन्न हुआ। इसके प्रकाशनार्थ सेठ श्री चन्द्रप्रकाश जी देवड़ा (स्वामी, रावत होटल, जयपुर) से निर्व्याज आर्थिक सहायता प्राप्त हुई, तदर्थ मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। इस पुस्तिका के मुद्रापणार्थ मासाधिक-कालपर्यन्त जयपुर में रहना पड़ा। इस काल में श्री देवड़ाजी, उनकी ध० प० अथक आतिथेयी अन्नपूर्णा अ० सौ० अरुणाजी तथा समस्त परिवार ने मुझे आवास और भोजनादि की चिन्ता से मुक्त रखा। भगवान् उन्हें सांसारिक और पारमार्थिक सर्वसुखों से सम्पन्न बनावे।

श्री शङ्कर आर्ट प्रिण्टर्स, जयपुर के अधिपति श्री पं० राधेश्यामजी शर्मा का भी मैं धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने रुचि लेकर इस पुस्तक के स्वच्छ और शीघ्र मुद्रणार्थ व्यवस्था की। प्रेस के कार्यकर्त्ता यन्त्रनियन्त्रक श्री राधेश्याम जी, अक्षरसंयोजक–श्री गौरीशङ्कर जी, श्री रामबिहारी जी, श्री रामकिशन जी, मोहनजी, मदनजी आदि को भी साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने इस कार्य के शीघ्र सम्पूर्ण होने में स्वयोगदान किया।

जहाँ कहीं कमी या त्रुटियाँ रह गई हैं, उनका कारण मैं अपनी अल्पयोग्यता, अल्पशक्ति और समयाल्पता को ही मानता हूँ। सज्जन महानुभाव त्रुटियों से मुझे सूचित करेंगे ऐसी आशा करता हूँ।

प्र. ज्ये. कृ. ७ रविवार
वि. सं. २०४५

निवेदक
विद्वज्जनचरणरजोजुट्
सत्यानन्दवेदवागीश

—❀—

॥ ओ३म् ॥

नामकरण—

संस्कार-विधिः

परिभाषा— जिस संस्कार में बालक (=पुत्र अथवा पुत्री) का सोद्देश्य, सार्थक, उत्तम नाम प्रसिद्धिपूर्वक रखा जाय उसे **नामकरण-संस्कार** कहते हैं।

काल— 'बालक का जिस दिन जन्म हो, उस दिन से लेके १० दिन छोड़ ११ ग्यारहवें, वा १०१ एक सौ एकवें अथवा दूसरे वर्ष के आरम्भ में जिस दिन जन्म हुआ हो उस दिन नामकरण संस्कार करें'।

नामकरण संस्कार के लिये यजमान निम्नलिखित वस्तुओं का सङ्ग्रह एक दिन पूर्व ही करले—

अपेक्षित वस्तुएँ

यज्ञमण्डप, यज्ञकुण्ड, आसन; घृतपात्र १, थाली बड़ी १, थाली छोटी २, स्रुवा (छः ग्राम घी के परिमाण वाले घी होमने के चम्मच) २, आचमन पात्र ८, लोटा १, जलपूर्णकलश १, बन्दनवार, समिधा ३ कि०, घृत २५० ग्राम, घृतमिश्रित सुगन्धित सामग्री ३०० ग्राम, जौ १०० ग्राम, चावल १०० ग्राम, खांड १५० ग्राम, मीठा भात तथा मिष्टान्न २५० ग्राम, दीपक-पंखी-चिमटा १-१, रूई, कपूरदेशी १० ग्राम, केसर ½ ग्राम, जावित्री २ ग्राम, जायफल १ नग, छोटी इलायची ५ ग्राम, हल्दी-आटा-रोली ५०-५० ग्राम, नारियल २, चन्दन (घिसा हुआ), माचिस १, यज्ञोपवीत ४, पुष्पमाला १०, पुष्प, ऋत्विग्वरण के वस्त्र, यज्ञशेष (= प्रसाद), ऋतुफल, दक्षिणा।

सुगन्धित सामग्री में— तगर, कपूरकचरी (असली), तुंबरूबीज, सुगन्ध-कोकिला, बालछड़, बच, जटामांसी, श्वेत चन्दन, गूगल, खस, ब्राह्मी, गिलोय, नागरमोथा और शतावरी अवश्य हों।

घृत को गरमकर छान, पुनः अच्छा गरम होने के लिये अग्नि पर रख दें और जावित्री-जायफल-इलायची-केसर को बारीक पीस लें। घृत जब अच्छा गरम हो जाय तो उसे उतारकर उसमें उपर्युक्त जावित्री आदि का चूर्ण डालकर, ढक्कन से अच्छी प्रकार ढक कर रख दें। दूसरे दिन तक यह घृत यज्ञयोग्य बन जायेगा।

मण्डप और यज्ञवेदि को अच्छी प्रकार सजावें। बिछावट स्वच्छ हो। यजमान और ऋत्विग् आदि नियत यज्ञिय स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

निर्धारित तिथि को निर्धारित समय से कुछ पूर्व ही यजमान और पुरोहित तथा अन्य आमन्त्रित इष्ट, मित्र, हितैषी, सम्बन्धी आदि यज्ञमण्डप में आकर यज्ञवेदि के पश्चिम भाग में यज्ञवेदि से थोड़ा हटकर पूर्वाभिमुख बैठें और यजमान उन्हें सत्कारपूर्वक बिठावें।

निश्चित समय होने पर यजमान उठकर पुरोहित के समक्ष खड़ा हो, हाथ जोड़—

'ओ३म् आ वसोः सदने सीद'

यह वाक्य बोलकर उनसे यज्ञवेदि पर अपना आसन ग्रहण करने का निवेदन करे। तब पुरोहित—

'ओ३म् सीदामि' यह वाक्य बोलकर यज्ञवेदि के दक्षिण भाग में स्थित पीठासन पर उत्तराभिमुख बैठे।

अन्य उपस्थित ऋत्विजों और विद्वानों को भी यथोचित स्थान पर बैठावे।

यजमान सपत्नीक यज्ञवेदि के पश्चिम भाग में पूर्वाभिमुख बैठे। यजमान-पत्नी पति के बायें भाग में बैठे।

सङ्कल्प-पाठ

यजमान सपत्नीक❀ दक्षिण हाथ में जल लेकर निम्नलिखित सङ्कल्प-वाक्य बोले—

ओ३म् तत् सत् श्रीब्रह्मणो दिवसे द्वितीये प्रहरोत्तरार्धे वैवस्वते मन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, ... अधिके द्विसहस्रतमे विक्रमसंवत्सरे,....... अयने, ...ऋतौ, ...मासे, ...पक्षे,........तिथौ,........ वासरे, ...नक्षत्रे, ...लग्ने शुभमुहूर्त्ते जम्बूद्वीपे▽ भरतखण्डे▽ ....देशे▽.... प्रदेशे, ... मण्डले, ... नगरे, स्वगृहे .... गोत्रोत्पन्नः, श्रीमतां .... महोदयानां पौत्रः, श्रीमतां .... महोदयानां पुत्रः, ...नामाऽहम्, अ० सौ० श्रीमत्या .... नाम्न्या धर्मपत्न्या सहितः स्वनवजातस्य (स्वनवजातायाः) पुत्रस्य (पुत्र्याः) नामकरणसंस्कारं श्रद्धया, शान्त्या, धैर्येण, विचारपूर्वकं क्रमशः करिष्ये।

❀ यदि नामकरण संस्कार ११वें दिन किया जा रहा हो और उस समय यजमानपत्नी (=बालक की माता) निर्बल हो तो अकेला यजमान ही सङ्कल्पादि कर्म कर ले और नामकरण की मुख्य आहुतियों के समय पत्नी को बुलवाले।

△ यदि नामकरणसंस्कार भारत और एशिया से बाहर के स्थान में हो तो उस उस महाद्वीप और देश आदि का नाम बोले।

ऋत्विग्वरण

तदनन्तर यजमान, पुरोहित की ओर अभिमुख हो, हाथ जोड़—'अहं नामकरणसंस्कार-सम्पादनाय भवन्तं पुरोहितं वृणे' यह वाक्य बोलकर पुरोहित का वरण करे।

पुरोहित 'ओं वृतोऽस्मि' इस वचन को बोलकर वरण की स्वीकृति देवे।

तब यजमान, पुरोहित के ललाट पर सुगन्धयुक्त चन्दनादि का अनुलेपन करे और सुगन्धित पुष्पों की माला उन्हें अर्पित करे और पुरोहित—

'ओं यद् यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु।
तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि॥

इस मन्त्र से उस पुष्पमाला को धारण करे। इसके पश्चात् यजमान पुरोहित को यथाशक्ति नवीन उत्तमवस्त्र, आभूषण तथा पात्र आदि भेंट स्वरूप प्रदान करे। अन्य ऋत्विजों का भी इसी प्रकार वरण-सत्कार करे।

पुरोहित के निदेश पर सपत्नीक यजमान स्वयं भी चन्दनानुलेपन और पूर्ववत् पुष्पमाला-धारण करे।

वरण-क्रिया समाप्त होने पर सब यथास्थान शान्तिपूर्वक बैठ जावें। केवल एक व्यक्ति जो संयोजक हो वही व्यवस्था की देखभाल करे और अभ्यागतों के स्वागत का ध्यान रखे। अन्य सब जन यज्ञकर्म में ही अपना ध्यान केन्द्रित रक्खें।

आचमन

यजमान, पुरोहित और वेदिस्थ व्यक्ति दक्षिण हस्त में जल लेकर—

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

इन मन्त्रों को बोलकर एक एक से एक एक इस प्रकार तीन आचमन करें। हाथ धोकर बायें हाथ की हथेली में जल लेकर, दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलि के अग्रभाग को उसमें डुबोकर निम्नलिखित मन्त्रों से अङ्गस्पर्श करें।

अङ्गस्पर्श व मार्जन

ओं वाङ् म आस्येऽस्तु। इस मन्त्र से मुख का स्पर्श करें।
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु। इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र।
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। इस मन्त्र से दोनों आंखें।

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । इस मन्त्र से दोनों कान ।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । इस मन्त्र से दोनों बाहू ।
ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु । इस मन्त्र से दोनों जङ्घा ।
ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु । इस मन्त्र से सब अङ्गों पर मार्जन (=जल छिड़काव) करें ।

यज्ञोपवीत-धारण

वेदिस्थ व्यक्तियों में से यदि किसी व्यक्ति का यज्ञोपवीत उतर गया हो और उस समय वह यज्ञोपवीत-रहित हो तो पुरोहित—

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

इस मन्त्र को बोले ।

और वह व्यक्ति—**ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥**

इस मन्त्र को बोलकर नवीन यज्ञोपवीत धारण करे ।

तत्पश्चात् सब आंखें बन्द करके ध्यानस्थ होकर निम्नलिखित मन्त्रों से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें । मधुर स्वर से मन्त्र सब बोलें किन्तु प्रत्येक मन्त्र का अर्थ, पुरोहित अथवा नियत विद्वान् ही बोले और अन्य सब उसे ध्यान से सुनें और विचारें—

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाः

ओ३म्* विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥ (य० ३०.३)

सवितः = हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त ।
देव = शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके
नः = हमारे
विश्वानि = सम्पूर्ण
दुरितानि = दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को
परा सुव = दूर कर दीजिये ।
यत् = जो
भद्रम् = कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है
तत् = वह सब, हमको
आ सुव = प्राप्त कराइये ।

* यह आरम्भ में 'ओ३म्' शब्द निर्देश के लिये है । आगे के 'हिरण्यगर्भ' आदि मन्त्रों के आरम्भ में भी 'ओम्' शब्द बोलें ।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥
(य० १३.४)

हिरण्यगर्भः = जो स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेवाले सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो
भूतस्य = उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का
जातः = प्रसिद्ध
पतिः = स्वामी
एकः = एक ही चेतनस्वरूप
आसीत् = था, जो
अग्रे = सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व
सम् अवर्त्तत = वर्त्तमान था
सः = वह
इमाम् = इस
पृथिवीम् = भूमि—
उत = और
द्याम् = सूर्य आदि को
दाधार = धारण कर रहा है। हम लोग उस
कस्मै = सुखस्वरूप
देवाय = शुद्ध परमात्मा के लिये
हविषा = ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से
विधेम = विशेष भक्ति किया करें।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छाया ऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥
(य० २५.१३)

यः = जो
आत्मदा = आत्मज्ञान का दाता
बलदा = शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला
यस्य = जिसकी
विश्वे = सब
देवाः = विद्वान् लोग
उपासते = उपासना करते हैं। और
यस्य = जिसका
प्रशिषम् = प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं
यस्य = जिसका
छाया = आश्रय ही
अमृतम् = मोक्षसुखदायक है।
यस्य = जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही
मृत्युः = मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस
कस्मै = सुखस्वरूप
देवाय = सकल ज्ञान के देनेवाले परमात्मा की प्राप्ति के लिये
हविषा = आत्मा और अन्तःकरण से
विधेम = भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहें।

य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥
(य० २३.३)

य: = जो
प्राणत: = प्राण वाले और
निमिषत: = अप्राणिरूप
जगत: = जगत् का
महित्वा = अपने अनन्त महिमा से
एक: इत् = एक ही
राजा = विराजमान राजा
बभूव = है ।
य: = जो
अस्य = इस
द्विपद: = मनुष्य आदि और
चतुष्पद: = गौ आदि प्राणियों के शरीर की
ईशे = रचना करता है, हम लोग उस
कस्मै = सुखस्वरूप
देवाय = सकल ऐश्वर्य के देनेवाले परमात्मा के लिये ।
हविषा = अपनी सकल उत्तम सामग्री से
विधेम = विशेष भक्ति करें ।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व: स्तभितं येन नाक: ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥
(य० ३२.६)

येन = जिस परमात्मा ने
उग्रा = तीक्ष्ण स्वभाव वाले—
द्यौ: = सूर्य आदि
च = और
पृथिवी = भूमि को
दृढा = धारण [किया]
येन = जिस जगदीश्वर ने
स्व: = सुख को
स्तभितम् = धारण [किया] और
येन = जिस ईश्वर ने
नाक: = दु:ख रहित मोक्ष को धारण किया है ।
य: = जो
अन्तरिक्षे = आकाश में
रजस: = सब लोकलोकान्तरों को
विमान: = विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है हम लोग उस
कस्मै = सुखदायक
देवाय = कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिये
हविषा = सब सामर्थ्य से
विधेम = विशेष भक्ति करें ।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।। ६ ।।
(ऋ० १०-१२१-१०)

प्रजापते ! = हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन् !
त्वत् = आपसे
अन्यः = भिन्न दूसरा कोई
ता = उन
एतानि = इन
विश्वा = सब
जातानि = उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को
न = नहीं
परि बभूव = तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं ।
यत्कामाः = जिस जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग
ते = आपका
जुहुमः = आश्रय लेवें और वाञ्छा करें
तत् = उस उस की कामना
नः = हमारी सिद्ध
अस्तु = होवे । जिससे
वयम् = हम लोग
रयीणाम् = धनैश्वर्यों के
पतयः = स्वामी
स्याम = होवें ।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥
(य० ३२.१०)

हे मनुष्यो !
सः = वह परमात्मा
नः = अपने लोगों का
बन्धुः = भ्राता के समान सुखदायक
जनिता = सकल जगत् का उत्पादक
सः = वह
विधाता = सब कामों को पूर्ण करने वाला
विश्वा = सम्पूर्ण
भुवनानि = लोकमात्र और
धामानि = नाम-स्थान-जन्मों को
वेद = जानता है । और
यत्र = जिस
तृतीये = सांसारिक सुखदुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त
धामन् = मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में
अमृतम् = मोक्ष को
आनशानाः = प्राप्त होके
देवाः = विद्वान् लोग
अध्यैरयन्त = स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं । वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है । अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥
(य० ४०.१६)

अग्ने = हे स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने वाले—
देव = सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे
विद्वान् = सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके
अस्मान् = हम लोगों को
राये = विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये
सुपथा = अच्छे धर्मयुक्त आप्तलोगों के मार्ग से
विश्वानि = सम्पूर्ण
वयुनानि = प्रज्ञान और उत्तम कर्म
नय = प्राप्त कराइये । और
अस्मत् = हम से
जुहुराणम् = कुटिलता युक्त
एन: = पापरूप कर्म को
युयोधि = दूर कीजिये । इस कारण हम लोग
ते = आपकी
भूयिष्ठाम् = बहुत अधिक
नम उक्तिम्=नम्रतापूर्वक प्रशंसा
विधेम = सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ।

तदनन्तर बालक के स्वास्थ्य, दीर्घायु तथा प्रगति की और समस्त जगत् के कल्याण की कामना करते हुए स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का पाठ करें—

स्वस्तिवाचन

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ॥ २ ॥
(ऋ० १-१-१, ९)

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥ ३ ॥
स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥ ४ ॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥ ५ ॥
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥ ६ ॥
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ ७ ॥ (ऋ० ५.५१.११–१५)

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥
(ऋ० ७.३५.१५)

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ॥ ९ ॥

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥१०॥

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिहृ्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥११॥

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥१३॥

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९॥

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥
(ऋ० १०-६३.३-१६)

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥
(यजु० १.१)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥२४॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ॥२५॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥
(यजु० २५. १४, १५, १८, १६, २१)

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२६॥
त्वमग्ने यज्ञानाꣳ होता विश्वेषाꣳ हितः ।
देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥
(साम० पू० १. १. १, २)

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥ (अथर्व० १.१.१)

॥ इति स्वस्तिवाचनम् ॥

तत्पश्चात् बालक के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा में शान्ति की स्थिरता के लिये समस्त जगत् में शान्ति की स्थापना की कामना करते हुए निम्न० मन्त्रों का पाठ करें—

शान्तिकरण

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥ १ ॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ २ ॥

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥ ३ ॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥ ४ ॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥ ५ ॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥ ६ ॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥ ७ ॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥ ८ ॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥ ९ ॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥ १० ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥ ११ ॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ १२ ॥

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥ १३ ॥
(ऋ० ७.३५. १-१३)

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १४ ॥

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्रदद् देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥ १५ ॥

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥ १६ ॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥१७॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्ति-
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १८ ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं
प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं
भूयश्च शरदः शतात् ॥ १९ ॥
(यजु० ३६.८, १०–१२,१७,२४)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २० ॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २१ ॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २२ ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २३ ॥

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २४ ॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ २५ ॥
(यजु० ३४. १–६)

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ २६ ॥
(सा० उ० १.३)

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥ २७ ॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥ २८ ॥
(अथर्व. १९. १५. ५, ६)

॥ इति शान्तिकरणम् ॥

समिधाचयन

वेदि-प्रमाण से तैयार की हुई छोटी बड़ी समिधाओं को वेदि में युक्ति से चुनें। चारों ओर तथा मध्य में वायु आने का अवकाश रखें।

दीपप्रज्वालन

'ओं भूर्भुवः स्वः'

इस मन्त्र से घृत का दीपक जलावें।

तदनन्तर उस दीपक से कपूर प्रज्वलित कर, उसे एक पात्र में धर, उस पर छोटी छोटी समिधाएँ लगा यजमान [अथवा पुरोहित] उस पात्र को दोनों हाथों से उठा—

अग्न्याधान

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥
(यजु० ३. ५)

इस मन्त्र से उस पात्रस्थ अग्नि का वेदिस्थ समिधाओं में आधान करे। अग्नि पर छोटी छोटी समिधाएँ और कपूर रखे और छोटी पंखी हाथ में लेकर—

अग्निप्रदीपन

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳪ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥
(यजु० १५.५४)

इस मन्त्र से अग्नि को प्रदीप्त करें।

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब घृत में डूबी हुई तीन तीन समिधाओं में से एक एक को निकाल कर दक्षिण* हाथ में लेकर यजमान आदि निम्नलिखित विधि से अग्नि में चढावें—

समिदाधान

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥
इदमग्नये जातवेदसे, इदन्न मम ॥ (आश्व० गृ० १.१०.१२)

इस मन्त्र से पहिली समिधा।

---

* यज्ञकर्म में आहुति आदि सभी कार्य दक्षिण हस्त से ही किये जाते हैं।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदमग्नये, इदन्न मम ॥

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतन्तीव्रञ्जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे, इदन्न मम ॥

इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा ।

ओं तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि ।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे, इदन्न मम ॥
(यजु० ३.३)

इस मन्त्र से तीसरी समिधा ।

पांच घृताहुतियाँ

यजयान और यजमानपत्नी घृत के स्रुवा को दक्षिण हाथ में ले, उसे अंगूठा-मध्यमा-अनामिका से पकड़, घृतपात्र में डुबो, घृत भर के—

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥

इदमग्नये जातवेदसे, इदं न मम ॥ (आश्व० गृ० १.१०.१२) ।

इस मन्त्र को पांच बार बोलकर पांच घृताहुति देवें ।

जलसेचन

तत्पश्चात् दक्षिण अञ्जलि में जल लेकर वेदि की पूर्व आदि दिशाओं में निम्न० निर्देशानुसार जलसेचन करें—

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ इस मन्त्र से पूर्व में ।
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इस मन्त्र से पश्चिम में ।
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इस मन्त्र से उत्तर में । (गोभि० गृ० १.३.१–३)
ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥
(यजु० ३०.१)

इस मन्त्र से चारों दिशाओं में ।

आघाराहुति

निम्नलिखित विधि से दो घृताहुति दें—

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये, इदन्न मम ॥

इस मन्त्र से उत्तर भाग की प्रज्वलित अग्नि पर ।

ओं सोमाय स्वाहा ।। इदं सोमाय, इदन्न मम ।।

इस मन्त्र से दक्षिण भाग की प्रज्वलित अग्नि पर ।

आज्यभागाहुति

निम्न० मन्त्रों से दो घृताहुति वेदि के मध्य में दें—

ओम् प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये, इदन्न मम ।।
ओम् इन्द्राय स्वाहा ।। इदमिन्द्राय, इदन्न मम ।।

व्याहृत्याहुति

निम्नाङ्कित मन्त्रों से चार घृताहुति देवें—

ओम् भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये, इदन्न मम ।।
ओम् भुवर्वायवे स्वाहा ।। इदं वायवे, इदन्न मम ।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय, इदन्न मम ।।
ओम् भूर्भुवःस्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः, इदन्न मम ।।

अष्टाज्याहुति

निम्नलिखित मन्त्रों से आठ घृत की आहुति देवें—

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ।। १ ।।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्, इदन्न मम ।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा ।। २ ।।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्, इदन्न मम ।। (ऋ. ४.१.४,५)

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युराचके स्वाहा ।। ३ ।।
इदं वरुणाय, इदन्न मम ।। (ऋ. १.२५.१९)

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा ।। ४ ।।
इदं वरुणाय, इदन्न मम ।। (ऋ. १. २४. ११.)

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।। ५ ।।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः,
इदन्न मम ।। (कात्या० श्रौ० २५. १. ११)

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि ।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँ स्वाहा ॥ ६ ॥
इदमग्नयेऽयसे, इदन्न मम ॥ (कात्या० श्रौ० २५.१.११)

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ ७ ॥
इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च, इदन्न मम ॥ (ऋ० १.२४.१५)

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ ।
मा यज्ञँहिँसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा ॥८॥
इदं जातवेदोभ्याम्, इदन्न मम ॥ (यजु० ५.३)

तत्पश्चात् निम्न० निर्देशानुसार दैनिक अग्निहोत्र* की आहुतियां देवें ।
ये आहुतियां घृत और शाकल्य (= सामग्री आदि) दोनों की देवें卐—

दैनिक अग्निहोत्र

प्रातःकालिक आहुतियां—

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥ (यजु० ३.६)
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या ।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ (यजु० ३.१०)

सायङ्कालिक आहुतियां—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ १ ॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

निम्न० मन्त्र का मन में पूरा उच्चारण करके आहुति देवें—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ ३ ॥ (यजु० ३.६)
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ (यजु० ३.१०)

---

* यदि उस दिन दैनिक अग्निहोत्र पूर्व ही पृथक् कर लिया हो तो संस्कार के समय पुनः करने की आवश्यकता नहीं है ।

卐 सुगन्धित शाकल्य (= सामग्री) को घृत में मिला लें और दोनों उसी घृत की आहुति देवें अथवा पुरुष घी की और स्त्री शाकल्य की आहुति देवे ।

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि ।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा ॥ ६ ॥
इदमग्नयेऽयसे, इदन्न मम ॥ (कात्या० श्रौ० २५. १. ११)

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ ७ ॥
इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च, इदन्न मम ॥ (ऋ.१.२४.१५)

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ ।
मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा ॥८॥
इदं जातवेदोभ्याम्, इदन्न मम ॥ (यजु० ५.३)

तत्पश्चात् निम्न० निर्देशानुसार दैनिक अग्निहोत्र❀ की आहुतियां देवें । ये आहुतियां घृत और शाकल्य (= सामग्री आदि) दोनों की देवें卐—

दैनिक अग्निहोत्र

प्रातःकालिक आहुतियाँ—

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥ (यजु० ३.९)
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या ।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ (यजु० ३.१०)

सायङ्कालिक आहुतियाँ—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ १ ॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

निम्न० मन्त्र का मन में पूरा उच्चारण करके आहुति देवें—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ ३ ॥ (यजु० ३.९)
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ (यजु० ३.१०)

❀ यदि उस दिन दैनिक अग्निहोत्र पूर्व ही पृथक् कर लिया हो तो संस्कार के समय पुनः करने की आवश्यकता नहीं है ।

卐 सुगन्धित शाकल्य (= सामग्री) को घृत में मिला लें और दोनों उसी घृत की आहुति देवें अथवा पुरुष घी की और स्त्री शाकल्य की आहुति देवे ।

दोनों समय की आहुतियाँ—

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।। इदमग्नये प्राणाय, इदन्न मम ।। १ ।।

ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।। इदं वायवेऽपानाय, इदन्न मम ।। २ ।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।। इदमादित्याय व्यानाय,
इदन्न मम ।। ३ ।।

ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः, इदन्न मम ।। ४ ।।

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।। ५ ।।
(तै० आ० १०.१५)

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।। ६ ।। (यजु० ३२.१४)

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ।। ७ ।। (यजु० ३०.३)

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमउक्तिं विधेम स्वाहा ।। ८ ।।
(यजु० ४०.१६)

ओम् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ।। ९ ।। (यजु० ३६-३)

माता द्वारा बालक का प्रदान-आदान

तत्पश्चात् बालक की माता अपने आसन पर पूर्वाभिमुख खड़ी होकर स्नान कराये हुए और शुद्ध वस्त्र पहिनाये हुए बालक को इस प्रकार गोद में लेवे कि बालक का शिर उत्तर में और पग दक्षिण में रहें । तब माता बालक सहित, बालक के पिता के पीछे से होकर उसके दक्षिण भाग में आवे और बालक को उसी स्थिति में (= उत्तर शिर दक्षिण पग) पिता के हाथों में सौंप देवें और वापिस पति के पीछे से होकर उत्तर भाग में आकर अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ जावे । तब पिता उस बालक को उसी स्थिति में अपनी पत्नी को सौंप देवे । तत्पश्चात् नामकरण-संस्कार का प्रधान होम करें । पति और पत्नी दोनों घृताहुति देवें ।

प्रधान होम

सर्वप्रथम—

ओम् प्रजापतये स्वाहा ।।

इस मन्त्र से एक घृताहुति देवें ।

तदनन्तर बालक का जन्म जिस तिथि में हुआ हो उस तिथि के नाम से एक और उस तिथि के देवता के नाम से एक; एवं जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उस नक्षत्र के नाम से एक और उस नक्षत्र के देवता के नाम से एक इस प्रकार चार घृताहुति देवें।

तिथि, तिथिदेवता, नक्षत्र और नक्षत्र-देवता के चतुर्थी-विभक्त्यन्त और स्वाहान्त मन्त्र नीचे दिये जा रहे हैं। इनमें से आवश्यकतानुसार चयन करके उनसे चार घृताहुति देवें—

तिथिमन्त्र

ओं प्रतिपदे स्वाहा ॥
ओं द्वितीयायै स्वाहा ॥
ओं तृतीयायै स्वाहा ॥
ओं चतुर्थ्यै स्वाहा ॥
ओं पञ्चम्यै स्वाहा ॥
ओं षष्ठ्यै स्वाहा ॥
ओं सप्तम्यै स्वाहा ॥
ओम् अष्टम्यै स्वाहा ॥
ओं नवम्यै स्वाहा ॥
ओं दशम्यै स्वाहा ॥
ओम् एकादश्यै स्वाहा ॥
ओं द्वादश्यै स्वाहा ॥
ओं त्रयोदश्यै स्वाहा ॥
ओं चतुर्दश्यै स्वाहा ॥
ओं पौर्णमास्यै स्वाहा ॥
ओम् अमावास्यायै स्वाहा ॥

तिथिदेवतामन्त्र

ओं ब्रह्मणे स्वाहा ॥
ओं त्वष्ट्रे स्वाहा ॥
ओं विष्णवे स्वाहा ॥
ओं यमाय स्वाहा ॥
ओं सोमाय स्वाहा ॥
ओं कुमाराय स्वाहा ॥
ओं मुनये स्वाहा ॥
ओं वसुभ्यः स्वाहा ॥
ओं शिवाय स्वाहा ॥
ओं धर्माय स्वाहा ॥
ओं रुद्राय स्वाहा ॥
ओं वायवे स्वाहा ॥
ओं कामाय स्वाहा ॥
ओम् अनन्ताय स्वाहा ॥
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥
ओं पितृभ्यः स्वाहा ॥

नक्षत्र-मन्त्र

ओम् अश्विन्यै स्वाहा ॥
ओं भरणीभ्यः स्वाहा ॥
ओं कृत्तिकाभ्यः स्वाहा ॥
ओं रोहिण्यै स्वाहा ॥
ओं मृगशीर्षाय स्वाहा ॥
ओम् आर्द्रायै स्वाहा ॥
ओं पुनर्वसुभ्यां स्वाहा ॥

नक्षत्रदेवता-मन्त्र

ओम् अश्विभ्यां स्वाहा ॥
ओं यमाय स्वाहा ॥
ओम् अग्नये स्वाहा ॥
ओं प्रजापतये स्वाहा ॥
ओं सोमाय स्वाहा ॥
ओं रुद्रेभ्यः स्वाहा ॥
ओम् अदितये स्वाहा ॥

ओं पुष्याय स्वाहा ॥
ओम् अश्लेषाभ्यः स्वाहा ॥
ओं मघाभ्यः स्वाहा ॥
ओं पूर्वाफल्गुन्यै स्वाहा ॥
ओम् उत्तराफल्गुन्यै स्वाहा ॥
ओं हस्ताय स्वाहा ॥
ओं चित्रायै स्वाहा ॥
ओं स्वात्यै स्वाहा ॥
ओं विशाखाभ्यां स्वाहा ॥
ओम् अनुराधायै स्वाहा ॥
ओं ज्येष्ठायै स्वाहा ॥
ओं मूलाय स्वाहा ॥
ओं पूर्वाषाढायै स्वाहा ॥
ओम् उत्तराषाढायै स्वाहा ॥
ओं श्रवणाय स्वाहा ॥
ओं धनिष्ठाभ्यः स्वाहा ॥
ओं शतभिषजे स्वाहा ॥
ओं पूर्वाभाद्रपदायै स्वाहा ॥
ओम् उत्तराभाद्रपदायै स्वाहा ॥
ओं रेवत्यै स्वाहा ॥

ओं बृहस्पतये स्वाहा ॥
ओं सर्पेभ्यः स्वाहा ॥
ओं पितृभ्यः स्वाहा ॥
ओं भगाय स्वाहा ॥
ओम् अर्यम्णे स्वाहा ॥
ओं सवित्रे स्वाहा ॥
ओं त्वष्ट्रे स्वाहा ॥
ओं वायवे स्वाहा ॥
ओम् इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ॥
ओं मित्राय स्वाहा ॥
ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥
ओं निर्ऋत्यै स्वाहा ॥
ओम् अद्भ्यः स्वाहा ॥
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥
ओं विष्णवे स्वाहा ॥
ओं वसुभ्यः स्वाहा ॥
ओं वरुणाय स्वाहा ॥
ओम् अजैकपदे स्वाहा ॥
ओम् अहिर्बुध्न्याय स्वाहा ॥
ओम् पूष्णे स्वाहा ॥

प्रधान होम की इन पांच आहुतियों के पश्चात् दो आघाराहुति, दो आज्यभागाहुति और चार व्याहृत्याहुति इस प्रकार कुल ८ घृत की आहुति देवें—

आघाराहुति

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये, इदन्न मम ॥ १ ॥
ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय, इदन्न मम ॥ २ ॥

आज्यभागाहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये, इदन्न मम ॥ १ ॥
ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय, इदन्न मम ॥ २ ॥

व्याहृत्याहुति

ओं भूरग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये, इदन्न मम ॥ १ ॥
ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे, इदन्न मम ॥ २ ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय, इदन्न मम ।। ३ ।।

ओं भूर्भुवःस्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।।

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः, इदन्न मम ।। ४ ।।

तत्पश्चात् निम्न० मन्त्र से स्थालीपाक (अर्थात् मीठा भात, खीर, मीठी खिचड़ी, लड्डू, मोहनभोग आदि जो भी घृतदुग्धसिद्ध मिष्ट पदार्थ उपस्थित हो) की एक आहुति देवें—

स्विष्टकृदाहुति

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय स्वाहा ।।

इदमग्नये स्विष्टकृते, इदन्न मम । (आश्व० गृ० १.१०.२२)

तदनन्तर निम्न० मन्त्र को मन में बोलकर घृत की आहुति दें—

प्राजापत्याहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये, इदन्न मम ।।

तत्पश्चात् निम्न० मन्त्र को तीन बार बोलकर संस्कार-होम की पूर्णता के द्योतनार्थ घृत और शाकल्य की तीन आहुति देवें—

पूर्णाहुति

ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ।।

इस प्रकार हवनकार्य समाप्त होने के पश्चात् बालक का पिता, पत्नी की गोद में स्थित बालक के नासिका द्वार से निकलते हुए वायु का स्पर्श अपने हाथ की मध्य की दो अङ्गुलियों के अग्रभाग से करते हुए, निम्नलिखित दो मन्त्रसमूह बोले और उनके अन्त में आये 'असौ' पद के स्थान पर बालक के पूर्व से निश्चित किये हुए नाम के सम्बोधनान्त रूप का उच्च स्वर से उच्चारण करे—

नामस्थापन-प्रसिद्धीकरण

ओं कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि ।
यस्य ते नामामन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम ।।
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः ।
(यजु० ७.२९)

ओं कोऽसि कतमोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि ।
आहस्पत्यं मासं प्रविशासौ ।। १ ।। (मन्त्रब्रा० १.५.१४) ।।

ओं स त्वाऽह्ने परिददातु, अहस्त्वा रात्र्यै परिददातु, रात्रिस्त्वाऽहोरात्राभ्यां परिददातु, अहोरात्रौ त्वार्धमासेभ्यः परिदत्ताम्, अर्धमासास्त्वा मासेभ्यः परिददतु, मासास्त्वर्तुभ्यः परिददतु, ऋतवस्त्वा संवत्सराय परिददतु, संवत्सरस्त्वायुषे जरायै परिददातु, असौ ॥ २ ॥

इस प्रकार बालक का नाम रखके, संस्कार में आये हुए मनुष्यों को वह नाम सुना के निम्न० मन्त्रों से सामगान करें—

ओं भूर्भुवः स्वः । कया नश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥

ओं भूर्भुवः स्वः । कस्त्वा सत्यो मदानां मँहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
दृढा चिदारुजे वसु ॥ २ ॥

ओं भूर्भुवः स्वः । अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् ।
शतं भवास्यूतये ॥ ३ ॥

(साम० उ० १.१.१२.१–३)

महावामदेव्यगानम्

का ऽ५या । नश्चा ३ यित्रा आ भुवात् । ऊ । ती सदावृधः स । खा ।
औ ३ होहायि । कया २३ शचायि । ष्ठयाहो ३ । हुंमा २ ।
वाऽ२र्तो३ऽ५ हायि ॥ १ ॥

काऽ५स्त्वा । सत्यो ३ मा ३ दानाम् । मा । हिष्ठो मात्सादन्ध । सा ।
औ ३ होहायि । दृढा २३ चिदा । रुजौहो ३ ।
हुंमा २ । वाऽ२ सो ३ऽ५ हायि ॥ २ ॥

आ ऽ ५ भी । षुणा ३ः सा ३ खीनाम् । आ विताजरायितॄ । णाम् ।
औ २३ हो हायि । शता २३म् भवा । सियो हो ३ । हुंमा २ ।
ताऽ२ यो ३ऽ५ हायि ॥ ३ ॥

दक्षिणा

सामगान के पश्चात् यजमान पुरोहित और ऋत्विजों को श्रद्धा-शक्त्यनुसार पुष्कल दक्षिणा भेंट करे और परोपकार-परायण संस्थाओं को दान भी करे ।

आशीर्वाद

तत्पश्चात् पुरोहित ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना-पूर्वक सब उपस्थित स्त्री-पुरुषों से निम्न० वाक्य बुलवाकर आशीर्वाद दिलवावें और पुष्पवृष्टि करावें—

हे बालक* ! त्वम् आयुष्मान् विद्यावान् धर्मात्मा वर्चस्वी तेजस्वी यशस्वी पुरुषार्थी प्रतापी परोपकारी श्रीमान् भूयाः ।

[हे बालिके* ! त्वम् आयुष्मती विद्यावती धर्मात्मा वर्चस्विनी तेजस्विनी यशस्विनी पुरुषार्थिनी प्रतापिनी परोपकारिणी श्रीयुक्ता भूयाः]

धन्यवाद और यज्ञशेष-वितरण

तब यजमान खड़ा होकर सबका धन्यवाद करे और यज्ञशेष मिष्टान्न का सबमें वितरण करवाके सबको ससम्मान विदा करे ।।

इति नामकरण-संस्कारविधिः

* यहां बालक/बालिके शब्द के बाद उसका नया रखा हुआ नाम भी सम्बोधनान्त बोले ।

ओ३म्

बालक-नामानि

अ
अंशु
अज
अत्रि
अंशुपा
अंशुमान्
अक्रूर
अक्षर
अगस्त्य
अघारि
अङ्कित
अङ्कुर
अङ्गद
अङ्गिरा
अचल
अच्युत
अजय
अजेय
अतीश
अतुल
अथर्वा
अधीश
अध्वर
अध्वेश
अनघ
अनल
अनूह
अनेना:
अन्वय
अभिजित्
अभीद्ध
अभीश
अभ्यूह
अभ्रेश
अभ्वेश
अमित
अमेश
अरुण
अर्चिष्मान्
अर्जुन
अर्यमा
अलर्क
अविक्षित्
अशनि
अशोक
अश्नेश
अश्मेश
अष्टक
असित
असीम
अस्तीश
अहीन
अहीश
अंशुकान्त
अंशुकेतु
अंशुपाल
अंशुमाली
अंशुमित्र
अंशुमौलि
अंशुरत्न
अंशुवर
अंशुव्रत
अकम्पन
अक्तुकान्त
अक्तुनाथ
अखिलाभ
अखिलेन
अग्निमित्र
अग्निवेश
अग्निवेश्य
अग्निव्रत
अग्निशील
अग्रयायी
अग्रवीर
अग्रशील
अग्रसेन
अचलेश
अजयेश
अजिताभ
अजितेश
अटलेश
अतिवाहु
अतियम
अतिरथ
अतिवीर
अतुलाभ
अतुलेन्द्र
अतुलेश
अत्रिदेव
अदितीन्द्र
अदितीश
अधितोष
अधिदेव
अधिरथ
अधिशील
अधीश्वर
अध्वरेश
अध्वेश्वर
अनघेन्द्र
अनमीव
अनिरुद्ध
अनिलेश
अनीकेन्द्र
अनीकेश
अनुतोष
अनुनय
अनुपम
अनुबन्ध
अनुबन्धु
अनुराग
अनुविन्दु
अनुशील
अनुश्रुत
अनुहार
अन्तिमित्र
अपारेश

अभिकान्त
अभिकेतु
अभिजात
अभितोष
अभिनय
अभिबन्धु
अभिभद्र
अभिमन्यु
अभिमित्र
अभिराम
अभिरुचि
अभिवीर
अभिशील
अभिषेक
अभिष्यन्त
अभिसर्ग
अभीश्वर
अभ्युदय
अभ्रकान्त
अमरेश
अमलेन्दु
अमलेन्द्र
अमलेश
अमावसु
अमिताभ
अमितौजा:
अमृतेश
अम्बरीष
अम्बरेश
अम्बुवीच
अयुताभ
अयुतायु
अयुतेश

अरविन्द
अरुणाभ
अरुणीन्द्र
अर्जुनीश
अर्वावसु
अवगाह
अवतंस
अवनीन्दु
अवनीन्द्र
अवनीप
अवनीश
अवाचीन
अविनाश
अविराम
अश्वकेतु
अश्वपति
असिक्नीश
अस्तिपाल
अस्तीश्वर
अहनेन्द्र
अहनेश
अहीश्वर
अंशुकरण
अंशुमोहन
अंशुरञ्जन
अंशुविलास
अंशुशेखर
अंशुसाधन
अखिलानन्द
अघमर्षण
अचलेश्वर
अजातशत्रु
अटलव्रत

अधिकरण
अधिविनय
अनिलेश्वर
अनीकेश्वर
अनुमोहन
अनुरञ्जन
अनुविनय
अनुसाधन
अपिविनय
अभयदेव
अभयानन
अभिकरण
अभिचरण
अभिमोहन
अभिविनय
अभिशरण
अभिसाधन
अमरेश्वर
अमितव्रत
अरिमेजय
अरिष्टनेमि
अरिष्टसेन
अवनिपाल
अवनीश्वर
अविकम्पन
अश्विनीक्रतु
अखिलनन्दन
अटलविहारी
अतुलनन्दन
अनिलकुमार
अश्विनीकुमार

आ

आर्य
आर्ष
आग
आचित
आतेश
आतोष
आदित्य
आनन्द
आयाति
आरुणि
आर्येन्द्र
आर्येश
आशेन्द्र
आशेश
आश्रुत
आष्ठेन्द्र
आष्ठेश
आस्तिक
आस्तीक
आकरेन्द्र
आखण्डल
आत्मकान्त
आत्मदेव
आत्मवीर
आत्मानन्द
आदित्येश
आपस्तम्ब
आभानन
आभामित्र
आर्यकान्त
आर्यकेतु
आर्यगुप्त

आर्यचन्द्र
आर्यदीप
आर्यद्युम्न
आर्यबन्धु
आर्यभद्र
आर्यभानु
आर्यमणि
आर्यमति
आर्यमित्र
आर्यमिश्र
आर्यमुनि
आर्यरत्न
आर्यरत्नम्
आर्यरश्मि
आर्यरुचि
आर्यवर
आर्यवसु
आर्यवीर
आर्यव्रत
आर्यशील
आर्यसत्य
आर्यसिन्धु
आर्येश्वर
आर्षकान्त
आर्षकेतु
आर्षचन्द्र
आर्षदीप
आर्षबन्धु
आर्षभद्र
आर्षभानु
आर्षमणि
आर्षमित्र
आर्षरत्न

आर्षव्रत
आर्षहीर
आलम्बन
आलोकेश
आविनय
आशुकान्त
आशुक्रतु
आशुतोष
आशुभास
आशुरत्न
आशुवीर
आशुव्रत
आशुशील
आशेश्वर
आदित्यकेतु
आदित्यपाल
आदित्यरत्न
आदित्यवेश
आर्यनन्दन
आर्यभूषण
आर्यमिहिर
आर्यमोहन
आर्यरञ्जन
आर्यशरण
आर्यशेखर
आर्यसहाय
आर्यस्वरूप
आर्षनन्दन
आर्षमिहिर
आर्षमोहन
आर्षरञ्जन
आशुनन्दन
आशुमोहन

आशुरञ्जन
आशुवन्दन
आशुसाधन
आदित्यनन्दन
आनन्दस्वरूप
आनन्दहृदय

इ

इन्दु
इन्द्र
इक्ष्वाकु
इडेश
इनेश
इन्द्राभ
इरेन्द्र
इरेश
इलाङ्क
इलाप
इलेन्द्र
इलेश
इत्वरेन्दु
इन्दुभद्र
इन्दुमणि
इन्दुमिश्र
इन्दुरत्न
इन्दुशील
इन्द्रकान्त
इन्द्रकेतु
इन्द्रगुप्त
इन्द्रदत्त
इन्द्रदेव
इन्द्रमणि
इन्द्रवर्मा
इन्द्रवीर

इन्द्रवेश
इन्द्रशील
इन्द्रसेन
इरेश्वर
इलाकेतु
इलाचन्द्र
इलापति
इलापाल
इलाबन्धु
इलामणि
इलामित्र
इलारत्न
इलावसु
इलावीर
इलाशील
इलेश्वर
इन्दुचरण
इन्दुभूषण
इन्दुमोहन
इन्दुशरण
इन्दुशेखर
इन्दुस्वरूप
इन्द्रमोहन
इन्द्रशरण
इलाचरण
इलानन्दन
इलामोहन
इलारञ्जन
इलाविलास

ई

ईश
ईलिन

ईहेन
ईहेश
ईशकेतु
ईशबन्धु
ईशमित्र
ईशमौलि
ईशरत्न
ईशवर
ईशवीर
ईशव्रत
ईशानन
ईशायन
ईश्वर
ईशनन्दन
ईशप्रसाद
ईशमोहन
ईशरञ्जन
ईशवन्दन
ईशशेखर
ईश्वरचन्द्र
ईश्वरदत्त
ईश्वरप्रसाद

उ

उत्स
उतथ्य
उत्तङ्क
उत्तम
उत्तर
उत्पल
उत्सव
उदय
उदार
उद्गीथ
उदीक्ष
उद्योत
उद्धव
उद्यम
उपांशु
उपाश
उपास
उपेन्द्र
उपेश
उपोह
उमेश
उर्वीन्दु
उर्वीश
उल्लास
उशना
उस्राप
उग्रसेन
उच्चरण
उज्जयन
उत्तमांशु
उत्तमाङ्क
उत्तमेन्दु
उत्तमेन्द्र
उत्तमेश
उत्तरांशु
उत्तरेश
उत्सवेन्दु
उदञ्चन
उदञ्जलि
उदयन
उदयेन्दु
उदयेश
उदारेन्द्र
उदारेश
उदावसु
उद्दालक
उद्यमेश
उपचित्र
उपतोष
उपनन्द
उपब्दीश
उपबन्धु
उपमन्त्र
उपमन्यु
उपमान
उपमेय
उपयम
उपयाज
उपरेन्द्र
उपरेश
उपलेन्द्र
उपलेश
उपवीर
उपशील
उपानन्द
उपायन
उपासक
उपासित
उमाकान्त
उमाशील
उमेश्वर
उरुरुचि
उषर्बुध
उपस्कान्त
उत्तमेश्वर
उत्तरेश्वर
उत्सवशील
उदयकान्त
उदयपाल
उदयवीर
उदयशील
उपराधिप
उपलाधिप
उपविनय
उपशरण
उमाशरण
उदयनन्दन
उदयप्रकाश
उदयमोहन
उदयविलास

ऊ

ऊर्जेश
ऊर्म्येश
ऊर्जेश्वर
ऊधस्कान्त

ऋ

ऋत
ऋभु
ऋषि
ऋष्व
ऋक्छील
ऋक्ष्वा
ऋक्पाल
ऋग्वीर
ऋगीश
ऋङ्मणि

ऋचाभ
ऋचीक
ऋचेश
ऋतजित्
ऋतपा
ऋतांशु
ऋताङ्क
ऋताभ
ऋतीन्द्र
ऋतीश
ऋतेन्द्र
ऋतेयु
ऋतेश
ऋषीन्द्र
ऋषीश
ऋष्वेन्द्र
ऋष्वेश
ऋक्साधन
ऋग्विलास
ऋङ्मोहन
ऋचापाल
ऋचाशील
ऋचेश्वर
ऋतपाल
ऋतबन्धु
ऋतभद्र
ऋतमणि
ऋतमित्र
ऋतमिश्र
ऋतमौलि
ऋतरत्न
ऋतरश्मि
ऋतवीर

ऋतव्रत
ऋतशील
ऋतानन
ऋतानन्द
ऋतायन
ऋतीश्वर
ऋतुकान्त
ऋतुपर्ण
ऋतुराज
ऋतेश्वर
ऋभुकान्त
ऋभुदेव
ऋभुरत्न
ऋभुरश्मि
ऋभुशील
ऋषिकान्त
ऋषिकेतु
ऋषिदत्त
ऋषिदेव
ऋषिनाथ
ऋषिपाल
ऋषिबन्धु
ऋषिभद्र
ऋषिमणि
ऋषिमित्र
ऋषिमौलि
ऋषिरत्न
ऋषिराज
ऋषिरात
ऋषिवर
ऋषिवीर
ऋषिवेश
ऋषिव्रत

ऋषिशील
ऋषीश्वर
ऋष्वेश्वर
ऋतकरण
ऋतचरण
ऋतनन्दन
ऋतरञ्जन
ऋतविलास
ऋतशरण
ऋतशेखर
ऋतसाधन
ऋभुकरण
ऋभुरञ्जन
ऋषिकुमार
ऋषिनन्दन
ऋषिभूषण
ऋषिमोहन
ऋषिरञ्जन
ऋषिवन्दन
ऋषिविलास
ऋषिशेखर
ऋषिसहाय
ऋषिसाधन

ए

एकेन्दु
एकेश
एकनाथ
एकवीर
एकव्रत
एकेश्वर
एकशरण

ऐ

ऐश्वर्यवीर
ऐश्वर्यमोहन

ओ

ओंशील
ओजस्वी
ओम्प्रिय
ओम्मित्र
ओम्मिश्र
ओङ्कारेश
ओजस्कान्त
ओजस्पति
ओजस्पाल
ओजोमित्र
ओजोमिश्र
ओजोरत्न
ओजोव्रत
ओदतीश
ओदनेन्द्र
ओदनेश
ओमयन
ओमानन
ओमानन्द
ओम्प्रकाश
ओम्प्रदत्त
ओम्प्रसाद
ओम्भूषण
ओङ्कारदत्त
ओङ्कारनाथ
ओङ्कारमिश्र
ओङ्कारेश्वर
ओजःसाधन

ओजोनन्दन
ओजोरञ्जन
ओङ्कारप्रसाद
ओङ्कारशरण

क

कंथ
कंयु
कण्व
कन्त
कन्ति
कन्तु
कम्ब
कम्भ
कल्प
कवि
कान्त
कारु
कुश
कृप
कृपाङ्क
कृष्ण
केतु
क्रतु
क्रान्त
क्षेन्द्र
क्षेश
कणाद
कपिल
कमीश
कर्मेन्दु
कर्मेश
कलाङ्क
कलाप
कलित
कल्पेश
कवीन
कवीन्द्र
कवीश
कश्यप
कान्तीश
कामजित्
कुलांशु
कुलाङ्क
कुलेन्द्र
कुलेश
कृताङ्क
कृतेश
कृत्तीश
कृपेश
कृशनाः
केशव
केश्वर
कोटीन्द्र
कोटीश
कोशाङ्क
कोशेन्दु
कोशेन्द्र
कोशेश
कोषेश
क्रान्तीश
क्षत्रेश
क्षपेश
क्षमाङ्क
क्षमेन्द्र
क्षमेश
क्षितीन्द्र
क्षितीश
क्षेमाङ्क
क्षेमेन्द्र
क्षेमेश
क्षोणीन्द्र
क्षोणीश
ककुभेश
कनकेन्दु
कनकेश
कपिलेन्द्र
कपिलेश
कमलेश
करणेश
करुणेश
कर्मकेतु
कर्मवर
कर्मवीर
कर्मव्रत
कर्मशील
कर्मेश्वर
कलाकान्त
कलाञ्जलि
कलातीर्थ
कलानन
कलानाथ
कलापाणि
कलापेन्द्र
कलापेश
कलामणि
कलामिश्र
कलामौलि
कलारत्न
कलारश्मि
कलावीर
कलाशील
कलिताभ
कलितेन्द्र
कलितेश
कल्पनाथ
कल्पबन्धु
कल्परत्न
कल्परश्मि
कल्परात
कल्पवीर
कल्पशील
कल्पसिन्धु
कल्पसूरि
कल्पेश्वर
कविकान्त
कविकेतु
कविक्रतु
कविबन्धु
कविभद्र
कविमणि
कविमित्र
कविमिश्र
कविरत्न
कविराज
कविरात
कविवर
कविवीर
कविव्रत
कविशील
कवीश्वर
कशेश्वर

काञ्चनेश
कान्तिशील
कान्तीश्वर
किरणेश
कीर्तिरात
कीर्तिशील
कुलदीप
कुलभद्र
कुलभूप
कुलमणि
कुलरत्न
कुलरश्मि
कुलवर
कुलवीर
कुलशील
कुलानन
कुलायन
कुलेश्वर
कुसुमेन्दु
कुसुमेन्द्र
कुसुमाश
कृतपाणि
कृपाबन्धु
कृपाशील
कृशनेन्द्र
कृशनेश
कृष्णकान्त
कृष्णचन्द्र
कृष्णदत्त
कृष्णदेव
कृष्णपाल
केतुकान्त
केतुपाणि

केतुमणि
केतुवर
केतुवीर
केतुशील
कोटिपाल
कोटिभद्र
कोटिमणि
कोटिमित्र
कोटिमिश्र
कोटिवीर
कोटिशील
कोटीश्वर
कोशेश्वर
कोषपाणि
ऋतुकान्त
ऋतुनाथ
ऋतुपाणि
ऋतुभद्र
ऋतुमणि
ऋतुमित्र
ऋतुमिश्र
ऋतुरत्न
ऋतुवीर
ऋतुशील
ऋतुशूर
क्षितीश्वर
क्षेमङ्कर
क्षेमदर्शी
क्षेममिश्र
क्षेममूर्ति
क्षेममौलि
क्षेमवाह
क्षेमशर्मा

क्षेमशील
क्षेमानन
क्षोणीश्वर
ककुम्मोहन
कनकध्वज
कनकमौलि
कनकशील
कपिलदेव
कमलकान्त
कमलाकर
करणेश्वर
करुणानन्द
करुणानिधि
करुणाशील
करुणेश्वर
कलाचरण
कलानन्दन
कलापेश्वर
कलामोहन
कलारञ्जन
कलाविलास
कलाशरण
कलासाधन
कलितेश्वर
कल्पनन्दन
कल्पसाधन
कल्याणदत्त
कल्याणदेव
कविनन्दन
कविभूषण
कविमिहिर
कविमोहन
कविरञ्जन

कविवन्दन
कविविलास
कविशरण
कविसाधन
कान्तिमोहन
कुलभूपण
कुलवन्दन
कुलशरण
कुलशेखर
कुसुमाकर
कृष्णनन्दन
कृष्णमोहन
कृष्णविलास
कृष्णस्वरूप
कोटिकरण
कोटिनन्दन
कोटिभूषण
कोटिमोहन
कोटिवन्दन
कोटिशरण
कोटिसाधन
ऋतुनन्दन
ऋतुमोहन
ऋतुरञ्जन
ऋतुवन्दन
ऋतुविलास
ऋतुशरण
ऋतुशेखर
ऋतुसहाय
ऋतुसाधन
ऋान्तिप्रकाश
क्षितिशरण
क्षेमकरण

क्षेमचरण
क्षेमनन्दन
क्षेममोहन
क्षेमशरण
क्षेमशेखर
क्षेमसाधन
कनकनन्दन
कनकमोहन
कनकशेखर
कमलनयन
कमलमोहन
कमलविलास
करुणाकरण
करुणानन्दन
करुणाशङ्कर
करुणाशरण
करुणास्वरूप

ख

खेन्द्र
खेश
खनीन्द्र
खनीश
खपति
खमणि
खर्वेश
खेदीन्द्र
खेदीश
खनन्दन
खनीश्वर
खमोहन
खविलास
खर्वेश्वर
खेदीश्वर
खनिरञ्जन

ग

गृत्स
ग्मेन्द्र
ग्मेश
गणाङ्क
गणीन्द्र
गणीश
गणेन्द्र
गणेश
गतीश
गदेश
गन्धर्व
गयेन्द्र
गयेश
गल्देन्द्र
गल्देश
गवीश
गवेन्द्र
गातूह
गालव
गिरीन्द्र
गिरीश
गीतेन्द्र
गीतेश
गुडेश
गुणाङ्क
गुणाङ्ग
गुणाढ्य
गुणाभ
गुणीन्द्र
गुणीश
गुणेन्द्र
गुणेश
गृत्सेन्द्र
गृत्सेश
गोपेन्द्र
गोपेश
गोलेन्द्र
गोलेश
गोविन्द
गौरव
गौरीन्दु
गौरीन्द्र
गौरीश
ग्रावेन्द्र
ग्रावेश
गगनेन्दु
गगनेश
गणपति
गणपाल
गणभद्र
गणमणि
गणमिश्र
गणवर
गणवीर
गणशील
गणशूर
गणाधिप
गणीश्वर
गणेश्वर
गतीश्वर
गदाधर
गदापाणि
गदायुध
गभस्तीन्द्र
गभस्तीश
गभीरेश
गम्भीरेश
गयेश्वर
गातुकान्त
गातुपति
गाथाधिप
गाथाधीश
गाथेश्वर
गान्धर्वीश
गिरिरत्न
गिरीश्वर
गीतमित्र
गीतरत्न
गीतशील
गीतानन
गीतायन
गीतेश्वर
गुडाकेश
गुणकान्त
गुणचन्द्र
गुणमणि
गुणरत्न
गुणरश्मि
गुणराशि
गुणवर
गुणव्रत
गुणशील
गुणागार
गुणातीत
गुणाधीश

गुणानन
गुणानन्द
गुणायन
गुणेश्वर
गुरुदत्त
गुरुदेव
गुरुभद्र
गृत्समद
गोत्रेश्वर
गोपबन्धु
गोपमणि
गोपायन
गोपेश्वर
गोलेश्वर
गौरीकान्त
गौरीभद्र
गौरीमित्र
गौरीमिश्र
गौरीरत्न
गौरीशील
गौरीश्वर
गौरेश्वर
ग्रावपति
गगनमणि
गगनमौलि
गणनायक
गणमिहिर
गणमोहन
गणवन्दन
गणसाधन
गिरिरञ्जन
गीतगोविन्द
गीतनन्दन
गीतमोहन
गीतरञ्जन
गीतवन्दन
गीतविलास
गुणशरण
गोपनन्दन
गोपशरण
गोपालचन्द्र
गोपालदत्त
गोपालदेव
गोपालमित्र
गोपालमिश्र
गौरीकरण
गौरीचरण
गौरीनन्दन
गौरीमोहन
गौरीरञ्जन
गौरीविलास
गौरीशङ्कर
गौरीशरण
गौरीस्वरूप
गगननन्दन
गगनमोहन
गगनवन्दन
गोपालनन्दन
गोपालरञ्जन

घ

घटेश
घनेश
घर्माङ्क
घर्मेन्दु
घर्मेन्द्र
घर्मेश
घृणीन्दु
घृणीश
घोषेन्द्र
घोषेश
घ्रंसेश
घटीश्वर
घटेश्वर
घनश्याम
घनानन
घनानन्द
घनायन
घर्मेश्वर
घोषेश्वर
घ्रंसमणि
घनमोहन
घनविलास
घनशेखर

च

चन्द्र
चारु
चित्र
चक्रेश
चन्द्राभ
चन्द्राश
चन्द्रेश
चाणक्य
चिचीषु
चित्तेश
चित्रेश
चिदंशु
चिदिन्दु
चिदिन्द्र
चिदीश
चिद्बन्धु
चिद्वर
चिन्मणि
चिन्मय
चिन्मित्र
चिन्मिश्र
चिन्मौलि
चिरांशु
च्यवन
चक्रधर
चक्रधर्मा
चक्रपाणि
चक्रपाल
चक्रवर्ती
चक्रशील
चक्रेश्वर
चन्द्रकान्त
चन्द्रकेतु
चन्द्रगुप्त
चन्द्रचारु
चन्द्रदेव
चन्द्रपाणि
चन्द्रपाल
चन्द्रप्रभ
चन्द्रमणि
चन्द्रमित्र
चन्द्रमिश्र
चन्द्रमौलि
चन्द्ररुचि
चन्द्रवेश
चन्द्रशील

चन्द्रहास
चन्द्रानन
चन्द्रापीड
चन्द्रेश्वर
चमसाभ
चमसेन्द्र
चमसेश
चमूपति
चारुकान्त
चारुचन्द्र
चारुतीर्थ
चारुदत्त
चारुदेव
चारुदेष्ण
चारुद्युम्न
चारुपाणि
चारुप्रभ
चारुबन्धु
चारुभद्र
चारुमणि
चारुमति
चारुमित्र
चारुमिश्र
चारुरत्न
चारुवर
चारुवीर
चारुवृत्त
चारुवेश
चारुव्रत
चारुशील
चारुश्रवा:
चारुहास
चिच्चरण

चिच्छरण
चिच्छेश्वर
चितव्रत
चित्करण
चित्तमणि
चित्प्रसन्न
चित्तेश्वर
चित्रक्षत्र
चित्रज्योति:
चित्रमणि
चित्ररथ
चित्रशील
चित्रहास
चित्रेश्वर
चित्साधन
चित्स्वरूप
चिदम्बर
चिदयन
चिदानन
चिदीश्वर
चिद्वदन
चिद्वन्दन
चिद्विलास
चिन्मयेन्द्र
चिन्मयेश
चिन्मिहिर
चिन्मोहन
चिरमित्र
चिरवीर
चिरश्रमी
चेकितान
चक्रनन्दन
चन्द्रकरण

चन्द्रकिशोर
चन्द्रकेतन
चन्द्रनन्दन
चन्द्रप्रकाश
चन्द्रभूषण
चन्द्रमोहन
चन्द्रवदन
चन्द्रवन्दन
चन्द्रविलास
चन्द्रशेखर
चन्द्रसाधन
चन्द्रस्वरूप
चारुकरण
चारुनन्दन
चारुमिहिर
चारुमोहन
चारुरञ्जन
चारुशरण
चारुसाधन
चारुस्वरूप
चितरञ्जन
चितविलास
चित्तरञ्जन
चित्तविलास
चित्ररञ्जन
चित्रविलास
चित्रसाधन

छ

छन्दांशु
छन्दाश
छन्देश
छन्दोग

छवीन्द्र
छवीश
छान्दस
छायेन्द्र
छायेश
छन्दस्कान्त
छन्दोमणि
छन्दोव्रत
छवीश्वर
छन्दोरञ्जन
छायामोहन

ज

जय
जिष्णु
जनाङ्क
जपीन्द्र
जपीश
जपेन्द्र
जपेश
जयन्त
जयाङ्क
जयीन्दु
जयीन्द्र
जयीश
जयेन्दु
जयेन्द्र
जयेश
जलाष
जिगीषु
जिज्ञासु
जितेन्द्र
जितेश

जिह्वेश	जयत्सेन	जीवनाथ	ज्योतीरत्न
जीवेश	जयदत्त	जीवराज	जगच्छरण
ज्ञानीन्दु	जयदीप	जीवेश्वर	जगदुत्सव
ज्ञानीन्द्र	जयदेव	ज्ञानकेतु	जगद्बन्धु
ज्ञानीश	जयपाणि	ज्ञानतीर्थ	जगद्वदन
ज्ञानेन्दु	जयपाल	ज्ञानदेव	जगद्वन्दन
ज्ञानेन्द्र	जयमणि	ज्ञाननिधि	जगन्नन्दन
ज्ञानेश	जयमित्र	ज्ञानबन्धु	जगन्मोहन
ज्योतिष्मान्	जयमिश्र	ज्ञानभद्र	जनमेजय
जगत्पाल	जयमौलि	ज्ञानमणि	जनमोहन
जगदिन्दु	जयरत्न	ज्ञानमित्र	जयनन्दन
जगदिन्द्र	जयरात	ज्ञानमिश्र	जयप्रकाश
जगदीश	जयरुचि	ज्ञानवर	जयभूषण
जगद्धर	जयवर	ज्ञानवीर	जयमोहन
जगद्बन्धु	जयवीर	ज्ञानव्रत	जयवदन
जगद्रत्न	जयव्रत	ज्ञानशील	जयवन्दन
जगद्वर	जयशील	ज्ञानश्रवा:	जयविलास
जगद्वीर	जयसिन्धु	ज्ञानसिन्धु	जयशरण
जगन्नाथ	जयसेन	ज्ञानानन	जयशेखर
जगन्मणि	जयादित्य	ज्ञानानन्द	जयसाधन
जगन्मित्र	जयानन	ज्ञानानीक	जातरूपेश
जगन्मिश्र	जयानन्द	ज्ञानायन	जितविश्वास
जनमणि	जयानीक	ज्ञानेश्वर	जीवरञ्जन
जनमित्र	जयायन	ज्येष्ठराज	ज्ञाननन्दन
जनरत्न	जयापीड	ज्योतिरिन्दु	ज्ञानप्रकाश
जनार्दन	जयीश्वर	ज्योतिरीश	ज्ञानशरण
जपशील	जयेश्वर	ज्योतिर्धर	ज्ञानसाधन
जपीश्वर	जातवेदा:	ज्योतिर्मणि	ज्योति:साधन
जपेश्वर	जितक्रतु	ज्योतिर्मय	ज्योति:स्वरूप
जमदग्नि	जितमिश्र	ज्योतिर्मित्र	ज्योतिर्नन्दन
जयकान्त	जितशील	ज्योतिर्मिश्र	ज्योतिर्मिहिर
जयकेतु	जितेश्वर	ज्योतिष्कान्त	ज्योतिश्चरण
जयतीर्थ	जिष्णुप्रिय	ज्योतिष्केतु	ज्योतीरञ्जन

जगदीशचन्द्र
जगन्नारायण
जयनारायण
जयन्तस्वरूप

त

तक्ष
तीर्थ
तोष
त्रित
तनाङ्क
तनेश
तपाङ्क
तपीन्दु
तपीन्द्र
तपीश
तपेन्दु
तपेन्द्र
तपेश
तपोभृत्
तरुण
तवेश
तापस
तितीर्ष
तिथीन्द्र
तिथीश
तीर्थेश
तुवीन्दु
तुवीन्द्र
तुवीश
तैजस
तोषेन्दु
तोषेन्द्र

तोषेश
त्रयीन्दु
त्रयीन्द्र
त्रयीश
त्रितेश
त्र्यम्बक
तनेश्वर
तपःशील
तपनेश
तपीश्वर
तपेश्वर
तपोनिधि
तपोमणि
तपोमय
तपोवीर
तपोव्रत
तवसेन्दु
तवसेन्द्र
तवसेश
तविषीश
तवेश्वर
तारानाथ
तारिकेश
तारिणीश
तारेश्वर
तिथिशील
तिथीश्वर
तीर्थमित्र
तीर्थरत्न
तीर्थराम
तीर्थवीर
तीर्थव्रत
तीर्थशील

तीर्थेश्वर
तुविव्रत
तुविद्युम्न
तुविशील
तुवीश्वर
तेजस्कान्त
तेजस्पति
तेजोमणि
तेजोमय
तेजोमित्र
तेजोमिश्र
तेजोराम
तेजोवीर
तेजोव्रत
तोषकान्त
तोषबन्धु
तोषमित्र
तोषरत्न
तोषशील
तोषेश्वर
त्रयीकान्त
त्रयीपाल
त्रयीबन्धु
त्रयीमणि
त्रयीरत्न
त्रयीवीर
त्रयीशील
त्रयीश्वर
त्रयीसिन्धु
त्रितवर
त्र्यम्बकेश
तपःसाधन
तपनेश्वर

तपोनन्दन
तपोरञ्जन
तपोवदन
तपोवन्दन
तपोविलास
तीर्थनन्दन
तीर्थरञ्जन
तीर्थवन्दन
तीर्थसाधन
तुषारकान्त
तेजःसाधन
तेजोनन्दन
तेजोरञ्जन
तेजोवदन
तेजोवन्दन
तोषरञ्जन
तोषसाधन
त्रयीरञ्जन
त्रयीवन्दन
त्रयीशरण
त्रयीशेखर
त्रयीसाधन
त्र्यम्बकेश्वर

द

दक्ष
दत्त
दम
दान्त
दिग्भृत्
दिव्य
दीक्ष
दीप

दीप्त	दानीश	दीक्षेन्द्र	देवेश
दृढ	दानेन्दु	दीक्षेश	देशाङ्क
दृति	दानेन्द्र	दीदिवान्	देशेन्दु
देव	दानेश	दीपक	देशेन्द्र
देष्णु	दान्तेश	दीपांशु	देशेश
दक्षेन्दु	दिक्पति	दीपाङ्क	द्युतिमान्
दक्षेन्द्र	दिगंशु	दीपाभ	द्युतीन्दु
दक्षेश	दिगङ्क	दीपाश	द्युतीन्द्र
दण्डेश	दिगर्य	दीपेन्द्र	द्युतीश
दत्रेन्दु	दिगार्य	दीपेश	द्युमणि
दत्रेन्द्र	दिगिन्दु	दीप्तांशु	द्युरत्न
दत्रेश	दिगिन्द्र	दीप्ताक्ष	द्रागीश
दधीच	दिगीश	दीप्ताभ	द्वारेन्द्र
दधीचि	दिग्वीर	दीप्ताश	द्वारेश
दमन	दिङ्नाग	दीप्तिमान्	दक्षकान्त
दमयन्त	दिङ्मणि	दीर्घेन्द्र	दक्षकेतु
दमीन्दु	दिधीश	दीर्घेश	दक्षवर
दमीन्द्र	दिनेन्दु	दुर्गेन्द्र	दक्षवीर
दमीश	दिनेन्द्र	दुर्गेश	दक्षव्रत
दमेन्दु	दिनेश	दुष्यन्त	दक्षशील
दमेन्द्र	दिलीप	दृढेश	दक्षानन
दमेश	दिवाभ	दृतीश	दक्षानन्द
दयाङ्क	दिवाश	देवक	दक्षायण
दयेश	दिवेन	देवभृत्	दक्षेश्वर
दयाङ्ग	दिवेश	देवभ्राट्	दण्डकेतु
दर्शेन्दु	दिव्यांशु	देवर्षि	दण्डधर
दर्शेन्द्र	दिव्यार्य	देवल	दण्डधार
दर्शेश	दिव्याङ्क	देवांशु	दण्डपाणि
दशाश्व	दिव्येन्दु	देवापि	दण्डबाहु
दशेन्द्र	दिव्येन्द्र	देवाप्त	दत्तात्रेय
दशेश	दिव्येश	देवाभ	दत्रेश्वर
दानीन्दु	दीक्षित	देवेन	दमनेश
दानीन्द्र	दीक्षेन्दु	देवेन्द्र	दमयन्त

दमशील
दमसिन्धु
दमानन
दमानन्द
दमायन
दयाकान्त
दयानन
दयानन्द
दयानाथ
दयानिधि
दयापाणि
दयामणि
दयामित्र
दयामिश्र
दयायन
दयावीर
दयाशील
दयासिन्धु
दर्शवीर
दर्शशील
दर्शानन्द
दशज्योति:
दशरथ
दशवीर
दशेश्वर
दानकान्त
दानकेतु
दानपाणि
दानभद्र
दानमिश्र
दानव्रत
दानशील
दानसिन्धु

दानीश्वर
दानेश्वर
दामचन्द्र
दामानन
दामेश्वर
दामोदर
दिगयन
दिगीश्वर
दिग्वन्दन
दिग्विलास
दिङ्नन्दन
दिनकर
दिनमणि
दिनमिश्र
दिवाकर
दिवाकान्त
दिवानन
दिवानन्द
दिवायन
दिवेश्वर
दिव्यदीप
दिव्यदूत
दिव्यधाम
दिव्यपाणि
दिव्यपाल
दिव्यबन्धु
दिव्यमणि
दिव्यमुनि
दिव्यरत्न
दिव्यरश्मि
दिव्यशील
दिव्याञ्जलि
दिव्यानन

दिव्यानन्द
दिव्येश्वर
दीक्षानन
दीक्षानन्द
दीक्षायण
दीक्षारत्न
दीक्षावीर
दीक्षाव्रत
दीक्षेश्वर
दीधितीन्द्र
दीधितीश
दीपकान्त
दीपक्रतु
दीपचन्द्र
दीप्तकेतु
दीप्तचन्द्र
दीर्घप्रज्ञ
दूरदर्शी
दृढधर्मा
दृढव्रत
दृढशील
दृतीश्वर
देवकान्त
देवकेतु
देवगुप्त
देवतीर्थ
देवदत्त
देवदूत
देवनाथ
देवनिधि
देवपाल
देवबन्धु
देवभद्र

देवमणि
देवमत
देवमित्र
देवमिश्र
देवयाजी
देवरत्न
देवरश्मि
देवराज
देवरात
देववर
देववर्मा
देववीर
देवव्रत
देवशर्मा
देवशील
देवश्रमी
देवश्रवा:
देवसिन्धु
देवसूरि
देवानन
देवानन्द
देवायन
देवेश्वर
देशकेतु
देशबन्धु
देशमणि
देशरत्न
देशराज
देशरात
देशवीर
देशव्रत
देशशील
द्युतिभद्र

द्युतिमित्र
द्युतिरत्न
द्युतिव्रत
द्युतिशील
द्युतीश्वर
द्युमत्सेन
द्योतनेश
दक्षचरण
दयाकरण
दयानन्दन
दयासागर
दयास्वरूप
दर्शनानन
दर्शनानन्द
दशशरण
दाननन्दन
दानमोहन
दानरञ्जन
दानवन्दन
दानशरण
दिवारञ्जन
दिव्यकरण
दिव्यचरण
दिव्यरञ्जन
दिव्यशरण
दीक्षाशरण
देवनन्दन
देवनयन
देवमिहिर
देवमोहन
देवरञ्जन
देवविलास
देवशरण
देवशेखर
देवसहाय
देवस्वरूप
देशनन्दन
द्युतिरञ्जन
द्युतिवदन
द्युतिवन्दन
देवनारायण

ध

धर्म
धीन
धीर
धीश
धृष्टि
धृष्णु
ध्रुव
धनाङ्क
धनीश
धनेन्दु
धनीन्दु
धनीन्द्र
धनेन्द्र
धनेश
धन्वेन्दु
धन्वेन्द्र
धन्वेश
धरुण
धरेन्दु
धरेन्द्र
धरेश
धर्माङ्क
धर्मीन्दु
धर्मीन्द्र
धर्मीश
धर्मेन्दु
धर्मेन्द्र
धर्मेयु
धर्मेश
धामेन्दु
धामेन्द्र
धामेश
धारेन्दु
धारेन्द्र
धारेश
धीरेन्दु
धीरेन्द्र
धीरेश
धीश्वर
धुरेन्द्र
धृतीन्दु
धृतीन्द्र
धृतीश
धौरेय
ध्रुवेन्दु
ध्रुवेन्द्र
ध्रुवेश
धनञ्जय
धननिधि
धनपति
धनपाल
धनवीर
धनेश्वर
धन्वन्तरि
धमनीन्द्र
धमनीश
धरामणिः
धरामित्र
धरामिश्र
धरारत्न
धरुणेन्द्र
धरुणेश
धरेश्वर
धर्मकान्त
धर्मकेतु
धर्मतीर्थ
धर्मदत्त
धर्मदेव
धर्मनिधि
धर्मनेत्र
धर्मपाणि
धर्मपाल
धर्मप्रिय
धर्मबन्धु
धर्मभद्र
धर्ममणि
धर्ममित्र
धर्ममिश्र
धर्ममेघ
धर्ममेध
धर्ममौलि
धर्मरत्न
धर्मरश्मि
धर्मराज
धर्मवन्द्य
धर्मवीर
धर्मव्रत
धर्मशील
धर्मशूर

धर्मश्रमी
धर्मश्रवाः
धर्मसिन्धु
धर्मसूरि
धर्माानन
धर्मानन्द
धर्मायण
धर्मोश्वर
धर्मेश्वर
धामेश्वर
धाराधिप
धारापति
धारामित्र
धारारत्न
धाराव्रत
धारेश्वर
धिषणेन्द्र
धिषणेश
धीरपाल
धीरबन्धु
धीरभद्र
धीरमणि
धीरमित्र
धीरमिश्र
धीररत्न
धीरव्रत
धीरानन
धीरानन्द
धीरायण
धीरेश्वर
धुरन्धर
धृतव्रत
धृतशील

धृतिव्रत
धृतिशील
धृष्टकेतु
धृष्टद्युम्न
ध्रुवकान्त
ध्रुवकेतु
ध्रुवपति
ध्रुवपाल
ध्रुवबन्धु
ध्रुवमित्र
ध्रुवरत्न
ध्रुवव्रत
ध्रुवशील
ध्रुवसन्धि
ध्रुवानन
ध्रुवानन्द
धनवन्दन
धर्मनन्दन
धर्मभूषण
धर्ममिहिर
धर्ममोहन
धर्मरञ्जन
धर्मवदन
धर्मवन्दन
धर्मविलास
धर्मशेखर
धर्मसहाय
धर्मसागर
धर्मसाधन
धर्मस्वरूप
धीरकरण
धीरभूषण
धीरवन्दन

ध्रुवकरण
ध्रुवनन्दन
ध्रुवरञ्जन
ध्रुववदन
ध्रुववन्दन
ध्रुवसाधन

न

नल
निजित्
निवित्
नृग
नृजित्
न्यूह
नीश
नकुल
नक्तेन्द्र
नक्तेश
ननेन
ननेन्दु
ननेन्द्र
ननेश
नम्येन्दु
नम्येन्द्र
नम्येश
नयाङ्क
नयाङ्ग
नयेन
नयेन्दु
नयेन्द्र
नयेश
नरेन्दु
नरेन्द्र

नरेश
नवाङ्क
नवीन
नवेन्दु
नवेन्द्र
नवेश
नहुष
नाडीन्द्र
नाडीश
नाभाग
नारद
नासत्य
नितोष
निद्योत
निधीन्दु
निधीन्द्र
निधीश
निनीषु
निपुण
निमन्त्र
निमन्यु
निमेय
नियम
नियाम
निर्णय
निर्मल
निर्मेश
निवर
निवीर
निशेन्द्र
निशेश
निष्पङ्क
नीतीन

नीतीन्दु
नीतीन्द्र
नीतीश
नीतेन
नीतेन्दु
नीतेन्द्र
नीतेश
नीथेन
नीथेश
नीराभ
नूतन
नृकान्त
नृजिष्णु
नृमणि
नृमौलि
नृरत्न
नृवर
नृवीर
नृहार
नृहीर
नक्तेश्वर
नचिकेता:
नयनेन
नयनेन्दु
नयनेन्द्र
नयनेश
नरदेव
नरपति
नरमणि
नररत्न
नरवीर
नरहरि
नरिष्यन्त
नरेश्वर
नरोत्तम
नवकान्त
नवतीर्थ
नवनाथ
नवनिधि
नवनीत
नवनीथ
नवपति
नवपाल
नवप्रिय
नवबन्धु
नवभद्र
नवमणि
नवमान
नवमित्र
नवमिश्र
नवमौलि
नवरत्न
नवरुचि
नववन्द्य
नवव्रत
नवशील
नवसिन्धु
नवानन
नवानन्द
नवायन
नवीनेन
नवीनेन्दु
नवीनेन्द्र
नवीनेश
नवेश्वर
नाकेश्वर
नागदेव
नाडीश्वर
नारायण
निगमेन
निगमेन्दु
निगमेन्द्र
निगमेश
निधिकान्त
निधिव्रत
निधिशील
निधीश्वर
निपुणेश
नियमेन
नियमेन्दु
नियमेन्द्र
नियमेश
निरञ्जन
निरमित्र
निरविन्द
निरामय
निरुपम
निरूपण
निर्मलेन्दु
निर्मलेश
निर्विकार
निर्विदाश
निर्विदीश
निर्विनय
निशाकान्त
निशामणि
नीतिकान्त
नीतिमणि
नीतिमिश्र
नीतिवीर
नीतिव्रत
नीतिशील
नीतिसिन्धु
नीतीश्वर
नीतेश्वर
नीरजेश
नूतनाभ
नूतनेन्दु
नूतनेश
नृनन्दन
नृमोहन
नृशेखर
नयनरत्न
नरनन्दन
नवकरण
नवनन्दन
नवनिगम
नवमिहिर
नवमोहन
नवरञ्जन
नववदन
नववन्दन
नवशरण
नवशेखर
नवसहाय
नवीनचन्द्र
निगमनिधि
निगमपाल
निगममणि
निगममित्र
निगममिश्र
निगममौलि

निगमरत्न
निगमवीर
निगमव्रत
निगमशील
निगमसिन्धु
निगमसूरि
निगमानन
निगमानन्द
निगमायन
निगमेश्वर
निधिकरण
निधिचरण
निधिनन्दन
निधिवदन
निधिशरण
निधिशेखर
नियमकान्त
नियमव्रत
नियमशील
नियमसिन्धु
नीतिकरण
नीतिचरण
नीतिरञ्जन
नीतिशरण
नीतिसाधन
नीतिस्वरूप
नयननन्दन
नयनमिहिर
नयनरञ्जन
नयनवन्दन
निगमनन्दन
निगममोहन
निगमवदन

निगमवन्दन
निगमशरण
निगमशेखर
निगमसाधन
निगमस्वरूप
नियमनन्दन
नियमवदन
नियमवन्दन
निरञ्जनदेव

प

पूषा
पृथु
प्रचित्
प्रजित्
प्रभ
प्रार्य
प्रार्ष
प्रिय
प्रेन्द्र
प्रेश
प्रोह
पणिन
पद्माङ्क
पद्मेश
परिजित्
परीक्ष
परीक्षित्
परेक्ष
पवीन
पवीन्द्र
पवीश
पाणिनि

पिङ्गल
पीयूष
पुण्येन्दु
पुण्येन्द्र
पुण्येश
पुरूह
पुलस्त्य
पुलह
पोषेन्द्र
प्रकाश
प्रचेता:
प्रणेन्दु
प्रणेन्द्र
प्रणेश
प्रताप
प्रतीत
प्रतोष
प्रत्नेन्द्र
प्रत्नेश
प्रथम
प्रद्युम्न
प्रद्योत
प्रधान
प्रफुल्ल
प्रबन्धु
प्रभव
प्रभान
प्रभान्त
प्रभाम
प्रभाष
प्रभास
प्रमति
प्रमोद

प्रवीर
प्रणाम
प्रगल्भ
प्रगाढ
प्रगार
प्रसीम
प्रसेन
प्रस्कण्व
प्रहास
प्रह्लाद
प्राचीन
प्राचीन्दु
प्राचीन्द्र
प्राचीश
प्राञ्जल
प्राञ्जलि
प्राणेन्द्र
प्राणेश
प्रियाङ्क
प्रियेन्दु
प्रियेन्द्र
प्रियेश
प्रीतीन्दु
प्रीतीन्द्र
प्रीतीश
प्रीतेन्द्र
प्रीतेश
प्रेमेन्दु
प्रेमेन्द्र
प्रेमेश
पतञ्जलि
पद्मकान्त
पद्मधर

पद्मनाथ
पद्मनाभ
पद्मनिधि
पद्मपाणि
पद्मबन्धु
पद्ममौलि
पद्मानन
पद्मानन्द
पद्मेश्वर
पयस्कान्त
परमेष्ठी
परायण
परावसु
पराशर
परितोष
परिमन्त्र
परिमल
परिश्रुत
पवनेश
पवमान
पवीश्वर
पाकव्रत
पारायण
पावनेश
पुण्डरीक
पुण्यकान्त
पुण्यकेतु
पुण्यबन्धु
पुण्यमित्र
पुण्यश्लोक
पुण्यानन
पुण्यायन
पुरन्दर

पुरुकान्त
पुरुधाम
पुरूप्रिय
पुरुमित्र
पुरुरूप
पुरुवीर
पुरुव्रत
पुरुश्रवा:
पुष्करेन्द्र
पुष्करेश
पूजेश्वर
पूषानन्द
पूषायण
पेशस्कान्त
प्रणतीर्थ
प्रणनाथ
प्रणभद्र
प्रणमित्र
प्रणमिश्र
प्रणवीर
प्रणवेन्दु
प्रणवेन्द्र
प्रणवेश
प्रणशूर
प्रणसिन्धु
प्रणेश्वर
प्रतिरूप
प्रतिवीर
प्रथमेन्दु
प्रथमेन्द्र
प्रथमेश
प्रभाकर
प्रभाकान्त

प्रभाकेतु
प्रभातीर्थ
प्रभानन
प्रभानन्द
प्रभानिधि
प्रभापाणि
प्रभाबन्धु
प्रभामणि
प्रभामित्र
प्रभामिश्र
प्रभामौलि
प्रभारत्न
प्रभावसु
प्रभाशील
प्रभासिन्धु
प्रभुदत्त
प्रभुरात
प्रभुव्रत
प्रभुशील
प्रभूवसु
प्रमानन
प्रमानन्द
प्रमायण
प्रमोदेन्दु
प्रमोदेन्द्र
प्रमोदेश
प्रविनय
प्रवीणेन्दु
प्रवीणेन्द्र
प्रवीणेश
प्रसन्नेन्दु
प्रसीमेन्द्र
प्रसेनजित्

प्राग्वन्दन
प्राङ्नन्दन
प्राचीश्वर
प्राणनाथ
प्राणनिधि
प्राणानन्द
प्राणायन
प्राणेश्वर
प्रियकान्त
प्रियतीर्थ
प्रियदत्त
प्रियदेव
प्रियपाल
प्रियबन्धु
प्रियभद्र
प्रियमित्र
प्रियरत्न
प्रियवर
प्रियव्रत
प्रियश्रवा:
प्रियसूरि
प्रीतिकान्त
प्रीतिमुख
प्रीतीश्वर
प्रेमकान्त
प्रेमचन्द्र
प्रेमपाल
प्रेममित्र
प्रेमव्रत
प्रेमशील
प्रेमसिन्धु
प्रेमहार
प्रेमहीर

प्रेमानन
प्रेमानन्द
प्रेमायण
प्रेमेश्वर
पद्मकरण
पद्मचरण
पद्मनन्दन
पद्मभूषण
पद्ममोहन
पद्मवदन
पद्मविलास
पद्मशरण
पद्मशेखर
परशुराम
परिविनय
पवित्रपाणि
पाकशासन
पीयूषपाणि
पीयूषमणि
पुण्डरीकाक्ष
पुण्यकरण
पुण्यचरण
पुण्यवदन
पुण्यवन्दन
पुण्यशरण
पुरुवन्दन
पुरुषोत्तम
पूजाशङ्कर
प्रकाशचन्द्र
प्रकाशवीर
प्रणवमित्र
प्रणवमौलि
प्रणसहाय

प्रतापचन्द्र
प्रफुल्लचन्द्र
प्रभाकरण
प्रभाचरण
प्रभानन्दन
प्रभामोहन
प्रभारञ्जन
प्रभावदन
प्रभावन्दन
प्रभाशङ्कर
प्रभाशरण
प्रभाशेखर
प्रभुनन्दन
प्रभुशरण
प्रवीणचन्द्र
प्राणवन्दन
प्रियपूजन
प्रियप्रयाग
प्रियभूषण
प्रियमोहन
प्रियरञ्जन
प्रियवदन
प्रियवन्दन
प्रियशरण
प्रियशेखर
प्रीतिनन्दन
प्रीतिवन्दन
प्रेमशङ्कर
प्रेमशेखर
पीयूषरञ्जन
पीयूषवदन
प्रणवमोहन
प्रणवरञ्जन

प्रणववदन
प्रणववन्दन
प्रतापनन्दन
प्रियनारायण
प्रतापनारायण

फ

फलिगेन्दु
फलिगेन्द्र
फलिगेश
फलिगाधिप

ब

बुध
बोध
ब्रध्न
ब्रह्मा
बलभृत्
बलाङ्क
बलाङ्ग
बलीन्द्र
बलीश
बलेन्द्र
बलेश
बुधेन्दु
बुधेन्द्र
बुधेश
बोधेन्दु
बोधेन्द्र
बोधेश
ब्रध्नेश
ब्रह्मर्षि
ब्रह्मेन्दु

ब्रह्मेन्द्र
ब्रह्माण
बलदेव
बलबन्धु
बलमित्र
बलराज
बलवीर
बलसिन्धु
बलानन
बलानन्द
बलायन
बलीश्वर
बलेश्वर
बुधपति
बुधप्रिय
बुधमणि
बुधमित्र
बुधमिश्र
बुधमौलि
बुधवीर
बुधानन्द
बुधायन
बुधेश्वर
बृहज्ज्योतिः
बृहद्भानु
बृहद्रथ
बृहद्वर
बृहद्वीर
बृहस्पति
बोधप्रिय
बोधबन्धु
बोधमणि
बोधरत्न

बोधव्रत
बोधशील
बोधसिन्धु
बोधानन
बोधानन्द
बोधायन
बोधेश्वर
ब्रध्नसूरि
ब्रह्मदत्त
ब्रह्मदेव
ब्रह्मपाल
ब्रह्मबन्धु
ब्रह्ममित्र
ब्रह्ममिश्र
ब्रह्ममुनि
ब्रह्ममौलि
ब्रह्मश्रवाः
ब्रह्मसूरि
ब्रह्मानन
ब्रह्मानन्द
ब्रह्मायण
बलविलास
बलसाधन
बुधकरण
बुधमोहन
बुधरञ्जन
बुधवन्दन
बोधशेखर
ब्रह्मनन्दन
ब्रह्मप्रकाश
ब्रह्मप्रसाद
ब्रह्ममिहिर
ब्रह्ममोहन
ब्रह्मरञ्जन
ब्रह्मवदन
ब्रह्मवन्दन
ब्रह्मविलास
ब्रह्मशरण
ब्रह्मशेखर
ब्रह्मसाधन
बोधनारायण
ब्रह्मनारायण

भ

भद्र
भव
भांशु
भानु
भाव
भाश
भाष
भास
भास्वान्
भीम
भीष्म
भूप
भूभृत्
भूष
भेन
भेन्दु
भेन्द्र
भेश
भोज
भक्तीन्दु
भक्तेन्दु
भक्तेन्द्र
भक्तेश
भगवान्
भगेन्दु
भगेन्द्र
भगेश
भद्राङ्क
भद्राङ्ग
भद्रेन्दु
भद्रेश
भरत
भर्मेन्दु
भर्मेन्द्र
भर्मेश
भवेन
भवेन्दु
भवेन्द्र
भवेश
भव्येन्दु
भव्येन्द्र
भव्येश
भानेन्दु
भानेन्द्र
भानेश
भामह
भामेन्दु
भामेन्द्र
भामेश
भारत
भारथ
भारथी
भारवि
भावेन
भावेन्दु
भावेन्द्र
भावेश
भापेन्दु
भापेन्द्र
भापेश
भासाङ्क
भासेन्दु
भासेन्द्र
भासेश
भास्कर
भास्वर
भीमेन्द्र
भीमेश
भीष्मेन्द्र
भूतिभृत्
भूतीन
भूतीन्दु
भूतीन्द्र
भूतीश
भूदेव
भूपति
भूपेन
भूपेन्द्र
भूपेश
भूभद्र
भूभूति
भूमणि
भूमित्र
भूमीन
भूमीन्दु
भूमीन्द्र
भूमीश
भूरत्न

भूरीन्द्र
भूरीश
भूवीर
भेश्वर
भक्तचन्द्र
भक्तबन्धु
भक्तरत्न
भक्तसिन्धु
भक्तीश्वर
भक्तेश्वर
भगदत्त
भगीरथ
भगेश्वर
भद्रकान्त
भद्रगीत
भद्रदत्त
भद्रदेव
भद्रभूति
भद्रमणि
भद्रमित्र
भद्रमिश्र
भद्ररत्न
भद्रव्रत
भद्रशील
भद्रसिन्धु
भद्रसेन
भद्रानन
भद्रायण
भद्रेश्वर
भरद्वाज
भर्तृहरि
भर्मेश्वर
भवकान्त

भवकेतु
भवतीर्थ
भवनाथ
भवनिधि
भवपाल
भवबन्धु
भवभद्र
भवभूति
भवमणि
भवमित्र
भवमिश्र
भवमौलि
भववन्द्य
भववीर
भवशूर
भवसूरि
भवायन
भवेश्वर
भवोदय
भव्यमित्र
भव्यमिश्र
भव्यशील
भव्यसिन्धु
भव्येश्वर
भाकरण
भाचरण
भानन्दन
भावदन
भाशरण
भानुदत्त
भानुदेव
भानुमित्र
भानुरत्न

भानुव्रत
भानुशील
भामेश्वर
भारतेन
भारतेन्दु
भारतेन्द्र
भारतेश
भारथीन्द्र
भारतीश
भारथेन्दु
भारथेन्द्र
भारथेश
भावचन्द्र
भावभद्र
भावभूति
भावरत्न
भावव्रत
भावशील
भावसिन्धु
भावसूरि
भावानन्द
भाविभूति
भासचन्द्र
भासमित्र
भासरत्न
भासव्रत
भाससिन्धु
भासेश्वर
भास्करेन्द्र
भास्करेश
भास्वतीन्द्र
भास्वतीश
भीमकान्त

भीमबल
भीमवीर
भीमव्रत
भीमसेन
भीष्मदेव
भीष्मवीर
भीष्मव्रत
भुवनेन
भुवनेन्दु
भुवनेन्द्र
भुवनेश
भुवस्पति
भूतिचन्द्र
भूतिमित्र
भूतिमिश्र
भूतिशील
भूतिसिन्धु
भूतीश्वर
भूमिपति
भूमिपाल
भूमिमणि
भूमीश्वर
भूरिद्युम्न
भूरिशील
भूरिश्रवाः
भूरीश्वर
भूविभूति
भक्तनन्दन
भक्तमिहिर
भक्तमोहन
भक्तरञ्जन
भक्तवन्दन
भक्तशरण

भक्तशेखर
भक्तस्वरूप
भगवच्चन्द्र
भगवदीश
भगवद्दत्त
भद्रमोहन
भद्रविलास
भर्गउत्सव
भवकरण
भवनन्दन
भवभूषण
भवमोहन
भवरञ्जन
भववन्दन
भवविलास
भवशरण
भवशेखर
भवसहाय
भव्यकरण
भव्यमोहन
भव्यरञ्जन
भव्यवदन
भव्यवन्दन
भव्यसाधन
भानुकरण
भानुमोहन
भानुरञ्जन
भानुवदन
भानुवन्दन
भानुविलास
भानुशङ्कर
भानुशेखर
भानुस्वरूप

भारतमित्र
भारतरत्न
भावकरण
भावचरण
भावनन्दन
भावमोहन
भावरञ्जन
भाववदन
भाववन्दन
भावशरण
भावसाधन
भासकरण
भुवनकान्त
भुवनकेतु
भुवनबन्धु
भुवनभद्र
भुवनमणि
भुवनमित्र
भुवनमिश्र
भुवनमौलि
भुवनरत्न
भुवनवीर
भुवनेश्वर
भूतिचरण
भूतिरञ्जन
भूतिवन्दन
भूतिस्वरूप
भूमिरञ्जन
भूरिशरण
भूरिसाधन
भगवच्छेखर
भगवत्सहाय
भारतभषण

भारतरञ्जन
भुवनचरण
भुवनभूषण
भुवनमोहन
भुवनरञ्जन
भुवनवन्दन
भुवनविलास
भुवनशरण
भुवनशेखर
भुवनसहाय
भुवनसाधन
भुवनस्वरूप
भूतिनारायण

म

मख
मङ्कि
मधु
मनु
मन्द्र
महान्
मान
मेन
मेन्द्र
मेश
म्नेन्द्र
म्नेश
मखाभ
मखाश
मखेन्द्र
मखेश
मखेह
मघवा

मघेन्द्र
मघेश
मणीन्दु
मणीन्द्र
मणीश
मतीन्दु
मतीन्द्र
मतीश
मदेन्दु
मधुप
मधूह
मनस्वी
मनीश
मनीष
मनीषी
मन्धाता
मन्द्रेन्द्र
मन्द्रेश
मयङ्क
मयाभ
मयूख
मयेश
मयोभू
मरीचि
मरुत्त
महर्षि
महांश
महाङ्क
महांशु
महीन
महीन्दु
महीन्द्र
महीप

महीश
महेन
महेन्दु
महेन्द्र
महेश
महौकाः
महौजाः
माधव
मानाङ्क
मानेन
मानेन्दु
मानेन्द्र
मानेश
मानेह
मान्धाता
मायन
मार्तण्ड
मितीन
मितीन्दु
मितीन्द्र
मितीश
मित्रेन्दु
मित्रेन्द्र
मित्रेश
मिलिन्द
मिहिर
मुकुन्द
मुकुल
मुद्गल
मुनीन
मुनीन्दु
मुनीन्द्र
मुनीश

मुमुक्षु
मुमुचु
मूलेन
मूलेन्द्र
मूलेश
मेघेन्द्र
मेघेश
मेडीन
मेडीन्द्र
मेडीश
मेडीह
मेधावी
मेधेन
मेधेन्द्र
मेधेश
मेधेह
मेनाश
मेनेन
मेनेन्द्र
मेनेश
मेनेह
मोदांशु
मोदाश
मोदाङ्क
मोदेन्दु
मोदेन्द्र
मोदेश
मोहन
मौलीन्दु
मकरन्द
मखपाणि
मखप्रिय
मखवीर

मखानन्द
मखायन
मखेश्वर
मघवांशु
मघानन
मघायन
मघेश्वर
मङ्गलेन्दु
मङ्गलेन्द्र
मङ्गलेश
मङ्गलौकाः
मणिकान्त
मणिभद्र
मणीश्वर
मण्डनेन्द्र
मण्डनेश
मतिकान्त
मतिक्रतु
मतिभद्र
मतिमित्र
मतिमिश्र
मतिशील
मतिश्रवाः
मतीश्वर
मदयन्त
मधुकान्त
मधुपाल
मधुप्रिय
मधुबन्धु
मधुभद्र
मधुमणि
मधुमिश्र
मधुमौलि

मधुव्रत
मधुसिन्धु
मधुहीर
मनस्कान्त
मननेन्द्र
मननेश
मनीषेन्दु
मनीषेन्द्र
मनीषेश
मनुचन्द्र
मनुव्रत
मनुशील
मनोजजित्
मनोजेश
मनोमणि
मनोहर
मन्द्रेश्वर
मन्युकान्त
मयःशील
मयस्कर
मयस्कान्त
मयूखेश
मयोभव
मयोमिश्र
मरीचिपाः
मरीचीश
मरुदिन्दु
मरुदिन्द्र
मरुदीश
मरुद्देव
महऋषि
महाजय
महादेव

महाधिप
महानन
महानन्द
महापति
महापाल
महाप्राण
महाबल
महामति
महामनाः
महामित्र
महामिश्र
महायन
महावन्द्य
महाव्रत
महाशील
महीकान्त
महीधर
महीपति
महीपाल
महीभद्र
महीमणि
महीरत्न
महीमित्र
महीमिश्र
महीवीर
महीशील
महीशूर
महीश्वर
महेश्वर
मातरिश्वा
माधवेन्द्र
माधवेश
मानचन्द्र

मानभद्र
मानमणि
मानमिश्र
मानमौलि
मानरत्न
मानवीर
मानशील
मानशूर
मानसिन्धु
मानानन
मानायन
मायुपति
मार्कंण्डेय
माहिनेन्द्र
माहिनेश
मित्रकान्त
मित्रमणि
मित्ररत्न
मित्रशील
मित्रेश्वर
मिहिरेन्दु
मिहिरेन्द्र
मिहिरेश
मीमांसक
मुचुकन्द
मुनिकान्त
मुनिचन्द्र
मुनितीर्थ
मुनिदत्त
मुनिदेव
मुनिपति
मुनिपाल
मुनिभद्र

मुनिमणि
मुनिमिश्र
मुनिमौलि
मुनिरत्न
मुनिराज
मुनिरात
मुनिव्रत
मुनिशील
मुनिश्रवाः
मुनिहीर
मुनीश्वर
मूलव्रत
मेघेश्वर
मेडिकल
मेडिकान्त
मेडिव्रत
मेडिशील
मेडिसिन्धु
मेडीश्वर
मेघाकान्त
मेघातिथि
मेघातीर्थ
मेघानन
मेघानन्द
मेघानिधि
मेघापाल
मेघाप्रिय
मेघामणि
मेघामित्र
मेघामिश्र
मेघारत्न
मेघाव्रत
मेधेश्वर

मेनाकान्त
मेनाचन्द्र
मेनातीर्थ
मेनानन
मेनानन्द
मेनायन
मेनारत्न
मेनाव्रत
मेनाशील
मेनासिन्धु
मेनेश्वर
मोदकान्त
मोदचन्द्र
मोदतीर्थ
मोदप्रिय
मोदबन्धु
मोदमणि
मोदमिश्र
मोदमौलि
मोदरत्न
मोदवन्द्य
मोदव्रत
मोदशील
मोदसिन्धु
मोदानन
मोदानन्द
मोदायन
मोदेश्वर
मौलिकान्त
मौलिचन्द्र
मौलिरत्न
मौलिमणि
मखस्वरूप

मघवन्दन
मङ्गलदत्त
मङ्गलदेव
मङ्गलमित्र
मङ्गलमिश्र
मङ्गलमौलि
मङ्गलानन
मङ्गलानन्द
मङ्गलायन
मङ्गलेश्वर
मण्डनमिश्र
मतिभूषण
मतिमिहिर
मतिमोहन
मतिरञ्जन
मतिवन्दन
मतिविलास
मतिशरण
मतिशेखर
मधुनन्दन
मधुमिहिर
मधुमोहन
मधुरञ्जन
मधुवचन
मधुवदन
मधुवन्दन
मधुशरण
मधुशेखर
मधुसूदन
मनीषीश्वर
मनोजेश्वर
मनोमोहन
मनोरञ्जन

मरीचीश्वर
महावन्दन
महाशरण
महाशेखर
महीभूषण
महीमिहिर
महीमोहन
महीरञ्जन
महीवन्दन
महीविलास
महीशेखर
मानकरण
माननन्दन
मानभूषण
मानमिहिर
मानमोहन
मानरञ्जन
मानवदन
मानवन्दन
मानविलास
मानशरण
मानशेखर
मानसाधन
मानस्वरूप
मायुनन्दन
मायुभूषण
मायुमोहन
मायुरञ्जन
मायुवन्दन
मायुविलास
मायुशेखर
मित्रकरण
मित्रभूषण

मित्रमिहिर
मित्रमोहन
मित्ररञ्जन
मित्रविलास
मित्रशरण
मिहिरबन्धु
मिहिरमित्र
मुनिनन्दन
मुनिप्रसाद
मुनिभूषण
मुनिमिहिर
मुनिमोहन
मुनिवन्दन
मुनिविलास
मुनिशरण
मुनिशेखर
मुनिस्वरूप
मूलशङ्कर
मूलस्वरूप
मेघानन्दन
मेघारञ्जन
मेघावन्दन
मोदभूषण
मोदमिहिर
मोदमोहन
मोदविलास
मोहनकान्त
मोहनचन्द्र
मोहनमिश्र
मङ्गलकरण
मङ्गलचरण
मङ्गलनन्दन
मङ्गलभूषण

मङ्गलमिहिर
मङ्गलमोहन
मङ्गलरञ्जन
मङ्गलवदन
मङ्गलवन्दन
मङ्गलविलास
मङ्गलशरण
मङ्गलशेखर
मङ्गलस्वरूप
मिहिररञ्जन
मिहिरस्वरुप
मोहनमिहिर
मोहनस्वरुप

य

यक्ष
यज
यज्ञ
यति
यदु
यम
यस्क
यास्क
योगी
यक्षेश
यज्ञाङ्क
यज्ञेन्दु
यज्ञेन्द्र
यज्ञेश
यमीन्दु
यमीन्द्र
यमेश
यमेन्दु

यमेन्द्र
यमेश
यम्येन्दु
यम्येन्द्र
यम्येश
ययाति
यागेश
यियक्षु
युगेन्दु
युगेन्द्र
युगेश
युधाजित्
युयुत्सु
योगाङ्क
योगीन्दु
योगीन्द्र
योगीश
योगेन्दु
योगेन्द्र
योगेश
योधेन्द्र
योधेश
यक्षेश्वर
यक्षकान्त
यक्षचन्द्र
यक्षतीर्थ
यक्षपति
यक्षमणि
यक्षमित्र
यक्षव्रत
यक्षशील
यजु:शील
यजु:श्रवा

यजुर्मणि
यजुर्मित्र
यजुर्मिश्र
यजूरत्न
यजुर्व्रत
यजुष्कान्त
यज्ञकान्त
यज्ञकाम
यज्ञचन्द्र
यज्ञतीर्थ
यज्ञदेव
यज्ञनिधि
यज्ञपति
यज्ञपाल
यज्ञबन्धु
यज्ञभद्र
यज्ञमणि
यज्ञमित्र
यज्ञमिश्र
यज्ञरत्न
यज्ञरात
यज्ञवल्क
यज्ञवीर
यज्ञव्रत
यज्ञशील
यज्ञशूर
यज्ञश्रमी
यज्ञसिन्धु
यज्ञानन्द
यज्ञायन
यज्ञेश्वर
यमानन
यमानन्द

यमायन
यमीश्वर
यमेश्वर
यम्येश्वर
यश:पाल
यश:शील
यश:शूर
यश:सिन्धु
यशस्कान्त
यशस्काम
यशस्केतु
यशोदेव
यशोधर
यशोधीर
यशोधृत
यशोबन्धु
यशोभव
यशोभाव
यशोभूति
यशोमणि
यशोमित्र
यशोमिश्र
यशोरत्न
यशोवीर
यशोव्रत
यागकेतु
यागचन्द्र
यागतीर्थ
यागदत्त
यागदेव
यागदेष्ण
यागमित्र
यागशील

यागाश्रय
यागसिन्धु
याज्ञवल्क्य
युगन्धर
युगमणि
युगरत्न
युगाश्रम
युगाश्रय
युगेश्वर
युधामन्यु
युधिष्ठिर
युधीश्वर
युद्धवीर
युयुधान
युवनाश्व
युवमणि
युवमित्र
युवरत्न
युवराज
युववीर
युवहीर
युवेश्वर
योगतीर्थ
योगनिधि
योगपाल
योगप्रिय
योगबन्धु
योगभद्र
योगभाव
योगमणि
योगरत्न
योगवीर
योगशील

योगशूर
योगश्रमी
योगसिन्धु
योगहीर
योगानन्द
योगायन
योगाश्रम
योगाश्रय
योगिमणि
योगिरत्न
योगिमित्र
योगिराज
योगीश्वर
योगेश्वर
योधमणि
योधमित्र
योधवीर
योधेश्वर
यज्ञनन्दन
यज्ञप्रकाश
यज्ञप्रसाद
यज्ञभूषण
यज्ञमोहन
यज्ञविनोद
यज्ञविलास
यज्ञशरण
यज्ञसहाय
यज्ञसाधन
यज्ञस्वरूप
यश:स्वरूप
यशोभूषण
यशोमोहन
युवमोहन
युवरञ्जन
योगनन्दन
योगभूषण
योगमोहन
योगरञ्जन
योगवन्दन
योगविलास
योगशरण
योगसाधन
योगिमिहिर
योगिवन्दन

र

रघु
रथी
रवि
राम
रुद्र
रेण
रेभ
रणजित्
रणेश
रतीश
रथीन्द्र
रथीश
रमेन्द्र
रमेश
रयिमान्
रयीश
रवीन्द्र
रवीश
रश्मीन्द्र
रश्मीश
रसाङ्क
रसेन्दु
रसेन्द्र
रसेश
राकेन्दु
राकेन्द्र
राकेश
रागेन्द्र
रागेश
राजाभ
राजीव
राजेन्दु
राजेन्द्र
राजेश
रातेश
राम्येन्द्र
राम्येश
रायण
राहुल
रिरंसु
रुक्मेन्दु
रुक्मेन्द्र
रुक्मेश
रुचिर
रुचीन्दु
रुचीन्द्र
रुचीश
रुद्रेश
रघुकान्त
रघुतोष
रघुवर
रघुवीर
रजनीन्दु
रजनीन्द्र
रजनीश
रणधीर
रणमित्र
रणवीर
रणशूर
रणेश्वर
रतीश्वर
रथीश्वर
रन्तिदेव
रन्तिनाथ
रमेश्वर
रयीश्वर
रविकान्त
रविदत्त
रविबन्धु
रविभद्र
रविमित्र
रविमिश्र
रविरत्न
रविशील
रवीश्वर
रश्मिकान्त
रश्मीश्वर
रससिन्धु
रसानन
रसायन
रसाश्रम
रसाश्रय
रसिकेश
रसेश्वर
राकानन
राकेश्वर
रागरत्न

रागानन
रागेश्वर
राजकान्त
राजनिधि
राजपाल
राजबन्धु
राजमणि
राजमित्र
राजमिश्र
राजमौलि
राजरत्न
राजवन्द्य
राजवर
राजवीर
राजशील
राजशूर
राजहंस
राजायन
राजेश्वर
राज्यमणि
राज्यरत्न
राज्यवीर
रातवर
रातहव्य
राघस्कान्त
रामकान्त
रामचन्द्र
रामदत्त
रामदेव
रामरत्न
रामेश्वर
राम्येश्वर
रीतीश्वर

रुचिकान्त
रुचिभद्र
रुचिमित्र
रुचिमिश्र
रुचिरत्न
रुचिराभ
रुचिवर
रुचिशील
रुचीश्वर
रुद्रकान्त
रुद्रदत्त
रुद्रदेव
रुद्रराज
रुद्रात
रुद्रवर
रुद्रवीर
रुद्रेश्वर
रोचिष्कान्त
रोचिष्प्रिय
रैवतेश
रघुनन्दन
रघुमोहन
रघुशरण
रजोरञ्जन
रणविलास
रविनन्दन
रविभूषण
रविमोहन
रविरञ्जन
रविवदन
रविशरण
रविशेखर
रविस्वरूप

रश्मिरञ्जन
रसनन्दन
रसमोहन
रसविलास
रागनन्दन
रागमोहन
रागरञ्जन
रागवदन
रागवन्दन
रागविलास
राजनन्दन
राजमिहिर
राजमोहन
राजवन्दन
राजवर्धन
राजविलास
राजशेखर
राजस्वरूप
राज्यनन्दन
राज्यवर्धन
रामकरण
रामप्रकाश
रामप्रसाद
राममोहन
रामविलास
रामशरण
रामस्वरूप
रुचिकरण
रुचिनन्दन
रुचिमोहन
रुचिरञ्जन
रुचिवदन
रुचिवन्दन

रुचिविलास
रुद्रनन्दन
रुद्रमोहन
रसिकरञ्जन
राजनारायण
राजीवलोचन

ल

लक्ष
लक्ष्म
लघु
लव
लाभ
लोक
लक्षीश
लक्षेन्द्र
लक्षेश
लक्ष्मण
लक्ष्मीन्दु
लक्ष्मीन्द्र
लक्ष्मीश
लभेन्दु
लभेन्द्र
लभेश
ललित
लाभाङ्क
लाभेन
लाभेन्दु
लाभेन्द्र
लाभेश
लीलेन
लीलेन्द्र
लीलेश

लोकभृत्
लोकेन
लोकेन्दु
लोकेन्द्र
लोकेश
लक्षकान्त
लक्षमणि
लक्षेश्वर
लक्ष्मकान्त
लक्ष्मीकान्त
लक्ष्मीवन्द्य
लक्ष्मीश्वर
ललितेश
लाभशील
लाभसिन्धु
लाभेश्वर
लीलाकान्त
लीलानाथ
लीलानिधि
लीलामणि
लीलाभद्र
लीलामौलि
लीलावीर
लीलाशील
लोककान्त
लोककेतु
लोकचन्द्र
लोकच्छवि
लोकजयी
लोकजिष्णु
लोकनाथ
लोकनिधि
लोकपाल

लोकप्रिय
लोकबन्धु
लोकभद्र
लोकमणि
लोकमित्र
लोकमिश्र
लोकमौलि
लोकरत्न
लोकरश्मि
लोकराज
लोकवन्द्य
लोकवीर
लोकशील
लोकानन
लोकायन
लोकेश्वर
लोकोपम
लक्षनन्दन
लक्षवन्दन
लक्षसाधन
लक्ष्मीनन्दन
लक्ष्मीवदन
लक्ष्मीवन्दन
लक्ष्मीवर्धन
लक्ष्मीशरण
लक्ष्मीशेखर
लक्ष्यरमण
लक्ष्यवन्दन
ललितरत्न
ललितानन
लाभकरण
लाभरञ्जन
लाभवदन

लीलाचरण
लीलामिहिर
लीलाशरण
लीलाशेखर
लोकनन्दन
लोकपावन
लोकभूषण
लोकमोहन
लोकरञ्जन
लोकवन्दन
लोकविलास
लोकशरण
लोकसहाय
लोकसाधन
लोमहर्षण
लक्ष्मीनारायण
ललितनन्दन
ललितरञ्जन

व

वन
वर
वसु
वाज
वाम
विग्र
विचित्
विजित्
विधु
विप्र
विभु
विराट्
विश्व

विष्णु
वीन
वार
वेद
वेधाः
वेन
व्यास
व्यूह
व्रज
व्रत
व्रात
वग्नूह
वज्राङ्क
वज्रेश
वज्राङ्ग
वदान्य
वनेन्द्र
वनेश
वन्दन
वयुन
वरांशु
वराङ्क
वराभ
वराश
वरुण
वरेत
वरेन्दु
वरेन्द्र
वरेश
वर्मेन्द्र
वर्मेश
वल्लभ
वसन्त

वसाति	विकाश	विभाङ्क	वृन्देन्द्र
वसिष्ठ	विकास	विभाण	वृन्देश
वसुक्र	विक्रम	विभाष	वेदांश
वस्वीन	विक्रान्त	विभास	वेदाङ्क
वस्वीन्दु	विजय	विभूति	वेदान्त
वस्वीन्द्र	विज्ञान	विभूष	वेदाभ
वस्वीश	वित्तेन्द्र	विभूह	वेदेन्दु
वाक्तीर्थ	वित्तेश	विमन्यु	वेदेन्द्र
वाक्सिन्धु	विदुर	विमेय	वेदेश
वागिन्दु	विदेह	विराज	वेनेन्दु
वागिन्द्र	विद्याङ्क	विलास	वेनेन्द्र
वागीश	विद्येश	विवर्ध	वेनेश
वाग्वीर	विद्योत	विवस्वान्	वैभव
वाङ्मणि	विधर्ता	विवित्सु	व्यासेन्दु
वाजाङ्क	विधाता	विवीत	व्यासेन्द्र
वाजाङ्ग	विधान	विवेक	व्यासेश
वाजीश	विधीन्दु	विवेन	व्योमेन्द्र
वाजेन्द्र	विधीन्द्र	विवेश	व्योमेश
वाजेश	विधीश	विशाल	व्रजेन्दु
वाञ्छेन्दु	विधेन्दु	विशुद्ध	व्रजेन्द्र
वाञ्छेन्द्र	विधेन्द्र	विशेष	व्रजेश
वाञ्छेश	विधेश	विशोक	व्रताङ्क
वाणीन्द्र	विनत	विश्रुत	व्रतेन्द्र
वाणीश	विनय	विश्वाभ	व्रतेश
वाणेन्दु	विनीत	विश्वास	व्रातेन्द्र
वाणेन्द्र	विनोद	विश्वेन्दु	व्रातेश
वाणेश	विपश्चित्	विश्वेन्द्र	वग्नुदत्त
वामेन्दु	विपेन्द्र	विश्वेश	वग्नुपति
वामेन्द्र	विपेश	विहास	वग्नुपाल
वामेश	विप्रेश	वीरेन्द्र	वग्नुहित
वाशीन्द्र	विप्लव	वीरेश	वचस्पति
वाशीश	विबुध	वृत्तेन्द्र	वचस्पाल
वासेश	विभव	वृत्तेश	वज्रकान्त

वज्रपाणि
वज्रमणि
वज्रवीर
वनेश्वर
वन्दनेश
वन्दीश्वर
वरतीर्थ
वरभद्र
वरमणि
वरमित्र
वरमिश्र
वररुचि
वरवीर
वरशील
वर्हित
वरूथेश
वरेश्वर
वर्मकान्त
वर्मप्रिय
वर्मेश्वर
वल्लभेन्दु
वल्लभेन्द्र
वल्लभेश
वसतीश
वसन्तेश
वसुकान्त
वसुतीर्थ
वसुदेव
वसुनाथ
वसुनिधि
वसुनीत
वसुनीथ
वसपाणि

वसुपाल
वसुप्रिय
वसुमणि
वसुमित्र
वसुमिश्र
वसुरत्न
वसुराज
वसुरात
वसुरुचि
वसुवर
वसुवीर
वसुशील
वसुसिन्धु
वस्वीश्वर
वाकेश्वर
वागीश्वर
वाग्विलास
वाचस्पति
वाचोनिधि
वाजश्रवा:
वाजिनीश
वाजेश्वर
वाञ्छानिधि
वाणीश्वर
वामदेव
वामप्रिय
वाममणि
वामशील
वामानन
वामेश्वर
वासरेन्दु
वासरेश
वासरेन्द्र

वासरेश
वासुदेव
वासेश्वर
विक्रमाङ्क
विक्रमेन्दु
विक्रमेन्द्र
विक्रमेश
विजयाङ्क
विजयीश
विजयेन्दु
विजयेन्द्र
विजयेश
विजिदिन्दु
विजिदिन्द्र
विजिदीश
विज्ञानेश
वित्तकान्त
वित्तक्रतु
वित्तमणि
वित्तरत्न
वित्तेश्वर
विदथेश
विद्याकान्त
विद्यातिथि
विद्यातीर्थ
विद्याधर
विद्यानन
विद्यानन्द
विद्यानिधि
विद्याप्रिय
विद्याबन्धु
विद्यामणि
विद्यामित्र

विद्यामिश्र
विद्यामौलि
विद्यायन
विद्यारत्न
विद्यावर
विद्यावीर
विद्याव्रत
विद्याशील
विद्याशूर
विद्यासिन्धु
विधीश्वर
विधुकान्त
विधुप्रिय
विधुरत्न
विधुवीर
विधुशील
विधेश्वर
विनयांशु
विनयाङ्क
विनयेन्दु
विनयेश
विनायक
विपिनेन्द्र
विपिनेश
विपुलेश
विप्रमणि
विप्रमित्र
विबुधेन्द्र
विबुधेश
विभवेन्दु
विभवेन्द्र
विभवेश
विभाकर

विभावसु
विभाशील
विभुकान्त
विभुनाथ
विभुनीत
विभुप्रिय
विभुमणि
विभुमित्र
विभुरत्न
विभुराज
विभुरात
विभुवर
विभुवीर
विभुशील
विभूतीन्दु
विभूतीन्द्र
विभूतीश
विभूषण
वियदिन्द्र
वियदीश
विराजेश
विलासेन्दु
विवर्धन
विविनय
विशालेन्द्र
विशालेश
विश्वकान्त
विश्वकेतु
विश्वक्रतु
विश्वतीर्थ
विश्वदत्त
विश्वदेव
विश्वनाथ
विश्वनिधि
विश्वपाल
विश्वप्रिय
विश्वबन्धु
विश्वभद्र
विश्वमणि
विश्वमंना:
विश्वमित्र
विश्वमिश्र
विश्वमौलि
विश्वम्भर
विश्वरत्न
विश्वरश्मि
विश्ववन्द्य
विश्ववीर
विश्वव्रत
विश्वशील
विश्वश्रमी
विश्वश्रवा:
विश्वानन
विश्वानन्द
विश्वायन
विश्वावसु
विश्वेश्वर
विष्टपेन्द्र
विष्टपेश
विष्णुकान्त
विष्णुदत्त
विष्णुदेव
विष्णुपति
विष्णुमणि
विष्णुमित्र
विष्णुरत्न
विष्णुव्रत
विष्णुशर्मा
विष्णुशील
वीरकान्त
वीरकेतु
वीरदेव
वीरनाथ
वीरबन्धु
वीरभद्र
वीरमणि
वीरमित्र
वीरमिश्र
वीरमौलि
वीररत्न
वीरराज
वीरवन्द्य
वीरव्रत
वीरसेन
वीरेश्वर
वृत्तकान्त
वृत्तगोप
वृत्तप्रिय
वृत्तमणि
वृत्तवीर
वृत्तशुभ्र
वृत्तसिन्धु
वृत्तानन
वृत्तानन्द
वृत्तेश्वर
वृन्दायन
वृन्दारक
वेदकान्त
वेदकेतु
वेदघोष
वेदतीर्थ
वेदनाथ
वेदनाद
वेदनिधि
वेदपाणि
वेदपार
वेदपाल
वेदबन्धु
वेदब्रह्म
वेदमणि
वेदमित्र
वेदमिश्र
वेदरत्न
वेदरश्मि
वेदरात
वेदरुचि
वेदवीर
वेदव्यास
वेदव्रत
वेदशील
वेदश्रमी
वेदश्रवा:
वेदसिन्धु
वेदहीर
वेदाञ्जलि
वेदानन
वेदानन्द
वेदायन
वेदावन
वेदेश्वर
वेनबन्धु
वेनमित्र

वेनमिश्र
वेनेश्वर
व्यासदेव
व्यासबन्धु
व्यासमित्र
व्यासवर
व्योमकान्त
व्योमकेतु
व्योमचन्द्र
व्योमजयी
व्योमभद्र
व्योमरत्न
व्योमेश्वर
व्रजनाथ
व्रजनिधि
व्रजपाल
व्रजबन्धु
व्रजमणि
व्रजमित्र
व्रजमौलि
व्रजरत्न
व्रजराज
व्रजवन्द्य
व्रजवीर
व्रजेश्वर
व्रतकान्त
व्रतरुचि
व्रतनाथ
व्रतनिधि
व्रतपाल
व्रतप्रिय
व्रतबन्धु
व्रतमणि
व्रतमित्र
व्रतरत्न
व्रतवन्द्य
व्रतवीर
व्रतशील
व्रतशुभ्र
व्रतश्रमी
व्रतानन
व्रतानन्द
व्रतापीड
व्रतायन
व्रतिवर
व्रतीश्वर
व्रतेश्वर
व्रातपति
व्रातेश्वर
व्रजसाधन
वर्मनन्दन
वसन्तकान्त
वसन्तप्रिय
वसन्तमित्र
वसन्तमिश्र
वसुकरण
वसुचरण
वसुनन्दन
वसुमोहन
वसुरञ्जन
वसुवदन
वसुवन्दन
वसुविलास
वसुशेखर
वसुसाधन
वाममोहन
वामरञ्जन
विक्रमवीर
विक्रमशील
विक्रमादित्य
विजयकान्त
विजयकेतु
विजयनाथ
विजयपाणि
विजयपाल
विजयप्रिय
विजयभद्र
विजयमणि
विजयमित्र
विजयमौलि
विजयरत्न
विजयराज
विजयरात
विजयवर
विजयवीर
विजयव्रत
विजयशील
विजयसिन्धु
विजयेश्वर
विजिदीश्वर
विद्याचरण
विद्यानन्दन
विद्याप्रकाश
विद्याभूषण
विद्यामोहन
विद्यारञ्जन
विद्यावदन
विद्यावन्दन
विद्याविलास
विद्याशरण
विद्यासागर
विद्यासाधन
विद्यास्वरूप
विधिचरण
विधिशरण
विधुरञ्जन
विधुशेखर
विनयकान्त
विनयमणि
विनयरत्न
विनयरात
विनयव्रत
विनयवीर
विनयशील
विनयसिन्धु
विनयसूरि
विपिनकान्त
विपिनचन्द्र
विभाकरण
विभावरीश
विभुनन्दन
विभुप्रकाश
विभुप्रसाद
विभुमोहन
विभुरञ्जन
विभुवन्दन
विभुविलास
विभुविश्वास
विभुशरण
विभूतीश्वर
विशालकान्त
विशालचन्द्र

विशालदेव
विशालेश्वर
विशुद्धानन्द
विश्वनन्दन
विश्वप्रकाश
विश्वभूषण
विश्वमिहिर
विश्वमोहन
विश्वरञ्जन
विश्ववन्दन
विश्वविलास
विश्वशरण
विश्वसहाय
विष्णुनन्दन
विष्णुमोहन
विष्णुरञ्जन
विष्णुवन्दन
विष्णुविलास
वीरभूषण
वीरमोहन
वीररञ्जन
वीरवन्दन
वीरविलास
वीरशरण
वीरशेखर
वृत्तरञ्जन
वृत्तशरण
वेदकरण
वेदनन्दन
वेदप्रकाश
वेदप्रसाद
वेदमिहिर
वेदमोहन

वेदरञ्जन
वेदविनय
वेदविलास
वेदविश्वास
वेदशरण
वेदशेखर
वेदसहाय
वेदसाधन
वेदस्वरूप
वेनमोहन
वैशम्पायन
व्योममोहन
व्योमवन्दन
व्योमविलास
व्योमशरण
व्रजनन्दन
व्रजभूषण
व्रजमोहन
व्रजवन्दन
व्रजविलास
व्रतकरण
व्रतप्रकाश
व्रतप्रसाद
व्रतभूषण
व्रतमोहन
व्रतरञ्जन
व्रतवन्दन
व्रतविलास
व्रतविश्वास
व्रतशरण
वसन्तमोहन
वसन्तविलास
विक्रममोहन

विक्रमविलास
विक्रमस्वरूप
विजयकरण
विजयचरण
विजयनन्दन
विजयप्रसाद
विजयभूषण
विजयमोहन
विजयरञ्जन
विजयवदन
विजयवन्दन
विजयविलास
विजयशेखर
विजयस्वरूप
विनयनन्दन
विनयप्रसाद
विनयभूषण
विनयवदन
विनयवन्दन
विनयविलास
विनयशेखर
विनयसागर
विनयस्वरूप
विपिनविलास
विभावरीश्वर
विशालमोहन
विशालवन्दन

श

शंय
शंयु
शक्र
शती

शन्त
शन्ति
शन्तु
शमी
शम्ब
शम्भ
शम्भु
शान्त
शिबि
शिल्पी
शिव
शील
शुक्र
शुचि
शुद
शुद्ध
शुभ
शुभ्र
शूर
शूह
शेष
शोभ
श्रव
श्रीद
श्रीन्दु
श्रीन्द्र
श्रीप
श्रीश
श्रुत
श्यूह
श्लोक
श्वित
शंवीर

शक्तीन
शक्तीन्द्र
शक्तीश
शक्रेश
शङ्कर
शचीन
शचीन्दु
शचीन्द्र
शचीभृत्
शचीश
शतचित्
शतभृत्
शतांशु
शतायु
शताङ्क
शताभ
शताश
शतेन्द्र
शतेश
शत्रुघ्न
शन्तनु
शन्तीश
शन्तूह
शन्तेन्दु
शन्तेन्द्र
शन्तेश
शब्देन्द्र
शब्देश
शमाङ्क
शमाङ्ग
शमिन
शमिन्दु
शमिन्द्र

शमीक
शमीण
शमीह
शमूह
शमेन्दु
शमेन्द्र
शमेश
शम्पाक
शम्भर
शम्भव
शम्भूह
शम्मणि
शरद्वान्
शर्मेन्दु
शर्मेन्द्र
शर्मेश
शशीन
शशीन्द्र
शशीश
शान्तीन
शान्तीन्दु
शान्तीन्द्र
शान्तीश
शान्तेन
शान्तेन्दु
शान्तेन्द्र
शान्तेश
शिल्पाङ्क
शिल्पेन
शिल्पेन्द्र
शिल्पेश
शिवाङ्क
शिवांशु

शिवाभ
शिवाय
शिवेक्ष
शिवेन
शिवेन्दु
शिवेन्द्र
शिवेश
शीलांशु
शीलाभ
शीलाङ्क
शीलाङ्ग
शीलेन
शीलेन्दु
शीलेन्द्र
शीलेश
शीलेह
शुक्रांशु
शुक्रेश
शुचीन
शुचीन्दु
शुचीन्द्र
शुचीश
शुतोष
शुद्धेन्दु
शुद्धेन्द्र
शुनीत
शुनीथ
शुभाङ्क
शुभाङ्ग
शुभाश
शुभाष
शुभास
शुभेन

शुभेन्दु
शुभेन्द्र
शुभेश
शुभोह
शुभ्रेन्दु
शुश्रुत
शुष्मेन्द्र
शुष्मेश
शूरेन्द्र
शूरेश
शेषेन्द्र
शेषेश
शैलेन्द्र
शैलेश
शोभेन्दु
शोभेन्द्र
शोभेश
श्यावीन्द्र
श्यावीश
श्रवण
श्रीकण्ठ
श्रीकान्त
श्रीकृष्ण
श्रीकेतु
श्रीधर
श्रीनन्द
श्रीपाणि
श्रीपाल
श्रीप्रभ
श्रीबन्धु
श्रीभद्र
श्रीभाष
श्रीभूष

श्रीमणि
श्रीमौलि
श्रीरत्न
श्रीराज
श्रीरात
श्रीवत्स
श्रीवर
श्रीवीर
श्रीव्रत
श्रीश्वर
श्रीहीर
श्रुतान्त
श्रुतीन
श्रुतीन्दु
श्रुतीन्द्र
श्रुतीश
श्रुतेन्दु
श्रुतेन्द्र
श्रुतेश
श्लोकेन्दु
श्लोकेन्द्र
श्लोकेश
श्वेत्येश
शंयुकान्त
शंयुशील
शक्तिकान्त
शक्तिदत्त
शक्तिदेव
शक्तिनाथ
शक्तिप्रिय
शक्तिमिश्र
शक्तिरत्न
शक्तिवन्द्य

शक्तिवेश
शक्तिशील
शक्तिसिन्धु
शक्तीश्वर
शङ्करेन्द्र
शङ्करेश
शचीनाथ
शचीप्रिय
शचीबन्धु
शचीमित्र
शचीमिश्र
शचीरत्न
शचीव्रत
शचीश्वर
शतकान्त
शतकेतु
शतक्रतु
शतचन्द्र
शतजीव
शतनिधि
शतबन्धु
शतमित्र
शतमिश्र
शतरत्न
शतरश्मि
शतरुचि
शतव्रत
शतश्रमी
शतश्रवा:
शतानन्द
शतानीक
शतायन
शतेश्वर

शत्रुञ्जय
शन्तेश्वर
शब्दकान्त
शब्देश्वर
शममणि
शमयन
शमवीर
शमव्रत
शमानन्द
शमायन
शमीश्वर
शमेश्वर
शम्बरेन्द्र
शम्बरेश
शरच्चन्द्र
शरच्छील
शरणेश
शरदिन्दु
शरदिन्द्र
शरदीश
शरद्बन्धु
शरन्मणि
शर्मकान्त
शर्मशील
शशीश्वर
शान्तानन
शान्तानन्द
शान्तिकान्त
शान्तिकेतु
शान्तिदत्त
शान्तिदेव
शान्तिप्रिय
शान्तिमित्र

शान्तिरात
शान्तिशील
शान्तीश्वर
शान्तेश्वर
शिरोमणि
शिल्पेश्वर
शिवकान्त
शिवकेतु
शिवतीर्थ
शिवदत्त
शिवदेव
शिवनाथ
शिवपाणि
शिवप्रिय
शिवबन्धु
शिवमणि
शिवमित्र
शिवमौलि
शिवरत्न
शिवरश्मि
शिवराज
शिवरात
शिवरुचि
शिववर
शिववीर
शिवव्रत
शिवशील
शिवानन
शिवानन्द
शिवायन
शिवीश्वर
शिवेश्वर
शीलकान्त

		शोभानन	श्रुतवीर
शीलकेतु	शुद्धानन्द	शोभानन्द	श्रुतशील
शीलक्रतु	शुद्धायन	शोभायन	श्रुतानन
शीलतीर्थ	शुप्रसन्न	शोचिराभ	श्रुतायन
शीलदत्त	शुभक्रतु	शोचिष्कान्त	श्रुतिकान्त
शीलदेव	शुभचन्द्र	श्रद्धानन	श्रुतिकीर्ति
शीलनिधि	शुभपाणि	श्रद्धानन्द	श्रुतिकेतु
शीलपाल	शुभरत्न	श्रद्धायन	श्रुतिक्रतु
शीलबन्धु	शुभरश्मि	श्रीकरण	श्रुतिगोप
शीलभद्र	शुभरुचि	श्रीकेतन	श्रुतिचन्द्र
शीलमणि	शुभवर	श्रीगोपाल	श्रुतितीर्थ
शीलमित्र	शुभव्रत	श्रीचरण	श्रुतिधर
शीलमौलि	शुभाञ्जलि	श्रीनन्दन	श्रुतिधान
शीलरत्न	शुभानन	श्रीनिवास	श्रुतिनिधि
शीलव्रत	शुभानन्द	श्रीप्रसन्न	श्रुतिपाणि
शीलसिन्धु	शुभायन	श्रीभूषण	श्रुतिपाल
शीलादित्य	शुभेश्वर	श्रीमोहन	श्रुतिप्रिय
शीलानन	शुभ्रकान्त	श्रीरञ्जन	श्रुतिबन्धु
शीलानन्द	शुभ्रकेतु	श्रीवदन	श्रुतिबोध
शीलायन	शुभ्रचन्द्र	श्रीवन्दन	श्रुतिभद्र
शुक्रज्योतिः	शुभ्रानन	श्रीविलास	श्रुतिमणि
शुचिकान्त	शुभ्रायण	श्रीशचन्द्र	श्रुतिमित्र
शुचिक्रतु	शूरबन्धु	श्रीशरण	श्रुतिमिश्र
शुचिचन्द्र	शूरमित्र	श्रीशेखर	श्रुतिमौलि
शुचिप्रिय	शूररत्न	श्रीसहाय	श्रुतिरत्न
शुचिमित्र	शूरवन्द्य	श्रीस्वरूप	श्रुतिरात
शुचिरत्न	शूरसेन	श्रुतकान्त	श्रुतिवन्द्य
शुचिव्रत	शूरेश्वर	श्रुतकीर्ति	श्रुतिवर
शुचिशील	शेषभद्र	श्रुतगीत	श्रुतिव्रत
शुचीश्वर	शेषाधार	श्रुतमणि	श्रुतिशील
शुद्धक्रतु	शैलकान्त	श्रुतमौलि	श्रुतीश्वर
शुद्धबोध	शैलव्रत	श्रुतरत्न	श्रुतेश्वर
शुद्धमित्र	शैलेश्वर	श्रुतवर	श्लोकानन
शुद्धानन	शोभचन्द्र		

श्लोकायन
श्वेतकेतु
श्वेतव्रत
श्वेतशील
शक्तिनन्दन
शक्तिमोहन
शक्तिरञ्जन
शक्तिवन्दन
शक्तिविलास
शक्तिशरण
शक्तिशेखर
शक्तिस्वरूप
शङ्करदत्त
शङ्करदेव
शङ्करानन्द
शचीनन्दन
शचीमोहन
शचीरञ्जन
शचीवदन
शचीवन्दन
शचीविलास
शचीशरण
शचीसाधन
शचीस्वरूप
शतनन्दन
शतभूषण
शतमोहन
शतरञ्जन
शतवन्दन
शतविलास
शतशरण
शतस्वरूप
शमीशरण

शम्बरपति
शम्बराधिप
शरद्रञ्जन
शरद्वन्दन
शरद्विलास
शरन्नन्दन
शर्मनन्दन
शशिचरण
शशिनन्दन
शशिनयन
शशिरञ्जन
शशिवदन
शशिविलास
शशिशरण
शशिशेखर
शशिस्वरूप
शान्तिकरण
शान्तिचरण
शान्तिनन्दन
शान्तिनयन
शान्तिप्रकाश
शान्तिप्रसाद
शान्तिभूषण
शान्तिमोहन
शान्तिरञ्जन
शान्तिवदन
शान्तिवन्दन
शान्तिविलास
शान्तिशरण
शान्तिसागर
शान्तिस्वरूप
शिरीषकान्त
शिवनन्दन

शिवप्रकाश
शिवप्रसन्न
शिवप्रसाद
शिवभूषण
शिवमोहन
शिवरञ्जन
शिववन्दन
शिवविलास
शिवशङ्कर
शिवशेखर
शिवसङ्कल्प
शिवसहाय
शिवसागर
शिवस्वरूप
शीलकरण
शीलचरण
शीलनन्दन
शीलनयन
शीलप्रकाश
शीलप्रसाद
शीलभूषण
शीलमोहन
शीलरञ्जन
शीलवदन
शीलवन्दन
शीलविलास
शुचिकरण
शुचिचरण
शुचिनन्दन
शुचिनमन
शुचिनयन
शुचिमोहन
शुचिरञ्जन

शुचिवदन
शुचिवन्दन
शुचिविलास
शुचिशरण
शुचिस्वरूप
शुद्धचैतन्य
शुद्धमोहन
शुभकरण
शुभचरण
शुभनयन
शुभवदन
शुभविलास
शुभशरण
शुभ्रनन्दन
शुभ्रनयन
शुभ्रमोहन
शुभ्रविलास
शूरनन्दन
शूरमोहन
शूररञ्जन
शूरवन्दन
शूरशरण
श्रद्धानन्दन
श्रुतरञ्जन
श्रुतवन्दन
श्रुतविलास
श्रुतशेखर
श्रुतिकरण
श्रुतिनन्दन
श्रुतिनयन
श्रुतिप्रकाश
श्रुतिप्रसाद
श्रुतिभूषण

श्रुतिमिहिर
श्रुतिमोहन
श्रुतिरञ्जन
श्रुतिवदन
श्रुतिवन्दन
श्रुतिविलास
श्रुतिशरण
श्रुतिशेखर
श्रुतिसहाय
श्रुतिसागर
श्रुतिस्वरूप
श्वेतवाहन
शक्तीश्वरानन्द
शिवनारायण

ष

षट्कान्त
षट्ऋतु
षट्शास्त्री
षडिन
षडिन्द्र
षडीश
षड्भद्र
षड्ञ्जन
षण्मोहन
षोडशेन्द्र
षोडशेश

स

संयत्
संयुत्
संवित्
संश्रित्
संवृत्
सच्चित्
सञ्चित्
सञ्जित्
सत्य
सम
सम्भृत्
सम्राट्
सर्व
सिद्ध
सुचित्
सुजित्
सुवित्
सूर
सूरि
सूर्य
सूह
सोम
स्कन्द
स्वराट्
स्वाभ
स्विन
स्विन
स्विन्द्र
स्वीश
स्वीह
स्वेत
स्वेन
स्वेन्द्र
स्वेण
संयम
संयमी
संयाति
संयोग
संवर
संवीर
संव्रत
संशान्त
संपाल
संगीत
संश्रुत
संहीर
सङ्कल्प
सङ्केश
सगर
सच्चन्द्र
सच्छील
सञ्जय
सञ्जीव
सतीन्दु
सतीन्द्र
सतीश
सत्पतिः
सत्यचित्
सत्यजित्
सत्ययुत्
सत्यवान्
सत्यश्रित्
सत्यश्रुत्
सत्यांशु
सत्याङ्क
सत्याङ्ग
सत्यात्मा
सत्याभ
सत्याश
सत्येन
सत्येन्दु
सत्येन्द्र
सत्येश
सज्जन
सत्त्वाधिप
सद्गुण
सदांशु
सदाचित्
सदाजित्
सदाश्रुत
सदिन
सदिन्दु
सदिन्द्र
सदीश
सदेन्दु
सदेन्द्र
सदेश
सद्रत्न
सद्रुचि
सद्व्रत
सन्तोप
सन्दान
सन्दीप
सन्दोह
सन्द्योत
सन्नत
सन्मणि
सन्मति
सम्मिश्र
सप्तर्षि
सप्तांशु
सभाजित्
सभास

सभेन	साध्येश	सुखांशु	सुनन्द
सभेन्दु	सानन्द	सुखेन्द्र	सुनाथ
सभेन्द्र	सामांशु	सुखेश	सुनामा
सभेश	सामेन्दु	सुगत	सुनिधि
सभोह	सामेन्द्र	सुग्रीव	सुनीत
समंशु	सामेश	सुचित	सुनीथ
समांशु	सायन	सुच्छन्द	सुनील
समाङ्क	सायाम	सुजात	सुपथ
समाङ्ग	सारचित्	सुतीर्थ	सुपर
समिन	सारजित्	सुतोष	सुपर्ण
समिन्द्र	सारांशु	सुदत्त	सुपाणि
समीक	सारेश	सुदामा	सुपोष
समीक्ष	सावर्ण	सुदिन	सुप्रभ
समीच	सिंहाभ	सुदीप	सुप्रीत
समीर	सिद्धांश	सुदेव	सुबन्धु
समीश	सिद्धाभ	सुदेश	सुबाहु
समूह	सिद्धार्थ	सुदेष्ण	सुबोध
समेन	सिद्धेन्द्र	सुद्युम्न	सुभद्र
समेन्द्र	सिद्धेश	सुद्योत	सुभव
समेश	सिनीवाक्	सुधन्वा	सुभाव
सम्भाष	सीरेन्द्र	सुधांशु	सुभाष
सम्भास	सीरेश	सुधाङ्क	सुभास
सम्भूष	सुकर्ण	सुधाङ्ग	सुभूष
सम्मन्यु	सुकल्प	सुधाश	सुमख
सम्मेय	सुकान्त	सुधीन	सुमणि
सर्वंचित्	सुकाम	सुधीन्दु	सुमत
सर्वंजित्	सुकार्य	सुधीन्द्र	सुमन्तु
सर्वेन्द्र	सुकाल	सुधीश	सुमन्त्र
सर्वेश	सुकाश	सुधृति	सुमन्यु
सवन	सुकेत	सुधेन	सुमान
सविता	सुकेतु	सुधेन्दु	सुमाभ
सात्त्विक	सुकेश	सुधेन्द्र	सुमित
सात्यकि	सुक्रतु	सुधेश	सुमित्र

सुमित्र
सुमीर
सुमेडि
सुमेध
सुमेग
सुमेर
सुमोद
सुयश
सुयाग
सुयोग
सुरश्मि
सुराजि
सुराष्ट्र
सुरात
सुरुचि
सुरेन्दु
सुरेन्द्र
सुरेश
सुवर
सुविज्ञ
सुविध
सुवीर
सुव्रत
सुत्रात
सुशर्मा
सुशील
सुश्रुत
सुषेण
सुसन्धि
सुस्मित
सुहव्य
सुहास
सुहीर

सुहोत्र
सुहोम
सूक्तीश
सूरीन्द्र
सूरीश
सूर्येश
सेनजित्
सेनेन्द्र
सेनेश
सोमसुत्
सोमांशु
सोमेन्द्र
सोमेश
सोहन
सौधेश
सौभद्र
सौभव
स्वच्छन्द
स्वतन्त्र
स्वदेश
स्वयम्भू
स्वरङ्क
स्वरङ्ग
स्वराज
स्वरिन्दु
स्वरिन्द्र
स्वरीश
स्वरूप
स्वरेन्द्र
स्वरेश
स्वस्तीन
स्वस्तीन्दु
स्वस्तीन्द्र

स्वस्तीश
स्वाहेन्द्र
स्वाहेश
स्वितीन्द्र
स्वितीश
स्वितेन्द्र
स्वितेश
स्वीहेन्द्र
स्वीहेश
संयमीश
संयमेन्दु
संयमेन्द्र
संयमेश
संवरण
संविनय
संविलास
सकलेन्दु
सकलेन्द्र
सकलेश
सङ्क्लेश
सखेश्वर
सगरेन्द्र
सगरेश
सच्चिदाभ
सच्चिदिन्दु
सच्चिदीश
सच्छरण
सच्छेखर
सञ्जयेश
सत्यकान्त
सत्यकाम
सत्यकृष्ण
सत्यकेतु

सत्यक्रतु
सत्यचन्द्र
सत्यज्योतिः
सत्यतीर्थ
सत्यदत्त
सत्यदेव
सत्यनन्द
सत्यनाथ
सत्यनिधि
सत्यनीथ
सत्यपति
सत्यपाणि
सत्यपाल
सत्यप्रिय
सत्यप्रीत
सत्यबन्धु
सत्यबोध
सत्यब्रह्म
सत्यभद्र
सत्यभूष
सत्यमणि
सत्यमित्र
सत्यमिश्र
सत्यमौलि
सत्ययशाः
सत्ययुति
सत्यरत्न
सत्यरश्मि
सत्यराज
सत्यरात
सत्यरुचि
सत्यवर
सत्यवर्मा

सत्यवीर
सत्यवास
सत्यव्यूह
सत्यव्रत
सत्यशील
सत्यश्रमी
सत्यश्रवा:
सत्यसन्घ
सत्यसन्धि
सत्यसर्व
सत्यसार
सत्यसिन्धु
सत्यसेन
सत्यहीर
सत्यहोत्र
सत्यानन
सत्यानन्द
सत्यायन
सत्येश्वर
सत्योत्सव
सत्योपम
सत्योल्लास
सत्रमित्र
सत्ररत्न
सत्रवीर
सत्सागर
सत्साधन
सत्स्वरूप
सदयन!
सदाकान्त
सदाक्रतु
सदाचन्द्र
सदाचार्य

सदानन
सदानन्द
सदाप्रिय
सदामणि
सदामित्र
सदाव्रत
सदाशिव
सदीश्वर
सदेश्वर
सद्वदन
सद्वन्दन
सद्विलास
सनन्दन
सनातन
सन्दीपन
सन्नतेयु
सन्नन्दन
सन्मतीन्द्र
सन्मतीश
सप्तऋषि
सभाकान्त
सभाकेतु
सभानन्द
सभानिधि
सभाप्रिय
सभापति
सभाभूष
सभामणि
सभामित्र
सभारत्न
सभावन्द्य
सभावीर
सभाशूर

समक्रतु
समतोष
समन्वय
सममित्र
समयन
समयेन्द्र
समवर
समव्रत
समानन्द
समायन
समीश्वर
समुदय
समुद्रेश
समुत्सव
समुल्लास
समेश्वर
समोत्सव
समोल्लास
सर्वकान्त
सर्वकेतु
सर्वक्रतु
सर्वगुप्त
सर्वगोप
सर्वचन्द्र
सर्वजयी
सर्वतीर्थ
सर्वदान्त
सर्वदीप
सर्वदेष्ण
सर्वप्रिय
सर्वबन्धु
सर्वभद्र
सर्वमणि

सर्वमित्र
सर्वमिश्र
सर्वमौलि
सर्वरत्न
सर्वराज
सर्ववन्द्य
सर्वव्रत
सर्वशुभ्र
सर्वशूर
सर्वश्रवा:
सर्वानन्द
सर्वामृत
सर्वेश्वर
सर्वोदय
सलिलेश
सलीलेन्दु
सलीलेन्द्र
सलीलेश
सवनेन्द्र
सवनेश
सवित्रिन्दु
सवित्रिन्द्र
सहक्रतु
सहतीर्थ
सहदेव
सहस्रेन्द्र
सहस्रेश
सहानन
सहानन्द
सागरेन्दु
सागरेन्द्र
सागरेश
साधनेश

साध्येश्वर
सान्दीपनि
सामकान्त
सामकेतु
सामक्रतु
सामचन्द्र
सामतीर्थ
सामदेव
सामनिधि
सामप्रिय
सामबन्धु
सामभद्र
साममणि
साममित्र
साममिश्र
साममौलि
सामरत्न
सामरश्मि
सामरात
सामव्रत
सामशूर
सामसिन्धु
सामहीर
सामाञ्जलि
सामानन
सामानन्द
सामायन
सामेश्वर
सारकान्त
सारक्रतु
सारनाथ
सारमणि
सारमौलि

साररत्न
सारसिन्धु
सारेश्वर
सिद्धप्रभ
सिद्धक्रतु
सिद्धदेव
सिद्धमित्र
सिद्धरत्न
सिद्धराज
सिद्धवर
सिद्धवीर
सिद्धायन
सिद्धेश्वर
सिनीश्रम
सिनीश्वर
सीरकान्त
सीरक्रतु
सीरप्रिय
सुकरण
सुखदेव
सुखरात
सुखानन
सुखायन
सुखेश्वर
सुचरित
सुदर्शन
सुधाकर
सुधानन
सुधानन्द
सुधानिधि
सुधायन
सुधापाणि
सुधाप्रिय

सुधामित्र
सुधावसु
सुधासिन्धु
सुधीरत्न
सुधीवन्द्य
सुधीव्रत
सुधीश्वर
सुधेश्वर
सुनन्दन
सुनयन
सुनीतेश
सुपरांशु
सुपराश
सुपरेन्दु
सुपरेन्द्र
सुपरेश
सुपर्णेश
सुप्रकाम
सुप्रकाश
सुप्रतिभ
सुप्रतिम
सुप्रसन्न
सुभास्कर
सुभास्वर
सुमङ्गल
सुमतीन्दु
सुमतीन्द्र
सुमतीश
सुमितेन्दु
सुमितेन्द्र
सुमेढीश
सुमोहन
सुरक्रतु

सुरपति
सुरबन्धु
सुरमणि
सुरमित्र
सुररश्मि
सुरवन्द्य
सुरशील
सुरेश्वर
सुरोचन
सुलोचन
सुवर्णाभ
सुविज्ञान
सुविनय
सुव्रतेश
सुशरण
सुशासन
सुसाधन
सूनरीश
सूनृतेश
सूपायन
सूरीश्वर
सूर्यकान्त
सूर्यकेतु
सूर्यक्रतु
सूर्यदेव
सूर्यपाल
सूर्यप्रभ
सूर्यमित्र
सूर्यव्रत
सोमकान्त
सोमकीर्ति
सोमकेतु
सोमक्रतु

सोमतीर्थ
सोमदत्त
सोमदेव
सोमनाथ
सोमप्रिय
सोमबन्धु
सोममणि
सोममित्र
सोममौलि
सोमरत्न
सोमरश्मि
सोमरात
सोमवर
सोमवर्चा:
सोमव्रत
सोमशील
सोमसिन्धु
सोमानन
सोमानन्द
सोमायन
सोमाहुति
सोमेश्वर
स्कन्दगुप्त
स्यूमरश्मि
स्वयमिन्दु
स्वयम्प्रभ
स्वस्तिकान्त
स्वस्तिचन्द्र
स्वस्तिबन्धु
स्वस्तिमिश्र
स्वस्तिमुख
स्वस्तिमौलि
स्वस्तिरत्न

स्वस्तिशील
स्वस्तीश्वर
स्वस्त्ययन
स्वाहाधिप
स्वाहेश्वर
सगरव्रत
सच्चित्स्वरूप
सच्चिदानन्द
सतीशचन्द्र
सत्यकरण
सत्यनन्दन
सत्यनयन
सत्यप्रकाश
सत्यप्रसाद
सत्यभूषण
सत्यमिहिर
सत्यमोहन
सत्यरञ्जन
सत्यवदन
सत्यवन्दन
सत्यविकाश
सत्यविकास
सत्यविलास
सत्यशेखर
सत्यसाधन
सत्यसहाय
सत्यसागर
सत्यस्वरूप
सत्रनन्दन
सत्रमोहन
सदानन्दन
सदाचरण
सदामोहन

सदारञ्जन
सनत्कुमार
सभानन्दन
सभाभूषण
सभामोहन
सभारञ्जन
सभाशेखर
सरस्वतीन्द्र
सर्वकरण
सर्वदमन
सर्वदानन्द
सर्वनन्दन
सर्वप्रकाश
सर्वभूषण
सर्वमिहिर
सर्वरञ्जन
सर्वसहाय
सर्वस्वरूप
सलिलकान्त
सलीलकान्त
सलीलचन्द्र
सवनमित्र
सवनव्रत
सहस्रकान्त
सहस्रगुप्त
सहस्रमित्र
सागरचन्द्र
सामकरण
सामनन्दन
सामप्रसाद
सामभूषण
साममिहिर
सामरञ्जन

सामवदन
सामवन्दन
सामविलास
सामशरण
सामशेखर
सामसहाय
सामसागर
सामस्वरूप
सारनन्दन
सारमोहन
साररञ्जन
सारविलास
सारशेखर
सारस्वरूप
सिंहविक्रम
सिद्धकरण
सिद्धनन्दन
सीरमोहन
सुखकरण
सुखनयन
सुखमोहन
सुखरञ्जन
सुखसागर
सुधानन्दन
सुधानयन
सुधामोहन
सुधाशेखर
सुधीमोहन
सुधीरञ्जन
सुधीवन्दन
सुधीशरण
सुबोधचन्द्र
सुमतिकान्त

सुमतिचन्द्र
सुमतिनाथ
सुरभूषण
सुररञ्जन
सुरशरण
सुशीलकान्त
सुशीलचन्द्र
सूर्यमोहन
सूर्यवदन
सोमकरण
सोमचैतन्य
सोमनन्दन
सोमभूषण
सोममोहन
सोमरञ्जन
सोमवदन
सोमवन्दन
सोमशेखर
सोमसागर
सोमस्वरूप
स्वयम्प्रकाश
स्वस्तिकरण
स्वस्तिनन्दन
स्वस्तिनयन
स्वस्तिमोहन
स्वस्तिरञ्जन
स्वस्तिवन्दन
स्वस्तिवाचन
स्वस्तिशरण
स्वस्तिशेखर
सङ्कल्पमोहन
सत्यनारायण
सलिलमोहन

सलीलरञ्जन
सवनमोहन
सवनरञ्जन
सहस्रमोहन
सहस्ररञ्जन
सानन्दमोहन
सुमतिनन्दन
सुमतिमोहन
सुमतिसागर
सुमतिस्वरूप
सुमितमोहन
सुमितरञ्जन

ह

हंस
हीर
हृद्य
होत्र
हनुमान्
हरीन्द्र
हरीश
हरेन्द्र
हरेश
हर्षेन्दु
हव्येश
हासेन्दु
हितांशु
हिताङ्क
हिताङ्ग
हिताभ
हितायु
हिताश
हितीश

हितेन्दु
हितेन्द्र
हितेश
हितैषी
हिमांशु
हिमेन्द्र
हिमेश
हीरजित्
हीरांशु
हीराङ्क
हीरेन्द्र
हीरेश
हृदीश
हृद्येश
हृन्मणि
हेमांशु
हेमाभ
हेमेन
हेमेन्द्र
हेमेश
होत्रेन्द्र
होत्रेश
होमेन्द्र
होमेश
होमौघ
हंसक्रतु
हंसराज
हरिदंशु
हरिदत्त
हरिदिन्दु
हरिदिन्द्र
हरिदीश
हरिदेव

हरिन्मणि
हरिरत्न
हरिवीर
हरिश्चन्द्र
हरीश्वर
हरेश्वर
हर्षकान्त
हर्षकेतु
हर्षबन्धु
हर्षमणि
हर्षमित्र
हर्षरत्न
हर्षवर
हर्षव्रत
हर्षसिन्धु
हर्षानन
हासचन्द्र
हासमणि
हासरत्न
हासवन्द्य
हाससिन्धु
हासानन
हासायन
हितकेतु
हितचन्द्र
हितपाणि
हितमणि
हितरत्न
हितरश्मि
हितवर
हितवीर
हितव्रत
हितसिन्धु

हितानन
हितायन
हितेश्वर
हिमेश्वर
हिरण्येश
हीरकान्त
हीरचन्द्र
हीरमौलि
हीरव्रत
हीरेश्वर
हृच्छरण
हृदयेश
हृषीकेश
हेमकान्त
हेमचन्द्र
हेमराज
होत्रेश्वर

होमकान्त
होमपाल
होमभद्र
होमव्रत
होमशील
होमसिन्धु
होमायन
हरविलास
हरिमोहन
हरिरञ्जन
हरिविलास
हरिशरण
हर्षनन्दन
हर्षमोहन
हर्षरञ्जन
हर्षवदन
हर्षवर्धन

हर्षविलास
हासनन्दन
हासनयन
हासमोहन
हासरञ्जन
हासवदन
हितकरण
हितचरण
हितनयन
हितमोहन
हितरञ्जन
हितवन्दन
हितशरण
हिरण्यकान्त
हिरण्यकेतु
हिरण्यचन्द्र
हिरण्यवर्मा

हीरनन्दन
हीरमोहन
हीररञ्जन
हीरवन्दन
हीरविलास
हीरशेखर
हृदयकान्त
हृदयनाथ
होमप्रसाद
होमविलास
होमसाधन
हिरण्यवन्दन
हृदयमोहन
हृदयरञ्जन
हिरण्यमोहन
हिरण्यरञ्जन
हिरण्यशेखर

बालिका – नामानि

अम्बा	अन्वाता	अवेक्षा	आर्जुनी
अमा	अन्वाशा	अवोहा	आर्यश्रीः
अमीः	अन्विति	असिता	आर्याची
अस्ति	अपाला	अहना	आर्याणा
अंशुदा	अपिमा	अहल्या	आर्याणीः
अंशुभा	अपीक्षा	अहिंसा	आवग्नू
अञ्चना	अपीशा	अहीना	आवनि
अञ्जना	अपीहा	अहीशा	आवल्गू
अतिभा	अपेक्षा	अपराजिता	आविपा
अतिमा	अभया	**आ**	आशची
अतीक्षा	अभिधा	आज्ञा	आशुदा
अतुला	अभिमा	आता	आहना
अदिति	अभीक्षा	आद्या	आहोत्रा
अधिभा	अभीशा	आभा	**इ**
अधिमा	अभीहा	आर्या	इडा
अधीक्षा	अभ्यूहा	आशा	इना
अधीता	अन्वेशा	आष्ठा	इन्द्रा
अधीशा	अमला	आकाङ्क्षा	इरा
अध्यूहा	अमाची	आचिता	इला
अध्वरा	अमिता	आदित्या	इषा
अनला	अमृता	आदेष्णा	इडेशा
अनिता	अमेन्द्रा	आधारा	इतीना
अनिन्द्या	अमेशा	आधेना	इतीशा
अनिला	अम्बाला	आनति	इनेता
अनुगा	अम्बिका	आनना	इन्दिरा
अनुभा	अरुणा	आनीति	इन्दुधा
अनुमा	अरुपा	आमन्द्रा	इन्दुपा
अनुरा	अरुषी	आमही	इन्दुमा
अनुला	अर्चना	आमायू	इन्द्राची
अनुष्टुप्	अर्जुनी	आयती	इराची
अनूची	अलका	आयुर्दा	इराशा
अनूना	अवनी	आयुष्पा	इरेन्द्रा
अनूहा	अवाशा	आरुषी	इरेशा

इलाची
इलाभा
इलाशा
इलेना
इलेन्द्रा
इलेशा
इन्दुमती
इन्द्रावती
इरावती
इलावतो

ई

ईशा
ईहा
ईशाची
ईशाशा
ईशाशी:
ईशेहा
ईश्वरी
ईहेशा
ईशवती
ईहेश्वरी

उ

उमा
उर्वी
उषा
उष्णिक्
उस्रा
उज्ज्वला
उत्तमा
उत्तरा
उदया
उदिता
उदिति
उदीक्षा
उदीची
उन्नति
उपमा
उपरा
उपाची
उपाता
उपाशा
उपाष्ठा
उपासा
उपेति
उपेना
उपेन्द्रा
उपेशा
उपोहा
उरूची
उर्वशी
उस्रिया
उपदत्रा
उपधेना
उपनति
उपनीति
उपब्दीशा
उपमन्द्रा
उपमिता
उपमेना
उपरुक्मा
उपवग्नू
उपश्रुति
उपसत्या
उपहोत्रा
उपार्जुनी
उपासना
उपाहना

ऊ

ऊर्जा
ऊर्मी
ऊर्म्या
ऊहा
ऊर्जिता
ऊर्मिला
ऊहाशा
ऊहेन्द्रा
ऊहेशा
ऊहेश्वरी

ऋ

ऋचा
ऋता
ऋति
ऋद्धि
ऋभू
ऋषी
ऋष्वा
ऋगाशा
ऋगीशा
ऋतभा
ऋतमा
ऋताङ्गी
ऋताची
ऋताशा
ऋतेशा
ऋद्धीशा
ऋषिका
ऋष्वेशा
ऋगवनी
ऋगीश्वरी
ऋतम्भरा
ऋतावरी
ऋतेश्वरी
ऋषीश्वरी

ए

एक्षा
एधा
एशा
एषा
एहा
एक्षिता
एधिता
एशिता
एषिता
एहिता

ऐ

ऐधा
ऐधिता

ओ

ओमा
ओम्या
ओर्वी
ओषा
ओहा
ओजोदा
ओज्ज्वला
ओदती

ओदया
ओदिति
ओपमा
ओपरा
ओपासा
ओमिता
ओमीशा
ओमीहा
ओम्प्रभा
ओम्प्रिया
ओहिता
ओजस्कान्ता
ओमीहिता
ओमेषिता

औ

औदती

क

की
कंया
कंयू
कक्षा
कण्वा
कना
कन्ता
कन्ती
कन्तू
कम्बा
कम्भा
कला
कवी
कशा
काङ्क्षा
कान्ता
कीर्ति
कुन्ती
कृपा
कृष्णा
केता
केशा
क्षमा
क्षिति
क्षेमा
कमला
कमिता
कमीशा
कमेशा
करुणा
कर्मिष्ठा
कलिका
कलिता
कल्पना
कल्याणी
कविता
कशाशा
कशेशा
किशोरी
कुलाची
कुलाशा
कुलेशा
कृताची
कृताभा
कृताशा
कृतेशा
कृत्तीशा
कृपाची
केतुदा
केतूहा
केश्वरी
कोशेशा
कौशल्या
क्षमेशा
कलावती
कादम्बरी
कुलेश्वरी
कल्याणक्रोडा
कुसुमाली
कुसुममाला
कुसुमलता
कुसुमवर्षा
कुसुमशीला

ख

खेन्द्रा
खेशा
ख्याता
खार्चना
खेश्वरी

ग

गार्गी
गीता
गृत्सा
गेना
गेशा
गोश्रा
गौरी
गणाभा
गणाशा
गणेन्द्रा
गणेशा
गभीरा
गम्भीरा
गयाची
गयेशा
गवीशा
गाथिका
गान्धर्वी
गान्धारी
गायत्री
गायनी
गिरीशा
गीतिका
गीर्मिता
गुणाङ्का
गुणाङ्गी
गुणाची
गुणाभा
गुणाशा
गुणेन्द्रा
गुणेशा
गुणेहा
गुणोहा
गेश्वरी
गौरीशा
गगनेशा
गणेश्वरी
गभस्तीशा
गभीरेशा
गीतेश्वरी
गुणाङ्किता

गुणेश्वरी
गौरीश्वरी

घ

घोषा
घनश्री
घनेशा
घर्मेशा
घृतश्री
घृताची
घोषेशा
घोषकान्ता
घोषप्रिया

च

चन्द्रा
चमू
चार्वी
चित्रा
चक्रेशा
चक्षणा
चन्द्रश्रीः
चन्द्राची
चन्द्रिका
चन्द्रेशा
चायिता
चार्वाभा
चित्तेशा
चित्रेशा
चिदंशू
चिदाशा
चिदीशा
चिन्मणी
चिन्मयी
चिन्मात्रा
चिन्मिता
चिन्मित्रा
चन्द्रकान्ता
चन्द्रकान्ति
चन्द्रज्योत्स्ना
चन्द्रबाला
चन्द्रशोभा
चन्द्रश्वेता
चन्द्रहासा
चारुकान्ता
चारुप्रभा
चारुशोभा
चित्रामघा
चिदञ्चिता
चिदिन्दिरा
चिदीश्वरी
चारुहासिनी

छ

छवि
छाया
छन्देशा
छन्दोगा
छवीना
छवीशा
छविकान्ता

ज

जया
जुहूः
ज्योत्स्ना
जगती
जयदा
जयन्ती
जयाशा
जयिनी
जयेन्द्रा
जयेशा
जिताभा
जिताशा
जित्वरी
जिह्वेशा
ज्योतिर्दा
ज्ञानदा
ज्ञानेशा
जगदीशा
जयलक्ष्मी
जयेश्वरी
जातरूपा
ज्योतिर्मयी
ज्योतिष्मती
जगदीश्वरी
जयललिता

त

तारा
तृप्ति
तोषा
त्रीहा
तनाशा
तनेशा
तनेहा
तपती
तपीशा
तपोदा
तरला
तापसी
तारिका
तारिणी
तीर्थेशा
तोषदा
तोषिणी
त्रयीशा
त्रयीहा
तपोमयी
तेजस्कान्ता
तेजस्विनी
तेजोमयी
त्रयीश्वरी

द

दक्षा
दया
दान्ता
दामा
दिव्या
दीक्षा
दीपा
दीप्ता
दुर्गा
देवी
देष्णू
द्युति
द्युती
दक्षिणा
दक्षेशा
दम्रदा

द्याभा
द्युमावी
द्युदिता
द्युवेशा
दानश्री:
दानेशा
दिनेशा
दिवीशा
दिवीहा
दिवेशा
दीपिती
दीपिका
दीपिता
दुष्यन्ता
देवकी
देवश्री:
देविका
द्योतना
द्रौपदी
दमयन्ती
दयामयी
दानेश्वरी
दिव्यकान्ता
दिव्यप्रभा
दिव्यप्रमा
दिव्यरश्मी
दिव्यशिल्पा
देवयानी
देववर्णिनी

ध

धरा
धर्मा
धारा
धीना
धीरा
धीमा
धृति
धेना
ध्रुवा
धनदा
धरित्री
धरुणा
धर्मश्री:
धर्माची
धर्मिष्ठा
धर्मेन्द्रा
धर्मेशा
धारेशा
धिषणा
धीरेशा
धीश्वरी
धृतिदा
धृतीना
धृतीशा
ध्रुवाशा
ध्रुवेशा
धमनीशा
धरेश्वरी
धारेश्वरी
धर्मकान्ता
धर्मेश्वरी
धृतीश्वरी
ध्रुवेश्वरी

न

नवता
नना
नन्दा
नम्या
नया
नवा
नव्या
निधी
निभा
निमा
नीक्षा
नीडा
नीता
नीति
नीना
नीशा
नीहा
न्याता
न्याशा
न्यूहा
ननाशा
ननेशा
नन्दिता
नन्दिनी
नयदा
नयाभा
नयाशा
नयेशा
नर्मदा
नलिनी
नवदा
नवधा
नवया
नवश्री:
नवाची
नवाभा
नवाशा
नवीना
नवेना
नवेशा
नाडीशा
नारीन्द्रा
नारीशा
निगणा
निगमा
निचिता
निचिती
निधारा
निधीना
निधीशा
निधेना
निनति
निनना
निनीति
निपवी
निमन्द्रा
निमायू
निमिता
निमेना
नियति
नियमा
नियामा
निरीक्षा
निर्भया
निर्मला
निर्माया

निलासा
निलीला
निवरा
निवल्गू
निवाणी
निवाशी
निविपा
निवृत्ति
निशची
निसूर्या
निस्वना
निहोत्रा
निहोमा
नीतिदा
नीरजा
नीरागा
नीश्वरी
नमस्कृता
नवनीता
निविनीता
नीराजना

प

प्री
प्ली
पद्मा
पवि
पुण्या
पुष्पा
पूजा
पूर्णा
पृथा
पृश्नि
प्रज्ञा
प्रत्ता
प्रदा
प्रधा
प्रभा
प्रमा
प्रया
प्ररा
प्रला
प्रवा
प्रश्री
प्राची
प्राता
प्राधा
प्राप्ति
प्राशा
प्रीणा
प्रीति
प्रीशा
प्रेक्षा
प्रेति
प्रेशा
प्रेहा
प्रोहा
पद्मजा
पद्मश्रीः
पद्मिका
पद्मिनी
परमा
पराची
पराता
परिभा
परिमा
परिरा
परिला
परीक्षा
परीशा
परीहा
परेक्षा
परेशा
परोहा
पर्याता
पर्याशा
पर्यूहा
पवित्रा
पवीन्द्रा
पवीशा
पार्वती
पावनी
पुण्यदा
पुण्यश्रीः
पुण्याची
पुरन्धी
पुरुदा
पुरुधा
पूर्णाची
पूर्णिमा
प्रकशा
प्रगणा
प्रंचिता
प्रणति
प्रणीता
प्रणीति
प्रतिभा
प्रतिमा
प्रतीची
प्रतीता
प्रतीति
प्रदत्रा
प्रदिधि
प्रदेष्णा
प्रधारा
प्रधीरा
प्रधेना
प्रनना
प्रपवी
प्रभाषा
प्रभूषा
प्रमन्द्रा
प्रमाची
प्रमिता
प्रमित्रा
प्रमिला
प्रमेडी
प्रमेना
प्ररत्ना
प्ररश्मी
प्ररुक्मा
प्रवरा
प्रवल्गू
प्रवाणी
प्रवाशी
प्रविपा
प्रवीणा
प्रशंसा
प्रशची
प्रशमी
प्रश्लोका
प्रसन्ना

प्रसूर्या
प्रस्वना
प्रहेमा
प्रहोत्रा
प्रहोमा
प्राचिता
प्राञ्चला
प्राञ्जना
प्राञ्जली
प्राध्वरा
प्रारुषी
प्राजुंनी
प्रावणी
प्रियाङ्का
प्रियाची
प्रियाभा
प्रियाशा
प्रीतिदा
प्रीतोशा
प्रीतेशा
प्रीश्वरी
प्रेमाङ्का
प्रेरणा
प्रोपरा
प्रौदती
पद्मकान्ता
पद्मावती
पवमानी
पावमानी
पुण्डरीका
पुण्यप्रिया
पुष्पलता
प्रभावती
प्रभेश्वरी
प्रियंवदा
प्रियव्रता
प्रेमवती
प्रियभाषिणी

ब

ब्ली
बुधा
ब्राह्मी
बलर्षी
बलाभा
बलेन्द्रा
बलेशा
बुधर्षी
बुधाशा
बुधेना
बुधेन्द्रा
बुधेशा
बुधोहा
बृहती
बोधाभा
बोधाशा
बोधिनी
बोधीना
बोधीन्द्रा
बोधीशा
बोधेना
बोधेन्द्रा
बोधेशा
बोधोहा
बोधर्षी
ब्रह्मर्षी
ब्रह्मेना
ब्रह्मेन्द्रा
ब्रह्मेशा
ब्रह्मोहा
बलेश्वरी
बुधायना
बुधेश्वरी
बृहतीशा
बृहदिना
बृहदीशा
बृहदृषी
बोधायना
बोधेश्वरी
ब्रह्मप्रिया
ब्रह्मर्षिका
ब्रह्मेश्वरी
बृहतीश्वरी
बृहदीश्वरी

भ

भ्री
भद्रा
भवा
भव्या
भामा
भूति
भूदा
भूधा
भूषा
भेना
भेन्द्रा
भेशा
भद्रिका
भर्मदा
भवाची
भवानी
भवाप्ति
भवेना
भवेन्द्रा
भवेशा
भव्याची
भव्येहा
भाचिता
भामती
भारती
भावना
भाविका
भाविनी
भावेशा
भाशिता
भाषिता
भासिका
भासिता
भास्करी
भास्वती
भूतिदा
भूतीना
भूतीन्द्रा
भूतीशा
भूतेशा
भूमिदा
भूमीहा
भूरिदा
भूरीहा
भूषिता
भेश्वरो

भवेश्वरी
भानुमती
भुवनेशा
भुवनेश्वरी

म

मखा
मञ्जु
मञ्जू
मधु
मनू
मन्द्रा
मही
माया
माला
मिता
मिति
मित्रा
मीरा
मुक्ति
मुदा
मृजा
मृदू
मेडी
मेधा
मेना
मैत्री
मोकी
मखाशा
मखिनी
मखेना
मखेन्द्रा
मखेशा

मखेहा
मञ्जुदा
मञ्जुभा
मञ्जुमा
मञ्जुरा
मञ्जुला
मणीना
मणीन्द्रा
मणीशा
मणीहा
मतीना
मतीशा
मतीहा
मदाची
मदाभा
मधुदा
मधुभा
मधुमा
मधुरा
मधुला
मधुश्रीः
मधूका
मधूची
मधूहा
मध्वाशा
मनुदा
मनुभा
मनुमा
मनुया
मनूची
मनूहा
मनोजा
मनोभा

मनोया
मन्त्रणा
मन्त्रदा
मन्त्रेशा
मन्द्रजा
मन्द्रदा
मन्द्राभा
मन्द्राशा
मन्द्रेशा
मन्द्रेहा
मन्द्रोहा
ममता
मयाभा
मयाशा
मयेशा
मयोदा
मरुत्ता
मर्यादा
महाची
महाभा
महार्चा
महिता
महीदा
महीना
महीशा
महेशा
माधवी
माधुरी
मानसी
मानिता
मानिनी
मायनी
मायाभा

मायेशा
मितीक्षा
मितीना
मितीन्द्रा
मितीशा
मितीहा
मितेशा
मीमांसा
मुदिता
मृणाली
मृदुला
मेडिका
मेडीना
मेडीन्द्रा
मेडीशा
मेडीहा
मेदिनी
मेधेन्द्रा
मेधेशा
मेनका
मेनेन्द्रा
मेनेशा
मोदश्रीः
मोदाची
मोदाभा
मोदिका
मोदिनी
मोदेशा
मोहिनी
मतेश्वरी
मणीश्वरी
मदयन्ती
मदालसा

मधुमती
मधुमिता
मधूलिका
मनस्कान्ता
मनुमिता
मनूदिता
मनोजिता
मनोरमा
मनोहरा
मन्द्राजनी
मन्द्रोदिता
महादेवी
महार्चिता
महाश्वेता
महीश्वरी
महेश्वरी
मायुकान्ता
मालविका
मितीश्वरी
मितेश्वरी
मेडिकला
मेडिकान्ता
मेडिकेशा
मेडीश्वरी

य

यती
यमी
यम्या
यज्ञा
येना
येशा
यज्ञाची
यज्ञाभा
यज्ञाशा
यज्ञेना
यज्ञेशा
यतीन्द्रा
यतीशा
यत्तेशा
यत्तेशा
यशोदा
यशोधा
यशोभा
यशोरा
यशोला
यागदा
यागेना
यागेन्द्रा
यागेशा
यागेहा
यामदा
यामभा
यामाभा
यामिता
यामिनी
युगाभा
युगाशा
युगेशा
योगश्री:
योगदा
योगाची
योगाशा
योगिता
योगेशा
योगेहा
यज्ञकान्ता
यज्ञाचिता
यज्ञान्विता
यज्ञेश्वरी
यशोधरा
यागेश्वरी
योगकान्ता
योगभद्रा
योगमाया
योगेश्वरी

र

रीं
रक्षा
रन्ती
रमा
रश्मी
रसा
राका
रागा
राधा
रामा
रीति
रुक्मा
रुचि
रुमा
रूपा
रेखा
रेणा
रेणु
रोचि:
रक्षणा
रचना
रचिता
रजनी
रञ्जना
रञ्जनी
रत्नेशा
रमेशा
रयीशा
रशना
रश्मीशा
रसना
रसाची
रागिका
रागिणी
राधिका
रामेशा
रावेशा
राशिदा
राशिधा
राशीन्द्रा
राशीशा
रीतिका
रीतिदा
रीतिधा
रुक्माची
रुक्माभा
रुक्माशा
रुक्मेशा
रुक्मेहा
रुचिका
रुचिता
रुचिरा
रुचीशा
रूपाची

रूपाभा
रूपाली
रूपिका
रूपेशा
रेणुका
रेवती
रोचना
रोचिष्का
रोहिणी
रमेश्वरी
रश्मीश्वरी
रसेश्वरी
रामेश्वरी
रुक्मकान्ता
रुचीश्वरी
रुमण्वती
रूपेश्वरी

ल

ली
लक्षा
लक्ष्मी
लता
लीना
लीला
लोका
लक्षणा
लक्षेन्द्रा
लक्षेशा
लक्षेहा
लक्ष्मणा
लतिका
ललाभा
ललाशा
ललिता
ललिनी
ललीना
ललीशा
ललेन्द्रा
ललेशा
ललेहा
लाभेन्द्रा
लाभेशा
लाभेहा
लीलाची
लीलाभा
लीलेना
लीलेशा
लोकाची
लोकाभा
लोकाशा
लोकिता
लोकिनी
लोकेना
लोकेन्द्रा
लोकेशा
लोकेहा
लोकचन्द्रा
लोपामुद्रा

व

वी
व्री
वंशा
वन्द्या
वरा
वस्वी
वाञ्छा
वाणी
वामा
विग्रा
विद्या
विपा
विप्रा
विभा
विभू
विमा
विया
विरा
विला
विश्वा
वीक्षा
वीडा
वीणा
वीति
वीना
वीरा
वीशा
वीहा
वृता
वृत्ता
वेधाः
वेना
व्यूहा
व्रीडा
वन्दना
वन्दिता
वन्दिनी
वयुना
वरदा
वरश्री
वराङ्का
वराङ्गी
वराची
वरुणा
वरेण्या
वरेन्द्रा
वरेशा
वर्गिणी
वर्गेन्द्रा
वर्गेशा
वर्णिनी
वसुदा
वसुधा
वसुपा
वसुमा
वसुरा
वसुला
वस्वीशा
वस्वीहा
वाकाची
वाकाभा
वाकेना
वाकेन्द्रा
वाकेशा
वाक्चन्द्रा
वागीशा
वाजाभा
वाजिता
वाजिनी
वाजीशा
वाजेना

वाजेशा
वाञ्छेन्द्रा
वाञ्छेशा
वाणाशा
वाणीची
वाणीशा
वाणेशा
वादिनी
वादेशा
वामदा
वामाभा
वामाशा
वामेशा
वाशीना
वाशीशा
वासवी
वासाभा
वासिता
वासिनी
वासेशा
वासेहा
वाह्निनी
विकशा
विकान्ता
विगणा
विजया
विदत्रा
विदया
विदीशा
विदीहा
विदुला
विदेष्णा
विद्युता

विद्योता
विधारा
विधीना
विधेना
विनता
विनति
विनना
विनया
विनीता
विनीति
विनेया
विपवी
विपाता
विपाभा
विपारा
विपाला
विपाशा
विपेना
विपेन्द्रा
विपेशा
विप्रेशा
विबुधा
विबोधा
विभाची
विभामा
विभाशा
विभाषा
विभासा
विभूषा
विभेना
विभेन्द्रा
विभेशा
विभेहा

विमन्द्रा
विमला
विमाया
विमायु
विमिता
विमिला
विमीता
विमीला
विमेडी
विमेना
विमोका
विमोचा
विमोहा
वियाता
वियामा
विरश्मि
विरुक्मा
विवग्नू
विवल्गू
विवाशी
विविपा
विशंसा
विशङ्का
विशची
विशमा
विशाला
विशेषा
विशोका
विश्रुता
विश्वलोका
विश्वभा
विश्वाची
विश्वेना

विश्वेन्द्रा
विश्वेशा
विष्णुदा
विष्णुधा
विष्णुपा
विष्णुभा
विष्णुमा
विष्णुया
विष्णुहा
विसूर्या
विस्वना
विहेमा
विहोत्रा
विहोमा
वीक्षिता
वीरजा
वीरभा
वीराशा
वीरिणी
पीरेन्द्रा
वीरेशा
वृताशा
वृतेशा
वृत्ताभा
वृत्ताशा
वृत्तेना
वृत्तेशा
वेदजा
वेदश्रीः
वेदाची
वेदाभा
वेदाशा
वेदिजा

वेदीशा
वेदेन्द्रा
वेदेशा
व्यरुषी
व्युपरा
व्रतदा
व्रताची
व्रताभा
व्रताशा
व्रतीशा
व्रतेना
व्रतेशा
वग्नुकान्ता
वग्नुहिता
वरूथिनी
वरेश्वरी
वरोत्तमा
वसुन्धरा
वसूत्तमा
वसूत्तरा
वाकचन्द्रा
वाकेश्वरी
वागिन्दिरा
वागीश्वरी
वाचक्नवी
वाजीश्वरी
वाजेश्वरी
वादेश्वरी
वाशीश्वरी
विकाशिनी
विकासिनी
विचक्षणा
विजयन्ती

विजयिनी
विजयीशा
विद्योतना
विद्योत्तमा
विभावरी
विमलाभा
विमलाशा
विमलेशा
विश्ववारा
विश्वोत्तमा
वीणाञ्चिता
वीरेश्वरी
वीरोत्तमा
वीरोदिता
वेदकान्ता
वेद्जिता
वेदमयी
वेदमाता
वेदवती
वेदश्रुति
वेदाञ्जली
वेदिप्रिया
वेदोत्तमा
वैजयन्ती
विजयलक्ष्मी
विजयेश्वरी

श

श्री:
शंया
शंयू
शंसा
शका
शक्ति
शग्मा
शची
शन्ता
शन्ती
शन्तू
शमा
शम्बा
शम्भा
शाखा
शान्ता
शान्ति
शिल्पा
शिवा
शीला
शुची
शुदा
शुधा
शुपा
शुभा
शुमा
शुरा
शुला
शुश्री:
शुष्मा
शूरा
शूषा
शूहा
शेवा
शौरी
श्यामा
श्रद्दा
श्रद्धा

श्रपा
श्रीता
श्रीदा
श्रीधा
श्रीपा
श्रीरा
श्रीला
श्रीशा
श्रुति
श्विता
श्विति
श्वीहा
श्वेत्या
शंश्रुता
शक्तिदा
शक्तीशा
शक्वरी
शचीता
शचीना
शचीशा
शताची
शताभा
शताशा
शतिका
शतिनी
शतीना
शतीन्द्रा
शतीशा
शतेना
शतेशा
शब्देशा
शमता
शमदा

शमला
शमश्री:
शमाची
शमाभा
शमाली
शमाशा
शमिनी
शमीना
शमीन्द्रा
शमीशा
शमीहा
शमूहा
शमेना
शमेन्द्रा
शमेशा
शम्भवा
शरच्छ्री:
शर्मदा
शर्मभा
शर्माची
शर्माभा
शर्माशा
शर्मिष्ठा
शर्मीन्द्रा
शर्मीशा
शर्मेशा
शर्वरी
शशीना
शशीशा
शान्तदा
शान्तभा
शान्ताची
शान्तिदा

शान्तीना
शान्तीन्द्रा
शान्तीशा
शान्तीहा
शान्तोहा
शारदा
शारदी
शालिता
शालिनी
शालीना
शासिका
शितेन्द्रा
शितेशा
शिल्पिनी
शिवश्री:
शिवेना
शिवेशा
शीलदा
शीलपा
शीलश्री:
शीलाची
शीलाभा
शीलाशा
शीलिता
शीलेना
शीलेन्द्रा
शीलेशा
शुचन्द्रा
शुचिश्री:
शुचीना
शुचीन्द्रा
शुचीशा
शुपोषा

शुभदा
शुभश्री:
शुभाङ्गी
शुभाची
शुभाभा
शुभाशा
शुभापा
शुभासा
शुभेना
शुभेन्द्रा
शुभेशा
शुष्णेशा
शुष्मेन्द्रा
शुष्मेशा
शोधिका
शोभना
शोभिता
शोभिनी
श्रीकान्ता
श्रीकृता
श्रीकृष्णा
श्रीक्रतू
श्रीचन्द्रा
श्रीज्योति:
श्रीधरा
श्रीप्रिया
श्रीप्रीता
श्रीभद्रा
श्रीमाया
श्रीमिता
श्रीमित्रा
श्रीमिला
श्रीरश्मी

श्रीशीला
श्रीश्वरी
श्रुतश्री:
श्रुताची
श्रुतिजा
श्रुतिदा
श्रुतिपा
श्रुतीना
श्रुतीन्द्रा
श्रुतीशा
शकुन्तला
शक्तीश्वरी
शतीश्वरी
शतेश्वरी
शब्देश्वरी
शमेश्वरी
शमोत्तमा
शमोदिता
शरच्चन्द्रा
शरत्कान्ता
शरदीशा
शरदीहा
शशिकला
शशिकान्ता
शशिदान्ता
शशिप्रभा
शशिप्रमा
शारदीशा
शीलवती
शीलेश्वरी
शीलोत्तमा
शुचिकान्ता
शुचिस्मिता

शचीश्वरी
शूरकान्ता
श्रुतावती
श्रुतकीर्ति
श्रुतिकान्ता
श्रुतिकीर्ति
श्रुतिप्रिया
श्रुतिशीला
श्रुतीश्वरी
शरदिन्दिरा
शिवसङ्कल्पा

ष

षट्कला
षट्पुण्या
षडीहा
षष्टीशा
षडङ्गिनी
षष्टीश्वरी

स

सच्छ्रीः
सती
सत्या
सन्ध्या
समा
सम्भा
सम्भू
सम्मा
साध्या
सिद्धि
सीता
सीमा
सुदा
सुधा
सुपा
सुभा
सुभ्रू
सुम्ना
सुला
सुश्रीः
सुहा
सूक्ता
सूर्या
सूहा
सेवा
सोमा
सोम्या
सौम्या
स्नेहा
स्मिता
स्मेरा
स्योना
स्वदा
स्वपा
स्वधा
स्वना
स्वभा
स्वमा
स्वश्रीः
स्वस्ता
स्वस्ति
स्वाची
स्वाता
स्वाभा
स्वाशा
स्विका
स्विडा
स्विता
स्विति
स्विना
स्विन्द्रा
स्वीशा
स्वीहा
स्वेति
स्वेना
स्वेन्द्रा
स्वेशा
स्वेहा
संयमा
संयामा
संवग्नू
संवल्गू
संवाशी
संविपा
संशची
संश्रुता
संश्लोका
संस्वना
संस्वरा
सङ्कल्पा
सङ्कशा
सङ्गणा
सङ्गति
सङ्गीता
सङ्गीति
सङ्गोत्रा
सच्चचन्द्रा
सञ्चन्द्रा
सञ्चया
सञ्जया
सञ्जिता
सतीना
सतीन्द्रा
सतीशा
सत्यदा
सत्यपा
सत्यभा
सत्यश्रीः
सत्याची
सत्यात्मा
सत्याभा
सत्याशा
सत्येना
सत्येशा
सत्येहा
सत्योहा
सदिता
सदिना
सदिन्द्रा
सदीशा
सदीहा
सदूहा
सदेशा
सध्रीची
सनीति
सनुति
सनेति
सन्तुष्टा
सन्दत्रा
सन्देशा
सन्देष्णा
सन्धारा

सन्धीरा
सन्धीना
सन्धीशा
सन्धेना
सन्नता
सन्नति
सन्नना
सन्नीति
सन्मित्रा
समता
समदा
समर्चा
समश्री:
समाङ्गी
समाची
समाता
समाभा
समार्चा
समाशा
समिडा
समिता
समिति
समित्रा
समिन्द्रा
समेति
समिना
समिला
समीक्षा
समीची
समीशा
समीहा
समूहा
समृद्धि

समेन्द्रा
समेशा
सम्पवी
सम्प्रिया
सम्प्रीता
सम्भाषा
सम्भूषा
सम्माया
सम्मायू
सम्मिता
सम्मित्रा
सम्मोदा
सरला
सरिता
सलीला
सलोका
सवना
साधना
साधिका
सानन्दा
सायना
सारदा
सारपा
सारभा
सारिका
सावित्री
सिद्धिदा
सिद्धीना
सिद्धीशा
सीमिता
सुकन्या
सुकल्पा
सुकशा

सुकामा
सुकृता
सुकृति
सुकोशा
सुखदा
सुखधा
सुखाशा
सुखेना
सुखेन्द्रा
सुखेशा
सुखेहा
सुखोहा
सुगणा
सुगुणा
सुगोत्रा
सुगौरी
सुचन्द्रा
सुचित्रा
सुजया
सुजला
सुजाता
सुतनू
सुदत्ता
सुदत्रा
सुदामा
सुदिना
सुदेष्णा
सुद्योता
सुधारा
सुधाशा
सुधीन्द्रा
सुधीना
सुधीरा

सुधीशा
सुधेना
सुधेशा
सुनता
सुनना
सुनया
सुनर्मा
सुनीता
सुनीति
सुनीला
सुनेत्री
सुनेया
सुपरा
सुपर्णा
सुपर्णी
सुपवी
सुपोषा
सुप्रभा
सुप्रमा
सुप्रिया
सुप्रीति
सुबन्धू
सुभगा
सुभद्रा
सुभागा
सुभाषा
सुभासा
सुभूषा
सुमखा
सुमता
सुमति
सुमना:
सुमन्त्रा

सुमन्द्रा
सुमन्था
सुमश्रीः
सुमायू
सुमिता
सुमित्रा
सुमिला
सुमीला
सुमेडी
सुमेधा
सुमेना
सुम्नाशा
सुयजा
सुयज्ञा
सुयमा
सुयशाः
सुयागा
सुयाजा
सुयोगा
सुरभी
सुरश्मी
सुरश्रीः
सुराता
सुराधा
सुरुक्मा
सुरेन्द्रा
सुरेशा
सुरेहा
सुलभा
सुलेखा
सुवग्नू
सुवर्चाः
सुवल्गू
सुवाणी
सुवाशी
सुविपा
सुवोरा
सुवृता
सुवृत्ता
सुवृत्ति
सुवेदा
सुव्रता
सुशची
सुशमा
सुशीला
सुशोभा
सुश्रवाः
सुश्रुता
सुश्लोका
सुषमा
सुसमा
सुसूर्या
सुस्मिता
सुस्वना
सुहवा
सुहव्या
सुहारा
सुहासा
सुहिता
सुहेमा
सुहोत्रा
सुहोमा
सूचिता
सूनरी
सूनृता
सूपमा
सूपरा
सूर्याशा
सूर्येशा
सोमदा
सोमपा
सोमश्रीः
सोमांशा
सोमाची
सोमाभा
सोमाशा
सोमिता
सौवर्णी
स्नेहदा
स्नेहपा
स्नेहला
स्नेहिता
स्मितश्रीः
स्नेहिला
स्मितांशू
स्मिताभा
स्मिताशा
स्मितेशा
स्यन्दिका
स्वधेशा
स्वनाशा
स्वनेशा
स्वमिता
स्वरङ्का
स्वरङ्गा
स्वरदा
स्वराङ्का
स्वराङ्गी
स्वराची
स्वराभा
स्वराशा
स्वरिन्द्रा
स्वरीशा
स्वरुपी
स्वरूपा
स्वरेन्द्रा
स्वरेशा
स्वर्जुनी
स्वर्णदा
स्वर्णश्रीः
स्वर्णाची
स्वर्णाभा
स्वर्णाशा
स्वर्मिता
स्वस्तिदा
स्वस्तिधा
स्वस्तिपा
स्वस्तिभा
स्वस्तीना
स्वस्तीन्द्रा
स्वस्तीशा
स्वस्तीहा
स्वहना
स्वाहेन्द्रा
स्वाहेशा
स्वोदती
संयोगिता
सच्चिदाभा
सच्चिदाशा
सच्चिदीशा
सत्यकान्ता
सत्यकामा

सत्यकीर्ति
सत्यभामा
सत्यवती
सयावरी
सरस्वती
सरोजिनी
सहस्वती
सहस्विनी
सुजयिनी
सुदर्शना
सुद्योतना
सुनयना
सुप्रणीति
सुभाषिणी
सुमङ्गली
सुमाञ्जली
सुम्नावरी
सुरार्चना
सुरेश्वरी
सुरोचना
सुलक्षणा
सुलोचना
सुवर्चला
सुवाजिनी
सुविनीति
सुशोभिता
सुहासिनी
सौदामिनी
सौभाग्यदा
स्नेहलता
स्वर्णकान्ता
स्वर्णप्रभा
स्वस्तिमती
सौभाग्यप्रदा
सौभाग्यवती

ह

ह्री
हर्म्या
हव्या
हिता
हिमा
हेमा
होत्रा
ह्रीशा
हरीन्द्रा
हरीशा
हरेन्द्रा
हरेशा
हविर्दा
हविष्पा
हवीरा
हव्यदा
हव्याभा
हव्याशा
हव्येन्द्रा
हव्येशा
हासिनी
हासेशा
हितश्रीः
हिताङ्गी
हिताची
हिताभा
हिताशा
हितेशा
हिमेशा
हृत्कान्ता
हृदाशा
हितीना
हेतीन्द्रा
हेतीशा
हेमदा
हेमाङ्का
हेमाङ्गी
हेमाभा
हेमाशा
हेमेन्द्रा
हेमेशा
होत्रेन्द्रा
होत्रेशा
होमाची
होमाभा
होमाशा
होमिका
होमश्रीः
होमिनी
होमेना
ह्रीश्वरी
हरस्वती
हर्षकान्ता
हर्षलता
हविष्मती
हितकान्ता
हितेश्वरी
होमवती

कठिन नामों के अर्थ

अत्रि–तीनों दु:खों से रहित; दोषों का भक्षक।
अगस्त्य–निष्क्रिय को क्रियाशील बनाने वाला।
अङ्गिरा:–ज्ञानवान् ; प्राप्तिशील।
अतीश–उत्कृष्ट है ईश्वर जिसका वह।
अथर्वा–चञ्चलतारहित; निष्कम्प; हिंसारहित।
अनल–जिसका वारण कोई न कर सके; महत्त्वाकांक्षी।
अनूह–अनुकूल तर्कवाला।
अनेना:–निष्पाप, निरपराध।
अभ्यूह–उच्चकोटि के तर्कवाला।
अभ्वेश–महान् पदार्थों का स्वामी।
अर्जुन–सुरूपवान्, शुभ्ररूपवान्।
अलर्क–पर्याप्त पूजनीय।
अविक्षित्–दयालु और रक्षकों को बसाने वाला।
अश्नेश–मेघों का स्वामी।
अश्मेश–मेघों और रत्नों का स्वामी।
अष्टक–स्वगुणोंसे व्याप्त होने वाला।
अस्तीश–वर्तमान काल का स्वामी।
अहीन–मेघ, जल या गौओं का स्वामी।
अक्तुनाथ–रात्रि का अधिपति।
अनमीव–रोगरहित ; सौभाग्यवान्।
अनीकेश–सेनापति, समूहपति।
अन्तिमित्र–समीप रहते हैं मित्र जिसके वह।
अभिष्यन्त–पापियों को निगृहीत करने वाला।
अम्बरीष–शब्दोपदेश करने वाला।
अम्बुवीच–शब्दप्रधान गति वाला, शास्त्रप्रधान ज्ञानवाला।
अरुषीन्द्र–उष:काल का अधिपति।
अर्जुनीश–उष:काल का अधिपति।
अर्वावसु–अश्वरूपी धनवाला।
असिक्नीश–रात्रि का अधिपति।
अस्तिपाल–वर्त्तमान का सदुपयोग करनेवाला।
अहनेन्द्र–उष:कालमें ऐश्वर्य बढ़ानेवाला
अरिष्टनेमि–अक्षत सीमाओं वाला।
आचित–सब ओर चयन करने वाला।
आतेश–दिशाओं का स्वामी।
आयाति–सर्वत्र गति वाला।
आरुणि–तीव्रगतिशील ; सूर्य समान तेजस्वी।
आष्ठेन्द्र–दिशाओं का अधिपति।
आस्तीक–अस्तित्व को जानने वाला।
आपस्तम्ब–समुदायों में व्याप्त होनेवाला
इक्ष्वाकु–इच्छा, ज्ञान और नैरन्तर्य का विस्तार करने वाला।
इत्वरेन्दु–गतिशीलों में ऐश्वर्यवान्।
ईलिन–शस्त्रधारी।
उत्स–अपनी दया और करुणा से अन्यों को आर्द्र करने वाला।
उतथ्य–आश्चर्यकारक तथ्यों वाला।
उत्तङ्क–निर्भय ; सुखी जीवनवाला।
उत्पल–विशुद्ध ; दोषों से रहित ; उत्कृष्ट गतिशील।
उद्गीथ–सामगान वाला ; प्रणव-जप वाला।
उदीक्ष–उत्तम द्रष्टा।
उद्धव–उत्तम आह्वान करने वाला ; उत्सवशील।
उपाश–आशाओं को प्राप्त होने वाला
उपास–उपासना करने वाला।

उमेश–रक्षिका सेना का स्वामी।
उशनाः–कान्तिमान् विद्वान्।
उस्त्राप–गौओं का पालक; किरण-विज्ञानी।
उदञ्चन–उन्नति की ओर प्रेरित करने वाला। उन्नतिगामी।
उदञ्जलि–प्रणामशील; ऊँचे पदों पर आरूढ होने वाला।
उपब्दीश–वाणी का अधिपति।
उपरेश–मेघों या दिशाओं का स्वामी।
उपलेश–मेघों का नियन्त्रक।
उपासित–समीप उपस्थित होने वाला।
ऊधस्कान्त–गोवर्धनशील, रात्रिशान्ति का इच्छुक।
ऊर्म्येश–रात्रि का स्वामी।
ऋष्व–महान्।
ऋचीक–स्तुति करने वाला।
ऋतेयु–बिना सहायक के अकेला कार्य-क्षम।
ऋष्वेश–महान् पदार्थों का स्वामी।
ऋतुपर्ण–नियत-समय-पालक।
ऋभुशील–विद्वज्जन-पूजक।
ओवतीश–उषःकाल में ऐश्वर्य बढाने वाला।
ओदनेश–मेघों का स्वामी।
कन्त–प्रसन्न; सुखी।
कम्भ–प्रसन्न; सुखी।
कल्प–समर्थ; शक्तिशाली।
कुश–निन्दनीय लोगों का विनाशक।
कृप–दयालु।
कृष्ण–अपनी ओर आकृष्ट करने वाला।
क्षेन्द्र–पृथिवी का अधिपति।
कमोश–सुख का स्वामी। जलाधिपति।
ककुमेश–दिशाओं का स्वामी।
कृशनेन्द्र–प्रचुरसुवर्ण का स्वामी। अति रूपवान्।
ककुम्मोहन–सर्वदिशास्थ लोगों को स्व-गुणों में मोहित करने वाला।
खर्वेश–खरबपति; अतिधनवान्।
खेदीश–किरणों का नियन्त्रक।
ग्मेन्द्र–पृथिवी का अधिपति।
गदेश–गदा विद्या का स्वामी। सभाधीश।
गणेश–समूहपतियों का स्वामी। गणित का विद्वान्।
गन्धर्व–पृथिवी का धारणकर्ता राजा; वाणी का धारक विद्वान्।
गयेश–प्रचुर धनवान्। भवनों का स्वामी।
गल्देन्द्र–वाणी का अधिपति।
गातूह–पृथिवी-सम्बन्धी चिन्तन वाला विद्वान्।
गालव–भोजन बांटने वाला; पतन को रोकने वाला।
गुडेश–भूगोल का अधिपति; निद्रा-विजयी।
गृत्सेन्द्र–बुद्धिमानों में प्रमुख।
गोलेश–भूगोल-खगोल का अधिकारी विद्वान्।
गौरीश–वाणी का अधिपति।
ग्रावेश–मेघों का नियन्त्रक।
गृत्समद–विद्वानों को हर्षित करने वाला।
घृणीश–दिन का स्वामी; अग्नि का नियन्त्रक; क्रोध का वशकर्ता।

घटीश्वर–अतिस्फूर्तिमान्; रचना-कर्त्ताओं में श्रेष्ठ ।
घटेश्वर–समूहाधिपति; भाषा का अधि-पति ।
चिचीषु–चयन करने का इच्छुक ।
च्यवन–सदा हंसने वाला; सहनशील ।
छन्दाश–सुन्दर आशाओं वाला ।
छान्दस–वेदभक्त; उत्सवप्रिय ।
जलाष–सुखी ।
तक्ष–रचयिता; निर्माणकर्ता ।
तीर्थ–गुरु; अध्यापक; पार कराने वाला
त्रित–ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों में विस्तार पाने वाला ।
तनेश–धन का अधिपति ।
तपीश–तपस्वियों में श्रेष्ठ ।
तवेश–बल का अधिपति ।
तुवीन्द्र–बहुत पदार्थों का स्वामी ।
त्र्यम्बक–ईश्वर, जीव, प्रकृति, इन तीनों के ज्ञान से युक्त ।
दम–इन्द्रियों को वश में रखने वाला ।
दृति–दुःख का विनाशक; मेघवत् हर्षद
देष्णु–महान् दाता; अति उदार ।
दत्रेन्द्र–सुवर्ण का अधिपति ।
दधीच–ध्यानी; धारणावान्; धार्मिक ।
दधीचि–ध्यानी; धारणावान्; धार्मिक ।
दशाश्व–दशों दिशाओं में अश्व हैं जिसके वह ।
दिगर्य–दिशाओं का स्वामी ।
दिङ्नाग–सर्वदिशाओं में गतिशील
दिधीश–दृढता का स्वामी ।
दिलीप–पापों और शत्रुओं का दलन = (नाश) करने वाला ।
दीदिवान्–तेजस्वी; विजयेच्छुक, व्यव-हार-कुशल ।
दुष्यन्त–दुष्टों का निग्रह करने वाला ।
देवक–दिव्य गुणों वाला ।
देवल–दिव्य गुणों में लीन रहने वाला ।
देवापि–ईश्वर और विद्वानों को प्राप्त करने वाला ।
धृष्टि–प्रगल्भ; साहसी ।
धृष्णु–शक्तिशाली; शत्रुओं को दबाने वाला ।
धारेश–वाणी का स्वामी ।
धमनीश–वाणी का अधिपति ।
धरुणेन्द्र–जलों का अधिष्ठाता ।
नल–उत्तम भाषणकर्त्ता; दूसरों से कुछ न लेने वाला ।
नृग–मनुष्यों की स्तुति करने वाला ।
न्यूह–नियमित और स्थिर तर्क करने वाला ।
नक्तेश–रात्रि का अधिष्ठाता ।
ननेन्द्र–वाणी का स्वामी ।
नम्येश–रात्रि का स्वामी ।
नयेन–नीति का नियन्त्रक; व्यवहार-निपुण ।
नाडीन्द्र–वाणी का अधिपति ।
नाभाग–आकाश मार्ग में गति करने वाला; वर्षा ऋतु में ज्ञान प्राप्त करने वाला ।
नारद–मनुष्य-धर्म-विधान का दाता ।
नासत्य–असत्य से रहित रहने वाला ।
निर्णय–निश्चित नीतियों वाला ।
नाकेश्वर–सुखमय अवस्था का स्वामी ।
नागदेव–गतिशीलों का उपास्य ।
निरविन्द–उत्साही । अप्राप्ति और विफ-लता की निराशा से रहित ।

प्रभ–उत्तम ज्योति वाला ।
प्रोह–उत्कृष्ट तर्क वाला ।
पणिन–स्तोताओं का मार्गदर्शक, व्यवहारकुशल जनों का नेता ।
परेक्ष–श्रेष्ठ दर्शन वाला ।
पवीश–वाणी का स्वामी, वज्रधारी ।
पाणिनि–हाथ आदि को नियन्त्रण में रखने वाला ।
पिङ्गल–भाषा-प्रयोग में लीन रहने वाला
पुलस्त्य–महत्ताओं का सङ्ग्रहकर्त्ता; महान् पदार्थों की सूचना देने वाला ।
पुलह–महान् पदार्थों को प्राप्त करने वाला ।
प्रभान्त–विशिष्ट ज्योति वाला ।
प्रस्कण्व–उत्कृष्ट बुद्धिशाली ।
परायण–उत्तम गति वाला ।
पराशर–जिससे हिंसा सदा दूर रहती है
परिमल–सब ओर से गुणों को धारण करने वाला ।
पुण्डरीक–शुभ कर्मों का आचरण करने वाला ।
पुरन्दर–पापियों के नगरों का विनाशक
पुष्करेश–जलों का अधिपति ।
पूषायण–पृथ्वी का ज्ञाता; ईश्वर का साक्षात्कर्त्ता ।
फलिगेन्द्र–मेघों का अधिपति ।
ब्रध्न–महान्; सूर्यसम तेजस्वी ।
भांशु–प्रभामयी किरणों वाला ।
भाश–देदीप्यमान आशाओं वाला ।
भेन–प्रकाश का अधिपति ।
भर्मेश–सुवर्ण-धन का अधिपति ।
भानेन्द्र–ज्ञान का अधिकारी ।
भामह–दीप्ति के कारण पूजनीय ।
भारत–प्रकाश में रममाण; ज्योतिप्रिय ।
भारवि–सूर्य की सी दीप्ति वाला ।
भाविभूति–दीप्तिमय ऐश्वर्य वाला । ज्योति के विस्तार से युक्त ।
भास्वतीन्द्र–उषःकाल में ऐश्वर्य बढ़ाने वाला ।
मख–त्रुटियों और दोषों से रहित; यज्ञप्रेमी ।
मङ्कि–गतिशील ।
मधु–सब जानते हैं जिसे वह ।
मन्द्र–उत्तम वाणी वाला; आनन्दमय ।
मेन–विद्याविलासी । ज्ञानाधिपति ।
म्नेन्द्र–अभ्यासकर्त्ताओं में श्रेष्ठ ।
मखेह–यज्ञविषयक चेष्टा वाला ।
मनीश–मननशीलों में श्रेष्ठ ।
मनीष–मन को जानने वाला ।
मयङ्क–सुखकारी लक्षणों वाला ।
मयूख–माननीय; कीर्त्तन करने योग्य ।
मरीचि–दोषों का विनाशक ।
मरुत्त–विद्वानों की कृपा से युक्त ।
मान्धाता–ज्ञान और स्वाभिमान को धारण करने वाला ।
मार्तण्ड–पार्थिव तत्त्व को गति देने वाला
मिलिन्द–सङ्गति से ऐश्वर्य बढ़ाने वाला; सङ्गति देने वाला ।
मिहिर–वर्षा देने वाला; सूर्य ।
मुकुन्द–मुक्ति देने वाला । स्वतन्त्र करने वाला ।
मुकुल–प्रशंसनीय शरीर वाला; आत्मवान् ।
मुद्गल–हर्षलीन । प्रसन्न व्यक्तियों में लीन रहने वाला ।

मुमुक्ष–स्वतन्त्रता का अभ्यासी ।
मेडोश–वाणी का अधिष्ठाता ।
मेनाश–अपनी वाणी पर भरोसा रखने वाला ।
मकरन्द–उत्तम शोभा(=भूषा) का दाता ।
मेडिकल–उत्तम वाणी को धारण करने वाला; वाणी-प्रधान कला वाला ।
मायुभूषण–वाणी रूपी भूषण वाला ।
यक्ष–पूजनीय; सङ्गति करने योग्य ।
यज–ईश्वरोपासक; पूजनीय; दाता; यज्ञकर्त्ता ।
यज्ञ–अत्यन्त पूजनीय; महान् दाता ।
यदु–पूजा करने वाला; यज्ञ करने वाला ।
यस्क–मौन होकर प्रयत्न करने वाला
यास्क–मौन प्रयत्नकारियों में श्रेष्ठ ।
यम्येन्द्र–रात्रि का अधिपति ।
यागदेष्ण–यज्ञों में दान देने वाला ।
युवनाश्व–युवा के समान सब कामों में व्याप्तिशील ।
रघु–शीघ्रताकारी; तीव्रगति वाला ।
रवि–स्वयं गतिशील और सबको गति देने वाला ।
राम–आनन्दमय; सहजक्रीडामय ।
राजीव–पंक्तियों (=समूहों) वाला ।
रातेश–दानियों में अग्रणी ।
राम्येन्द्र–रात्रि का अधिपति ।
राहुल–बन्धन से छुड़ाने वाले ईश्वर में लीन रहने वाला ।
रैवतेश–धनिकों में श्रेष्ठ; अतिसुन्दर ।
रोचिष्कान्त–दीप्ति के कारण सुन्दर ।

लक्ष–उत्तम द्रष्टा; उत्तम चिह्नों से युक्त ।
लक्ष्म–उत्तम लक्षणों वाला ।
लाभ–उत्तम उपलब्धियों वाला ।
वन–बांटने वाला; किरणों वाला ।
वाज–गतिशील; बलवान्; अन्नवान्
वाम–प्रशंसनीय ।
विप्र-मेधावी ।
विधु–अन्धकार और अज्ञान का विनाशक; चन्द्र ।
वेद–ज्ञाता; विचारक; उत्तम अस्तित्व वाला; लाभकर्त्ता ।
वेधाः–विशिष्ट-गुण-धारणकर्ता; मेधावी ।
वेन–यज्ञशील; बुद्धिशाली; विद्वान् ।
व्यास–प्रणेता; व्यवस्थापक; विशिष्ट योगाङ्गी ।
व्यूह–विशिष्ट तर्क वाला ।
व्रज–गतिशील ।
व्रत-नियमानुगामी; व्रतपालक ।
व्रात–उत्तम समूहों वाला ।
वग्नूह–भाषा सम्बन्धी अनुसन्धान वाला ।
वरेत–श्रेष्ठ गति वाला ।
वसन्त–गुणों से आच्छादित करने वाला; सबके वास का कारण; स्नेहशील ।
वसाति–सबको बसाने वाला ।
वसुक्र–धन-सम्पत्ति के विनिमय में निपुण ।
वस्वीन-रात्रि का अधिपति ।
वाणेश–भाषा का पण्डित ।
वाशीश–वाणी का अधिकारी विद्वान् ।

विदुर–ज्ञानशील; विचारशील ।
विपेन्द्र–वाणी का स्वामी ।
विभाश–प्रकाशमयी आशाओं वाला ।
विभाष–विशिष्ट भाषण करने वाला ।
विभूह–व्यापक पदार्थों और ईश्वर के विषय में विशेष प्रतिभा वाला ।
विवस्वान्–विशिष्ट निवास वाला; श्रेष्ठ मनुष्य ।
विवित्सु–जिज्ञासु, चिन्तनाभिलाषी ।
विवीत–विशिष्ट गति और कान्तिवाला
विवेन–विख्यात विद्वान् ।
विवेश–विनीत वेशवाला ।
वृन्देश–अरबोंपति । गणाधिपति ।
वेदान्त–वेद-सिद्धान्त वाला, वेद को अन्तिम प्रमाण मानने वाला ।
वग्नुपाल–वाणी का रक्षक ।
वरूथेश–गृहाधिपति ।
वृन्दारक–श्रेष्ठ; गुण-समूहों को प्राप्त होने वाला ।
शंय:–शान्तिशील ।
शंयु:–सुखी ।
शन्त:–शान्तिमय ।
शिबि–दया भाव से सबको बांधने वाला
शुद–शीघ्र दान करने वाला ।
शूह–शीघ्र तर्क करने वाला ।
शेष–कुकर्मों से बचा रहने वाला ।
श्रव–सुनने में निपुण ।
श्रुत–विख्यात; उत्तम ज्ञानी ।
श्यूह–लक्ष्मी-शोभा-सम्बन्धी प्रतिभा वाला ।
श्लोक–सबको मिलाने वाला; उत्तम वचनों का ज्ञाता ।
श्वित–शीघ्र गतिवाला ।
शचीन्द्र–वाणी का स्वामी ।
शन्तनु–सुखमय और सुन्दर शरीर वाला ।
शमिन–शान्ति पर स्थिर; सुखाधिपति ।
शमीक–शान्तिधारी ।
शमूह–सुखविषयक समझ वाला ।
शम्पाक–शान्ति और सुख का विस्तारक ।
शम्भर–सुख भर देने वाला ।
शुभाश–शुभ आशाओं वाला ।
शुभाष–शीघ्र भाषण करने वाला= (आशुवक्ता) ।
शुभास–शीघ्रता से दीप्त होने वाला ।
शुभोह–शुभ तर्कों वाला ।
शुश्रुत–शीघ्र प्रसिद्ध होने वाला; आशुज्ञाता ।
शुष्मेन्द्र–बल का स्वामी ।
शेषेन्द्र–ईश्वर को स्वामी मानने वाला ।
श्यावीन्द्र–रात्रि का अधिपति ।
श्रवण–अध्ययनशील; धनी; वेदज्ञाता ।
श्रुतान्त-वेद को परम प्रमाण मानने वाला ।
श्वेत्येश–उष:काल में ऐश्वर्य बढ़ाने वाला ।
शचीनाथ–विद्या का अधिपति ।
शम्बरेश–मेघों का नियामक ।
शमंशील–सुखी जीवन वाला ।
शान्तिकरण–शान्तिमय इन्द्रियों वाला ।
संयत्–नियम में चलाने वाला; अनुशासन-कर्त्ता ।
संयुत्–सबको साथ मिलाने वाला ।
संवित्–महान् ज्ञानी ।

संश्रित्–सुसङ्गति में रहने वाला ।
सम–सब में समभाव रखने वाला ।
सर्व–सरणशील; गतिमय ।
सूर–प्रेरित करने वाला; सूर्य ।
स्कन्द–निपुण मनुष्य ।
स्वित–उत्तम गति वाला ।
स्वाभ–उत्तम ग्राभा वाला ।
स्विन–उत्तम गुणों वाला शासक ।
स्वीह–श्रेष्ठ चेष्टाओं वाला ।
स्वेत–ग्रपना मार्ग स्वयं बनाने वाला ।
स्वेन–ग्रात्मजित् ।
संशित–निश्चयी ।
सङ्कल्प–शुभ सामर्थ्यवाला ।
सगर–शब्द-विद्या से युक्त रहने वाला ।
सतीश–उपहारों का स्वामी; दानाधिपति ।
सन्दान–श्रेष्ठ दान देने वाला ।
सन्दोह–जन-समूह का नेता ।
सन्नत–जनसमूह के द्वारा प्रणाम किया हुग्रा ।
सप्तर्षि–सात सूक्ष्म तत्त्वों का साक्षात्कर्ता
सभास–सभा में बैठने वाला (सभ्य); दीप्तिमय ।
सभोह–सभा में तर्क करने वाला ।
समिन–श्रेष्ठ स्वामी ।
समीक–प्रशस्य युद्धप्रेमी ।
समीच–उत्तम गति वाला
समूह–सङ्गत तर्क वाला ।
सवन–प्रेरित करने वाला ।
सिनीवाक्–शुद्ध वाणी वाला ।
सुदेष्ण–श्रेष्ठ दान (उपहार) देने वाला
सुघाश–ग्रमृत का सेवन करने वाला; ग्रमृतमयी ग्राशाग्रों वाला ।
सुषेन–ग्रमृत का ग्रधिपति ।
सुनीथ–उत्तम नेतृत्व वाला; सत्यवादी ।
सुनील–उत्तम नीतियों में लीन रहने वाला ।
सुपर–ग्रत्युत्कृष्ट, ग्रतिश्रेष्ठ, उत्तमों का पालनकर्ता ।
सुमाभ–पुष्पों के समान आभा वाला, चन्द्रमा के समान सुन्दर ।
सुमीर–उत्तम प्रक्षेप्ता, श्रेष्ठ गति वाला
सुमेडि–उत्तम वाणी वाला ।
सुविध–उत्तम प्रकार से विशिष्ट गुणों का धारणकर्त्ता ।
सौभद्र–उत्तम कल्याणमय गुणों से सम्बद्ध ।
सौभव–उत्तम स्वास्थ्य ग्रौर संपत्ति वाला ।
स्वाहेन्द्र–वाणी का अधिपति ।
स्वितीश–उत्तमगति वालों में श्रेष्ठ ।
स्वीहेन्द्र–उत्तम प्रयत्न वालों में श्रेष्ठ ।
सन्नतेयु–दूसरों को पूर्ण नम्रता प्रदान करने की इच्छा वाला ।
समयन–संगठन भरी गति वाला ।
समुल्लास–श्रेष्ठ हर्ष वाला ।
समोल्लास–सबके प्रति प्रसन्न रहने वाला ।
सान्दीपनि–उत्तम दीप्ति वाला ।
समन्वय–भले वंश वाला ।
सुपराश–ग्रत्युत्तम ग्राशाग्रों वाला ।
सूनरीश–उषःकाल में ऐश्वर्य बढ़ाने वाला ।
स्वस्तिवाचन–कल्याणकारी वचनों का उच्चारण करने वाला ।
हंस–उत्तम गति करने वाला ।

हीर--सबके चित्त को हरने वाला; हीरा।
हृद्य--हृदय को प्रिय लगने वाला।
होत्र--हवनमय जीवन वाला।
हनुमान्--उत्तम शस्त्रों वाला; सुन्दर जबड़े वाला।
हरीश--अग्नि और वायु का नियन्त्रक; इन्द्रियरूपी घोड़ों का स्वामी।
हरेश--अग्नि का नियामक।
हिताश--हितकारी आशाओं वाला; हितकारी भोजन करने वाला।
हितेश--हितैषियों में अग्रणी।
हरिदंशु--सब दिशाओं में फैली हैं तेज की किरणें जिसकी वह।

बालिका-नामार्थाः

अम्बा--महान् गुणों वाली।
अमा--गृह की अधिष्ठात्री; साथ मिल-कर रहने वाली।
अमी--अहिंसिका (हिंसा न करने वाली)।
अस्ति--दृढ़ अस्तित्व वाली।
अतिमा--अतिशय ज्ञान वाली।
अतीक्षा--तत्त्व की पारदर्शिनी।
अध्यूहा--अधिक प्रतिभा वाली।
अनिता--चाञ्चल्य से रहित।
अनुरा--अनुकूल दान देने वाली।
अनुष्टुप्--अनुकूल स्तुति (= प्रशंसा) करने वाली।
अनूची--अनुकूल गति या पूजा करने वाली।
अनूना--परिपूर्णा; कमियों से रहित।
अनूहा--अनुकूल तर्क करने वाली।
अन्वाता--अनुकूल दिशाओं वाली।
अपाला--प्राणशक्ति में सब ओर से पर्याप्त।
अम्वेशा--महान् पदार्थों की स्वामिनी।
अमाची--साथ मिलकर चलने वाली; संगठित होकर पूजा करने वाली।
अमेशा--गृहों की स्वामिनी।
अम्बाला--शब्दोपदेश में समर्थ।
अम्बिका--शब्दोपदेश करने वाली।
अरुषी--क्रोध न करने वाली; तेजोमयी
अर्जुनी--शुभ्र रूप वाली; सरल स्वभाव वाली।
अलका--सुभूषित करने वाली; सुन्दर कामनाओं वाली।
अहना--उषःकाल का उत्तम उपयोग करने वाली।
अहल्या--व्यापक तत्त्व में तल्लीन रहनेवाली
अहीशा--मेघों की नियन्त्रिका।
आता--व्याप्त गुणों वाली।
आष्ठा--सब ओर से स्थिरता वाली।
आदेष्णा--सब ओर दान देने वाली।
आधेना--सब ओर वाणीवाली।
आमना--सब दिशाओं में वाणी है जिसकी वह।
आमायू--सर्वत्र हैं शब्द जिसके वह।
आयती--चतुर्दिक् गति वाली।
आरुषी--सर्वत्र तेजोमयी।
आर्याची--श्रेष्ठों का सत्कार करने वाली
आवग्नू--सर्वत्र वाणी है जिसकी वह।
आविपा--सर्व विद्याओं से युक्ता।
आहना--सर्वत्र उषा के समान प्रसन्ना।
इषा--अन्नपूर्णा; ज्ञानिनी; समर्था।
इनेता--ईश्वर की साक्षात्कर्त्री।
इन्दिरा--ऐश्वर्यशालिनी।

इलाची--पृथिवी, वाणी, अन्न और गौओं को प्राप्त करने वाली ।
उमा--रक्षिका सेना वाली; रक्षा वाली ।
उर्वी--महिमामयी ।
उषा--अज्ञान को जलाने वाली; प्रकाशकर्त्री ।
उष्णिक्–उत्कृष्ट स्नेह करने वाली ।
उस्रा--प्रकाशमयी; गौओं वाली; रश्मिमयी ।
उत्तरा–अधिक उत्कृष्टा । उत्कृष्ट है पार पहुँचना जिसका वह ।
उदिति–उत्तम गति वाली। उत्कृष्ट ज्ञान वाली ।
उदीक्षा–उत्तम दर्शन वाली ।
उन्नति–उत्तम नमन वाली ।
उपमा–सामीप्य से जानने वाली; समानताओं से युक्त ।
उपरा–मेघों की नियन्त्रिका; समीप जाकर देने वाली ।
उपाता–सर्वदिशास्थ प्राणी जिसके आश्रय में आते हैं ।
उपेति–उपलब्ध है ज्ञान जिसको वह ।
उरूची–बहुत गुणों को प्राप्त करनेवाली ।
उर्वशी–बहुत क्षेत्रों में व्याप्त होने वाली
उपदत्रा–सुवर्ण धन वाली ।
उपधेना–वाग्गुणयुक्ता ।
उपब्दीशा–वाणी की अधिष्ठात्री ।
ऊर्म्या–उत्तम विचार तरंगों वाली ।
ऊर्मिला–ज्ञान प्रकाश की ग्रहणकर्त्री ।
ऋषी--मन्त्रार्थ-द्रष्ट्री; ज्ञानयुक्ता ।
ऋष्वा--महान् गुणों वाली ।
एक्षा--सर्वत्र निरीक्षण वाली ।
एधा--वृद्धिमयी ।

एशा--सर्वत्र शासन करने वाली ।
एषा--सर्वत्र सामर्थ्यमयी ।
एहा--सर्वकार्यों में उत्तम प्रयत्न वाली ।
ओमा--ओम्वती; 'ओम्' का जप करने वाली ।
ओदती--उषःकाल के समान प्रसन्ना और दयार्द्रा ।
ओमिता–ईश्वर का साक्षात्कार करने वाली ।
क्री--(उत्तम विद्याओं का) विनिमय करने वाली ।
कंया–सुखशालिनी ।
कक्षा–सुमध्यमा ।
कन्ता–सुखी जीवन वाली ।
कना--दीप्तिमयी ।
कला--उत्तम कलाओं से युक्त । मधुर स्वर वाली ।
कशा--उत्तम वाणी वाली ।
कशाशा--अपनी वाणी पर आश्वस्ता ।
किशोरी--अन्धकारनाशिनी; सूर्यसम तेजस्विनी ।
कुलाची--उत्तम कुल का सत्कार करने वाली । कुल में पूजने योग्य ।
कृत्तीशा--गृहस्वामिनी ।
कौशल्या--मनुष्यों को संगठित करने में निपुण । संगठन लाने में प्रवीण।
कादम्बरी--समूह को विद्या देने वाली; सरस्वती ।
गार्गी--उपदेश करने वाली; उपदेशिका की शिष्या ।
गोत्रा--उत्तम भूमि वाली ।
गौरी--शब्दोपदेशिका । वाणी ।
गायत्री--पढ़ने वालों की रक्षिका ।

गायनी--उत्तम गान करने वाली।

चक्षणा--उत्तम भाषण करने वाली; उत्तम दर्शन वाली; बुद्धिमती।

चित्रामघा--आश्चर्यमय ऐश्वर्य वाली।

छवि--अज्ञान का छेदन करने वाली।

छाया--अवगुणों का छेदन करने वाली; गृहवती; लावण्यमयी।

जुहूः--हवन करने वाली।

जगती--उत्तम रीति से गति करने वाली।

जिह्वेशा--वाणी की स्वामिनी।

तारा--उत्तमरीति से पार पहुंचने वाली।

त्रीहा--ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों में प्रयत्न वाली।

तनेशा--धनस्वामिनी।

तपती--तपस्विनी।

दामा--दान करने वाली।

देष्णू--उपहार (दान) करने के स्वभाव वाली।

दत्रदा--सुवर्णदान करने वाली।

दमाची--आत्मसंयम को प्राप्त करने वाली।

दीधिती--दीप्तिमयी।

दुष्यन्ता--दोषों और शत्रुओं का नाश करने वाली।

दमयन्ती--आत्मसंयमिनी; दुष्ट भावों का दमन करने वाली।

धेना--उत्तम विद्या वाली।

नक्ता--गतिशीला।

नना--नमनशीला; उत्तमवाणी वाली।

नम्या--नमनयोग्या; रात्रि का सदुपयोग करने वाली।

निभा--निर्देशक प्रकाशवाली।

नीडा--निर्देशक तथा निश्चित वाणी वाली; उत्तम गृह वाली।

न्याता--सर्वदिशास्थ जनों को निर्देश देने वाली।

न्याशा--नियमित इच्छाओं वाली।

नारीशा--यज्ञ की स्वामिनी। स्त्रियों में उत्तम।

निनना--निर्देशकारिणी वाणी वाली।

निपवी--नियन्त्रित वाणी वाली।

निलासा--नियमित शिल्प वाली; नियमित विलास वाली।

निशची--निर्देशक वाणी वाली।

निसूर्या--नियमितरूप से प्रेरणा करने वाली।

नीराजना--निरन्तर दीप्त होने वाली।

प्री--प्रीति करने वाली; तृप्ति देने वाली।

प्ली--गतिशीला।

पृश्नि--पृथिवीवत् सहनशीला; आकाशवत् निर्मल-स्वभावा।

प्रया--उत्तम गति वाली।

प्राची--उत्कृष्ट गुणों को पाने वाली; उत्तमों को पूजने वाली।

प्राता--उत्तम पदार्थों के लिये सतत प्रयत्न वाली।

प्राधा--उत्कृष्ट जनों का सब प्रकार से पोषण करने वाली।

प्रेति--उत्तम मति (ज्ञान) वाली।

परीक्षा--चारों ओर के पदार्थों का दर्शन करने वाली।

परोहा--ईश्वर विषयक तर्क वाली; श्रेष्ठ तर्क वाली।

पवीन्द्रा--वाणी की अधिष्ठात्री।

पुरन्धी--बहुत गुणों की धारिका ।

प्रकशा--श्रेष्ठ वाणी वाली ।

प्रतिमा--आदर्शानुकूल प्रमाण वाली ।

प्रदत्रा--उत्तम सुवर्ण धन वाली ।

प्रदिधि--उत्तम दृढ़ता वाली ।

प्रदेष्णा--उत्कृष्ट उपहार वाली ।

प्रधेना--श्रेष्ठ वाणी वाली ।

प्रनना--उत्तम वचन वाली ।

प्रपवी--श्रेष्ठ शस्त्रों वाली; पवित्र-वाणी-युक्ता ।

प्रमेडी--उत्कृष्ट वाणी वाली ।

प्रमेना--उत्कृष्ट वाणी वाली ।

प्रवल्गू- उत्कृष्ट वाणी वाली ।

प्रशमी--श्रेष्ठ कर्मों वाली ।

प्राचिता--उत्तम गुणों का सर्वतः चयन करने वाली ।

प्राध्वरा--श्रेष्ठ यज्ञकर्म वाली ।

प्रावणी--उत्कृष्ट भूमि वाली; सुन्दर अङ्गुलियों वाली ।

प्रीश्वरी--प्रेमपूर्णाओं में श्रेष्ठा ।

प्रोदती--उत्तम उषःकाल वाली ।

प्रोपरा--श्रेष्ठों को सरलता से देने वाली ।

ब्ली--उत्तम पदार्थों का वरण करने वाली ।

बलर्षी--बल को पाने वाली ।

बुधायना- विद्वानों के मार्ग पर चलने वाली ।

बोधायना--ज्ञानप्रधान मार्ग वाली ।

भ्री--भरणपोषण करने वाली ।

भेना--प्रकाश की अधिष्ठात्री ।

भर्मदा--स्वर्णदान करने वाली ।

भवानी-स्वास्थ्य और सम्पत्ति से युक्त ।

भाशिता-ज्योति में निबद्ध ध्यान वाली ।

भूतेशा--अनेक प्राणियों की अधिष्ठात्री ।

भूरीहा- प्रचुर गुणों के लिये चेष्टावती ।

मिता--ज्ञानवती ।

मीरा--गतिमती; ज्ञानिनी; समुद्रवत् शान्त-स्वभावा ।

मुदा--हर्षयुक्ता ।

मेडी--वाणी के समान भावप्रकाशिका ।

मेधा--मिलन वाली; पवित्रा; बुद्धिमती ।

मेना--उत्तम वाणी वाली ।

मोकी--उत्तम शिष्या ।

मखाशा--यज्ञ के प्रति आशावती ।

मखेहा--यज्ञसम्पादनार्थ चेष्टावती ।

मञ्जुमा--सुन्दर पदार्थों की वर्णनकर्त्री ।

मञ्जुरा--सुन्दर पदार्थों की दानकर्त्री ।

मणीना--रत्नों की स्वामिनी ।

मदाची- हर्ष को प्राप्त करने वाली ।

मधुरा--प्रसिद्ध वस्तुओं की दानकर्त्री ।

मधूका--पूजी जाने योग्य ।

मनुया--विद्वानों को पहिचानने वाली ।

मनूहा--ईश्वर-विषयक तर्क वाली ।

मनोया--मन का साक्षात्कार करने वाली ।

मयाभा--प्रगतिमयी आभावाली ।

मायनी--ज्ञानमय मार्गवाली ।

मितीशा--ज्ञान की अधिष्ठात्री ।

मीमांसा--गहन परीक्षा करने वाली ।

मृणाली--पापों का हिंसन करने वाली ।

मेडिका--उत्तमवाणी वाली ।

मदालसा--हर्ष के कारण सब ओर से शोभित होने वाली ।

मनूदिता--ईश्वर विषयक वचनों वाली ।

मन्द्राजनी--विद्या को फैलाने वाली ।

महाश्वेता--अतिलावण्यमयी ।

मायुकान्ता--शब्दविद्याप्रिया ।

मालविका--ज्ञान से बन्धनों को काटने वाली ।

मेडिकला--वाणी को धारण करने वाली; वाणी-प्रधान कला वाली ।

यम्या--नियमन करने वाली ।

येना--ज्ञान पाने वालियों में उत्तमा ।

यत्तेना--उत्कृष्ट प्रयत्न वाली ।

यशोरा--कीर्ति प्रदान करने वाली ।

यामदा--प्रत्येक प्रहर में दानकर्त्री ।

यामिनी--नियन्त्रण-कर्त्री ।

री--संगठन में रहने वाली ।

रन्ती--आनन्दमयी ।

राका--दान देने वाली; पौर्णमासी ।

राधा--सिद्धि - सफलता प्राप्त करने वाली ।

रामा--आनन्द से युक्त; सुरूपवती ।

रुमा--उत्तम शब्दों वाली ।

रशना--उत्तम अंगुलियों वाली; आभूषणों वाली ।

रसना--उत्तम स्नेह वाली ।

रेवती--धनशालिनी ।

रुमण्वती--शब्द-शास्त्र से सम्पन्ना ।

ली--विग्रह वालों को मिलाने वाली; कठोर हृदय वालों को द्रवित करने वाली ।

ललाभा--शोभामय पदार्थों पर रुचि वाली ।

ललीशा--शोभायुक्त पदार्थों की स्वामिनी ।

वी--सर्वत्र गतिवाली; श्रेष्ठ कामना वाली ।

व्री--उत्तम गुणों का वरण करने वाली ।

वस्वी--स्नेहमयी; बसाने वाली ।

विपा--विशिष्ट वाणी वाली; विशिष्ट रक्षिका ।

विया--विशिष्ट पदार्थों को पानेवाली ।

विरा--विशिष्ट दानकर्त्री ।

वीडा--विशेष गुणों की प्रशंसिका ।

वीति--विशिष्ट गति वाली ।

वीहा--विशेष प्रयत्न वाली ।

व्यूहा--विशिष्ट तर्क (प्रतिभा) वाली ।

वयुना–प्रशस्त बुद्धिवाली ।

वाकाक्षी–विविध भाषाओं की ज्ञात्री ।

वाणेशा--वाणी की अधिष्ठात्री ।

वाशीना--विद्या की स्वामिनी ।

विकशा--विशेष वाणी वाली ।

विदत्रा–विपुल सुवर्ण धन वाली ।

विदुला–जानने वाली; विचारशीला; लाभकर्त्री ।

विपाता–सब दिशाओं में प्रसिद्ध वाणी वाली ।

विप्रेशा–बुद्धिमती स्त्रियों में श्रेष्ठा ।

वीरेन्द्रा-वीराङ्गनाओं की अधिष्ठात्री ।

व्यरुषी--विशिष्ट शान्त - स्वभावा; विशिष्ट तेजस्विनी ।

व्युपरा--विशिष्ट दानकर्त्री ।

शका--सामर्थ्यशीला ।

शंया–सुखमयी; शान्तिमयी ।

शग्मा–सुखिनी ।

शमा–शान्तिगुणयुक्ता ।

शाखा–गुणों से बहुत्र व्याप्त होने वाली ।

शिल्पा--उत्तम कर्मों वाली; सुरूपवती ।

शुदा--शीघ्र देने वाली ।

शुरा--शीघ्र दान करने वाली ।

शुश्री--शीघ्र लक्ष्मी से युक्त होने वाली ।

शूषा–सुखिनी

शूहा--शीघ्र तर्क करने वाली ।

शेवा--सुखसम्पन्ना ।

शौरी–विक्रमशालिनी ।

श्यामा–तीव्र गति वाली ।

श्रीता--लक्ष्मी (शोभा) को प्राप्त हुई ।

श्वित--शीघ्र गति वाली ।

श्वेत्या--उषःकाल का सदुपयोग करने वाली ।

शतीना–प्रचुरपदार्थ समूह की स्वामिनी ।

शमीना–शान्त स्वभाव वालों की नेत्री ।

शर्मेन्द्रा–सुखी मनुष्यों में श्रेष्ठा ।

शालीना–भवनाधिपतियों की नेत्री ।

शितेन्द्रा--ऐश्वर्य को वश में करने वाली।

शिल्पिनी–रूपवती, कर्मशीला ।

शुचन्द्रा--शीघ्र आह्लाद पाने वाली ।

शुभाशा--उत्तम आशाओं वाली । शुभ हैं सब दिशाएं जिसके लिये वह

शुभाषा--शीघ्र भाषण देने वाली ।

शुभासा--शीघ्र ज्योति पाने वाली ।

शुष्णेशा--बल कीं स्वामिनी ।

श्रुतावती–ज्ञानवती; वेदज्ञानयुक्ता ।

सम्भा--उत्तम सङ्गत दीप्ति वाली ।

स्वमा--उत्तम गृहों वाली ।

स्वस्ता--उत्तम घरों वाली ।

स्विति--श्रेष्ठ गति वाली ।

स्वोहा--श्रेष्ठ प्रयत्नों वाली ।

स्वेना–आत्म-संयमिनी ।

सतोशा–उपहारों की स्वामिनी ।

सङ्गोत्रा–बढ़िया भूमि वाली ।

सदीहा-उत्तम चेष्टाओं वाली ।

सदूहा-उत्तम तर्क वाली ।

सनेति--निरन्तर ज्ञान वाली, सदा गतिशीला।

समीची--उत्तम गति वाली।

सप्रूहा--सद्गत तर्क वाली।

सम्पवी--सद्गत वाणी वाली।

सारदा--सार ज्ञान की दात्री।

सुगौरी--श्रेष्ठ वाणी वाली; सुरूपवती।

सुवर्त्रा--उत्तम सुवर्ण-धनवती।

सुदेष्णा--उत्तम उपहारों वाली।

सुनना--प्रशंसनीय वाणी वाली।

सुपरा- प्रतिविशिष्टा।

सुमता--उत्कृष्ट अभिप्राय वाली।

सुमन्यू--उत्तम मन्युवाली।

सुविपा--शोभामयी वाणी से युक्त।

सुहोत्रा--उत्तम यज्ञकर्म वाली।

सूपरा--श्रेष्ठ दानकर्त्री।

स्यन्दिका--दयार्द्रहृदया।

स्वमिता--अल्प आवश्यकताओं वाली।

स्वरङ्का--सुखकारी लक्षणों वाली।

स्वरङ्गा--सुखमय शरीर वाली।

स्वरिम्णा--सुख की स्वामिनी।

स्वरीशा--सुखों की स्वामिनी।

स्वरुची--उत्तम-शान्तस्वभावा।

स्वहना--उत्तम उषःकाल वाली।

संयोगिता--उत्तम योगशिक्षा को प्राप्त।

सुम्नावरी--सुखिनी; उषा के समान प्रसन्ना।

ह्रीशा--उत्तम लज्जावती।

हर्म्या--उत्तम गृहों वाली।

हरस्वती--नेतृत्व शक्ति वाली; प्रवाहमयी

हवीरा--हवि देने वाली।

हितीना--हितैषियों का नेतृत्व करने वाली।

हेतीशा--शस्त्रों की अधिष्ठात्री।

होमिका--उत्तम होम करने वाली।